Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

दैनिक विश्व परिवार

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

• अंक : 98 • वर्ष : 11 • रायपुर, बुधवार 04 अक्टूबर 2023 • पृष्ठ : 8 • मूल्य : 3 रुपए • संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जगदलपुर में 27,000 करोड़ रुपए की कई विकास परियोजनाओं की आधारशिला रखी और राष्ट्र को समर्पित की

- जगदलपुर रेलवे स्टेशन के उन्नयन कार्य की आधारशिला रखी, ताड़ोकी-रायपुर डेमू ट्रेन सेवा को झंडी दिखाई
- छत्तीसगढ़ में कई रेल और सड़क परियोजनाओं की आधारशिला रखी और राष्ट्र को समर्पित किया
- अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत छत्तीसगढ़ के 30 से अधिक स्टेशनों का किया जा रहा है उन्नयन
- छत्तीसगढ़ के लोगों का जीवन आसान बनाने सरकार कर रही हर संभव प्रयास
- सरकार छत्तीसगढ़ की विकास यात्रा को अपना समर्थन जारी रखेगी और राज्य देश का भाग्य बदलने में अपनी भूमिका निभाएगा

रायपुर (विश्व परिवार)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आज छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले के जगदलपुर में लगभग 27, 000 करोड़ रुपये की कई विकास परियोजनाओं का शिलान्यास किया और राष्ट्र को समर्पित किया। परियोजनाओं में रेलवे और सड़क क्षेत्र की कई परियोजनाओं के साथ-साथ बस्तर जिले के नगरनार में 23, 800 करोड़ रुपये से अधिक के एनएमडीसी स्टील लिमिटेड के स्टील प्लांट का समर्पण शामिल है। उन्होंने ताड़ोकी-रायपुर डेमू ट्रेन सेवा को भी झंडी दिखाई।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि विकसित भारत का सपना तभी साकार होगा, जब देश का हर राज्य, हर जिला और हर गांव विकसित होगा। उन्होंने कहा कि इन संकल्पों को पूरा करने के लिए आज लगभग 27, 000 करोड़ रुपये की परियोजनाएं शुरू की गई हैं। उन्होंने छत्तीसगढ़ की जनता को विकास परियोजनाओं के लिए बधाई दी। प्रधानमंत्री ने कहा कि विकसित भारत के लिए भौतिक, सामाजिक और डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर भविष्य की जरूरतों के अनुरूप होना चाहिए। इन्फ्रास्ट्रक्चर के लिए इस वर्ष का परिव्यय 10 लाख करोड़ रुपये है, जो छह गुना अधिक है।

कनेक्टिविटी पर केंद्र सरकार के फोकस का जिक्र करते हुए प्रधानमंत्री ने छत्तीसगढ़ में आर्थिक गलियारे और आधुनिक राजमार्गों का जिक्र किया. उन्होंने यह भी बताया कि 2014 की तुलना में छत्तीसगढ़ का रेल बजट लगभग 20 गुना बढ़ाया गया है। उन्होंने कहा कि आजादी के इतने वर्षों के बाद तारोकी को नई रेलवे लाइन का तोहफा मिल रहा है। एक नई डेमू ट्रेन ने तारोकी को देश के रेलवे मानचित्र पर जोड़ दिया है जिससे राजधानी रायपुर तक यात्रा करना आसान हो जाएगा। जगदलपुर और दंतेवाड़ा के बीच रेल लाइन दोहरीकरण परियोजना से लॉजिस्टिक लागत कम होगी और यात्रा में आसानी होगी।

प्रधानमंत्री ने इस बात पर खुशी जताई कि छत्तीसगढ़ ने रेलवे ट्रैक के 100 फीसदी विद्युतीकरण का काम पूरा कर लिया है. राज्य में वंदे भारत ट्रेन भी चल रही है। अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत छत्तीसगढ़ के 30 से अधिक स्टेशनों का उन्नयन किया जा रहा है। जिनमें से 7 स्टेशनों के पुनर्विकास का शिलान्यास पहले ही हो चुका है। प्रधानमंत्री ने कहा कि बिलासपुर, रायपुर और दुर्ग स्टेशन के साथ, आज जगदलपुर स्टेशन को भी इस सूची में जोड़ा गया है। आने वाले दिनों में जगदलपुर स्टेशन शहर का मुख्य केंद्र बनेगा और यहां यात्री सुविधाओं को उन्नत किया जाएगा। उन्होंने कहा कि पिछले नौ वर्षों में, राज्य के 120 से अधिक स्टेशनों पर मुफ्त वाई-फाई सुविधा प्रदान की गई है।

नरेन्द्र मोदी ने कहा कि सरकार छत्तीसगढ़ के लोगों के जीवन को आसान बनाने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है। उन्होंने कहा कि आज की परियोजनाएं विकास की गति को आगे बढ़ाएंगी, रोजगार के नए अवसर पैदा करेंगी और राज्य में नए उद्योगों को प्रोत्साहित करेंगी। संबोधन का समापन करते हुए प्रधानमंत्री ने आश्वासन दिया कि सरकार छत्तीसगढ़ की विकास यात्रा को अपना समर्थन जारी रखेगी और राज्य देश का भाग्य बदलने में अपनी भूमिका निभाएगा। उन्होंने इस अवसर पर राज्य का प्रतिनिधित्व करने और राज्य के विकास के बारे में विचारशील रहने के लिए छत्तीसगढ़ के राज्यपाल श्री बिश्वभूषण हरिचंदन को धन्यवाद दिया। इस अवसर पर अन्य लोगों के अलावा छत्तीसगढ़ के राज्यपाल श्री विश्वभूषण हरिचंदन और सांसद श्री मोहन मंडावी उपस्थित थे।

पृष्ठभूमि : पूरे देश में रेल बुनियादी ढांचे में सुधार के प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण के अनुरूप, कार्यक्रम के दौरान कई रेल परियोजनाओं का शिलान्यास किया गया और राष्ट्र को समर्पित की गईं। प्रधानमंत्री ने अंतागढ़ और तारोकी के बीच एक नई रेल लाइन और जगदलपुर और दंतेवाड़ा के बीच एक रेल लाइन दोहरीकरण परियोजना राष्ट्र को समर्पित की। उन्होंने बोरीडांड-सूरजपुर रेल लाइन दोहरीकरण परियोजना और अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत जगदलपुर स्टेशन के पुनर्विकास की आधारशिला रखी। प्रधानमंत्री ने तारोकी-रायपुर डेमू ट्रेन सेवा को भी झंडी दिखाई। इन रेल परियोजनाओं से राज्य के आदिवासी क्षेत्रों में कनेक्टिविटी में सुधार होगा। बेहतर रेल बुनियादी ढांचे और नई ट्रेन सेवा से स्थानीय लोगों को लाभ होगा और क्षेत्र के आर्थिक विकास में मदद मिलेगी।

आज रायगढ़ के कोड़ातराई में भरोसे का सम्मेलन

नेता प्रतिपक्ष राज्यसभा मल्लिकार्जुन खरगे और मुख्यमंत्री भूपेश बघेल आमसभा को करेंगे संबोधित

विभागीय प्रदर्शनी से दिखेगी विकास कार्यों की झलक

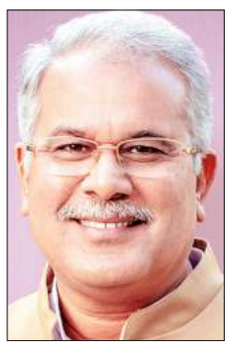

- प्रदेश के 82 चयनित विकासखण्डों में बनने वाले जैतखाम का होगा शिलान्यास
- शासन के विभिन्न योजनाओं के 3088 हितग्राहियों को सहायता राशि व सामग्री का होगा वितरण

रायपुर (विश्व परिवार)। रायगढ़ के कोड़ातराई में 04 अक्टूबर को दोपहर 12 बजे से भरोसे का सम्मेलन कार्यक्रम आयोजित होने जा रहा है। नेता प्रतिपक्ष राज्यसभा व सांसद मल्लिकार्जुन खरगे व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल इसमें शामिल होंगे तथा आमसभा को संबोधित करेंगे। इस मौके पर प्रदेश के 82 चयनित विकासखण्डों में निर्मित होने वाले जैतखाम का शिलान्यास होगा तथा शासन की विभिन्न योजना के 3088 लाभान्वित हितग्राहियों को 9 करोड़ 8 लाख 35 हजार रूपये की सामग्री व सहायता राशि वितरित की जाएगी। इस मौके पर विभिन्न विभागों द्वारा विभागीय उपलब्धियों एवं योजनाओं की प्रदर्शनी भी लगायी जाएगी।

कार्यक्रम में उप मुख्यमंत्री टी.एस. सिंहदेव, पूर्व केन्द्रीय मंत्री सुश्री कुमारी शैलजा, विधानसभा अध्यक्ष डॉ. चरण दास महंत, सांसद बस्तर दीपक बैज, गृहमंत्री ताम्रध्वज साहू, वनमंत्री मोहम्मद अकबर, पंचायत एवं ग्रामीण विकास तथा स्कूल शिक्षा मंत्री रविन्द्र चौबे, उच्च शिक्षामंत्री उमेश पटेल, महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती अनिला भेंड़िया, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री गुरू रूद्रकुमार, नगरीय प्रशासन मंत्री डॉ. शिवकुमार डहरिया, उद्योग मंत्री कवासी लखमा, आदिम जाति विकास मंत्री मोहन मरकाम, राजस्व मंत्री जयसिंह अग्रवाल, खाद्य मंत्री अमरजीत भगत, सांसद श्रीमती गोमती साय, विधायक धरमजयगढ़ लालजीत सिंह राठिया, विधायक रायगढ़ प्रकाश नायक, विधायक सारंगढ़ श्रीमती उत्तरी गनपत जांगड़े, विधायक लैलूंगा चक्रधर सिंह सिदार, जिला पंचायत अध्यक्ष निराकार पटेल, महापौर नगर निगम श्रीमती जानकी काटजू, सभापति नगर निगम जयंत ठेठवार, अध्यक्ष जपं पुसौर सुशील भोय, सरपंच कोड़ातराई श्रीमती पद्मलता चौहान सहित अन्य जनप्रतिनिधि मौजूद रहेंगे।

भरोसे के सम्मेलन में पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग अंतर्गत राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (बिहान) के तहत 539 स्व-सहयता समूहों को 80 लाख 45 हजार रूपये की चक्रीय निधि एवं 1189 समूहों को 7 करोड़ 13 लाख 40 हजार रूपये की सामुदायिक निवेश निधि की राशि प्रदान की जाएगी। इसी तरह श्रम विभाग की मिनीमाता महतारी जतन, मुख्यमंत्री नोनी सशक्तिकरण सहायता, मुख्यमंत्री श्रमिक सियान सहायता, मुख्यमंत्री निर्माण श्रमिक औजार सहायता योजना एवं अन्य योजनाओं के अंतर्गत 1317 हितग्राहियों को 98 लाख 71 हजार रुपये मूल्य की सामग्री वितरित की जाएगी। शहीद महेन्द्रकर्मा तेन्दूपत्ता संग्राहक सामाजिक सुरक्षा योजना के तहत श्रीमती दिलकुंवर राठिया को 4 लाख तथा श्रीमती उर्मिला राठिया को 2 लाख रूपए की आर्थिक सहायता प्रदान की जाएगी। कृषि विभाग के तहत किसान समृद्धि योजना अंतर्गत 3 लाख 79 हजार रुपये की लागत से 13 हितग्राहियों को नलकूप खनन एवं अनुदान एवं राष्ट्रीय सुरक्षा मिशन योजना अंतर्गत पम्प सेट का वितरण किया जाएगा। समाज कल्याण विभाग अंतर्गत सहायक उपकरण योजना के तहत ट्रायसायकिल, टीएलएम एवं ब्लाइन्ड स्टिक सहायक उपकरण तथा छत्तीसगढ़ महिला कोष की ऋण योजना के अंतर्गत 9 हितग्राहियों को 6 लाख रुपए प्रदान किए जाएंगे।

मुख्यमंत्री बघेल ने स्वामी आत्मानंद कोचिंग योजना का किया शुभारंभ

छत्तीसगढ़ के बच्चों को नीट और जेईई की फ्री कोचिंग

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने इंजीनियरिंग एवं मेडिकल की प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए स्कूल शिक्षा विभाग की नवाचारी 'स्वामी आत्मानंद कोचिंग योजना' का आज अपने निवास कार्यालय से ऑनलाईन शुभारंभ किया। इस योजना के तहत प्रदेश के 146 विकासखंड मुख्यालयों और चार शहरों- रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर और कोरबा सहित 150 कोचिंग सेंटर के माध्यम से शासकीय स्कूलों में कक्षा 12वीं के विद्यार्थियों को नि:शुल्क कोचिंग दी जाएगी। मुख्यमंत्री बघेल और स्कूल शिक्षा मंत्री रविन्द्र चौबे के समक्ष स्वामी आत्मानंद कोचिंग योजना संचालन के लिए स्कूल शिक्षा विभाग के अंतर्गत समग्र शिक्षा, छत्तीसगढ़ पाठ्य पुस्तक निगम एवं ऐलन कैरियर कोचिंग इंस्टीट्यूट प्राइवेट लिमिटेड के मध्य एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर स्वामी आत्मानंद कोचिंग योजना के संबंध में स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा तैयार ब्रोशर का विमोचन किया।

मुख्यमंत्री ने सक्ती जिले को 145 करोड़ रुपए से अधिक के विकास कार्यों की दी सौगात

डभरा में आयोजित लोकार्पण और भूमिपूजन कार्यक्रम में शामिल हुए मुख्यमंत्री

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने आज सक्ती जिले के डभरा विकासखंड प्रवास के दौरान दशहरा मैदान डभरा में आयोजित कार्यक्रम में 1 अरब 45 करोड़ 5 लाख रूपए से अधिक के 170 विभिन्न विकास कार्यों की सौगात दी। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल द्वारा आज 141 करोड़ 58 लाख रूपए की लागत से निर्मित 152 कार्यों का भूमिपूजन और 3 करोड़ 46 लाख रूपए के लागत से बनने वाले 18 कार्यों का लोकार्पण किया गया।

लोकार्पण एवं शिलान्यास कार्यक्रम डभरा में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने अपने उद्बोधन में कहा कि मात्रात्मक त्रुटि के कारण जातियों को जो प्रमाण पत्र नहीं मिल रहा था उनके लिए उपलब्धि का दिन है। यह आपके धैर्य, साहस और संघर्ष की जीत है। आज इन समुदायों को जाति प्रमाण पत्र मिलने से शासकीय सेवाओं में नौकरी मिल रही है। 15 साल में आदिवासियों के लगभग एक लाख एकड़ जमीन उद्योग के नाम पर, व्यापार के नाम पर छीने गए। यह सरकार किसानों आदिवासियों और मजदूरों की सरकार है और हमेशा हम आपके साथ खड़े रहे। मुख्यमंत्री ने कहा कि देश के इतिहास में पहली बार हुआ है कि आदिवासियों की जमीन वापस की गई। हमने एलेन के साथ एमओयू किया।

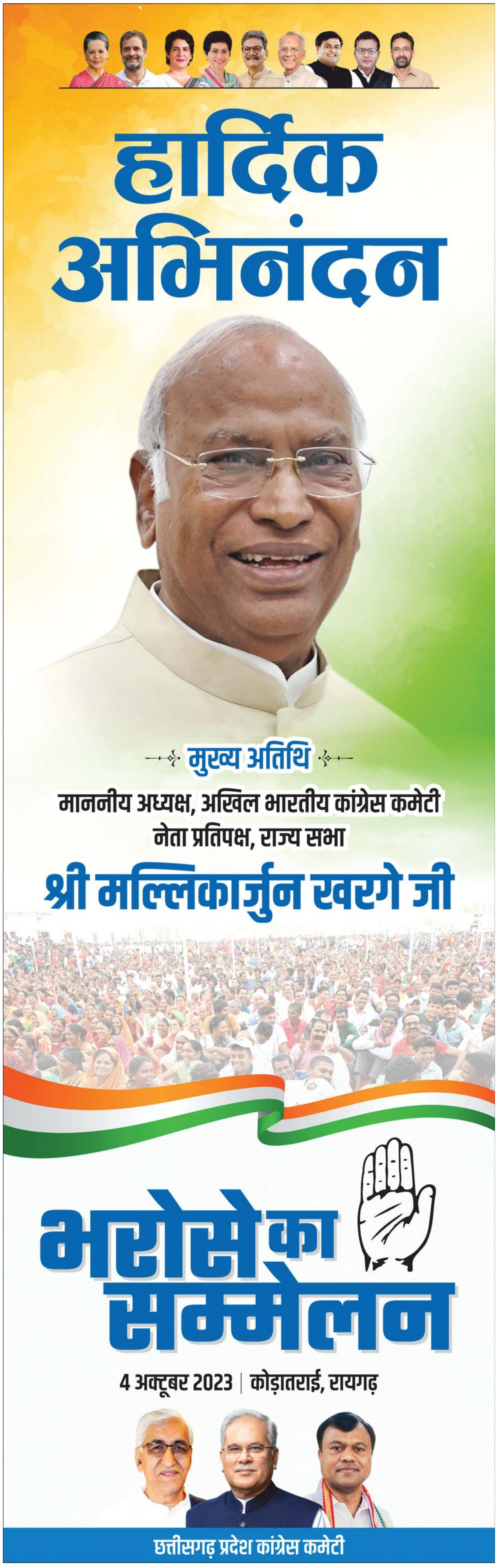

संक्षिप्त समाचार

श्री बालाजी समिति के द्वारा आयोजित होने वाले गरबा उत्सव में झूमेगा जशपुर

जशपुरनगर (विश्व परिवार)। शारदीय नवरात्रि पर श्री बालाजी जन कल्याण समिति के द्वारा 19वां जशपुर गरबा उत्सव का आयोजन किया जा रहा है। जिसका पंजीयन प्रारंभ हो गया है। कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागीयो और दर्शकों के लिए भी कई प्रतियोगिता होंगे। 20 से 23 अक्टूबर तक गरबा महोत्सव आयोजित होगा। अगले दिन 24 अक्टूबर को दशहरा उत्सव मनाया जाएगा एवं 25 अक्टूबर को शहर वासियों के लिए शाम 6:00 बजे से बॉलीवुड नाइट कार्यक्रम आयोजन किया गया है। समिति का अध्यक्ष संजय अग्रवाल, ललित साहू, अरुण सिन्हा और राजू गुप्ता को उपाध्यक्ष, गौतम झा और डॉ. कांति प्रधान को कार्यक्रम संयोजक, नकुल साहू और उमेश साहू को सचिव, विनोद कुमार यादव को कोषाध्यक्ष विनोद एवं पत्रकार संजीत यादव, तरुण प्रकाश शर्मा को मीडिया प्रभारी बनाया गया है।

भाजपा का घोषित उम्मीदवार पुरंदर मिश्रा का उत्कल गाड़ा समाज ने किया विरोध

रायपुर (विश्व परिवार)। उत्कल गाड़ा समाज के लोगों ने संगठित होकर पुरंदर मिश्रा की विधानसभा रायपुर उत्तर से दावेदारी का जमकर विरोध किया है। गाड़ा समाज के लोगों का कहना है कि उनके समाज की रायपुर में आबादी ज्यादा है और वे उत्कल समाज के पिछड़े वर्ग के लोग है जबकि पुरंदर मिश्रा उत्कल समाज के सवर्ण वर्ग से आते हैं। गाड़ा समाज के संख्या बल को अपनी ताकत बताने वाले मिश्रा के खिलाफ गाड़ा समाज ने आज पुरंदर मिश्रा के खिलाफ अंबेडकर मूर्ति पर गाड़ा समाज के लोग सैकड़ों की सख्या में यूवाओ द्वारा जमकर नारेबाजी करते हुये विरोध प्रर्दशन किया।

रियल स्किल एकेडमी में स्वच्छता उत्सव मनाया गया

रायपुर (विश्व परिवार)। रियल स्किल अकैडमी ग्राम कारा में महात्मा गांधी के जन्मोत्सव के उपलक्ष में दिनांक 2 अक्टूबर को स्वच्छता दिवस के रूप में मनाया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में नगर निगम रायपुर के स्वच्छता ब्रांड एंबेसडर श्रीमती शुभांगी आप्टे रहीं। विशेष अतिथि के रूप में श्रीमान संजय आप्टे थे। इस प्रोग्राम की अध्यक्षता वीनस अकैडमी रायपुर के डायरेक्टर संगीता मिश्रा ने किया। कार्यक्रम में सर्वप्रथम महात्मा गांधी जी को याद किया गया पश्चात श्रीमती शुभांगी आप्टे का उद्बोधन हुआ एवं डायरेक्टर श्रीमती संगीता मिश्रा द्वारा रियल स्किल अकादमी में संचालित कोर्सेज के बारे में जानकारी दी। प्रोग्राम में ग्रामवासी एवं प्रशिक्षक चंद्र, विनोद, मनीष, निधि, ममता, रवि तथा डायरेक्टर संदीप सिंह उपस्थित रहे।

मैक के दो छात्रों का स्टेट लेवल बैडमिंटन टूर्नामेंट मे चयन

रायपुर (विश्व परिवार)। राज्य स्तरीय बैडमिंटन प्रतियोगिता के लिए दो विद्यार्थियों का चयन महाराजा अग्रसेन इंटरनेशनल कॉलेज, समता कॉलोनी रायपुर के दो छात्रों का सेक्टर स्तरीय बैडमिंटन टूर्नामेंट में चयन किया गया, जिसमें विभिन्न कॉलेजों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। महाराजा अग्रसेन इंटरनेशनल कॉलेज के छात्रों ने पुरुष और महिला बैडमिंटन टूर्नामेंट के सेक्टर टूर्नामेंट में भी सक्रिय रूप से भाग लिया, जो 21 एवं 22 सितम्बर तक डिग्री गर्ल्स कॉलेज रायपुर में आयोजित किया गया था। कॉलेज के चयनित छात्र अब राज्य स्तरीय बैडमिंटन टूर्नामेंट के लिए खेलेंगे, जो 03 से 04 अक्टूबर तक डिग्री गर्ल्स कॉलेज रायपुर में आयोजित किया जाएगा। छात्रों में बी.कॉम-द्वितीय वर्ष की शुभधा अवस्थी जिन्हें महिला बैडमिंटन टूर्नामेंट के लिए चुना गया और बीबीए प्रथम सेमेस्टर के गौरव गोयल को पुरुष बैडमिंटन टूर्नामेंट के लिए चुना गया है।

06 अक्टूबर को जॉब फेयर

रायपुर (विश्व परिवार)। जिला रोजगार एवं स्वरोजगार मार्गदर्शन केन्द्र द्वारा 06 अक्टूबर को रोजगार कार्यालय, पुराना पुलिस मुख्यालय परिसर, रायपुर में सुबह 11 बजे से दोपहर 3 बजे तक जॉब फेयर आयोजित किया जाएगा। इस जॉब फेयर के माध्यम से जेनिक्स नौकरी एण्ड कन्सलटेंसी, मोर्या ढाबा चरोदा एवं एलआईसी मिनी ऑफिस, आरंग द्वारा अकाउंटेंट, टेली कॉलर, ग्राफिक्स डिजायनर, हिन्दी टायपिस्ट, बैक ऑफिस, विडियो एडिटर, रिटेल सेल्स एसोसियेट, तन्दूरी शैफ, किचन हैल्पर, नार्थ एवं साउथ इण्डियन कुक, सर्विस असिस्टेंट, मार्केटिंग मैनेजर, एलआईसी एडवाईजर आदि के 159 पदों पर भर्ती की जाएगी। इसकी योग्यता न्यूनतम 10वीं से स्नातक उत्तीर्ण रखी गई है। इसमें 9 हजार से 45 हजार रूपये प्रतिमाह वेतन दिया जा सकता है। भर्ती के लिए योग्य एवं इच्छुक आवेदक अपने साथ शैक्षणिक / तकनीकी एवं अनुभव के प्रमाण-पत्रों के साथ जॉब फेयर के लिए निर्धारित तिथि एवं स्थल पर उपस्थित होना हा सकते है।

प्रगति यात्रा से लगातार हो रहे विकास कार्यों के लोकार्पण एवं भूमिपूजन

हुडको और बालाजी नगर पहुंची प्रगति यात्रा • विधायक ने कहा यह मेरा फर्ज था, मैं सिर्फ अपनी जिम्मेदारी को पूरी इमानदारी से निभा रहा

भिलाई (विश्व परिवार)। भिलाई नगर विधायक देवेंद्र यादव लगातार प्रगति यात्रा कर रहे हैं। इस प्रगति यात्रा के दौरान विधायक अपने विधानसभा क्षेत्र के लोगों को रोज लाखों की सौगात दे रहे हैं। हर वार्ड में लाखों का विकास कार्य करवा रहे हैं। इसी कड़ी में विधायक देवेंद्र यादव गत दिनों जब प्रगति यात्रा कर रहे थे।

इसी कड़ी में विधायक देवेंद्र यादव वार्ड 70 हुडको और वार्ड 45 बालाजी नगर में प्रगति यात्रा की। यहां वे लोगों से मिलने के साथ ही उन्हें विभिन्न विकास कार्यों की सौगात की। साथ ही पुराने जो विकास कार्य चल रहे है। उनका भी निरीक्षण किया। निरीक्षण के साथ ही निर्माण कार्य की गुणवत्ता भी देखी और संबंधित अधिकारी और कर्मचारियों को गुणवत्ता का ध्यान रखने के निर्देश दिए है। प्रगति यात्रा के दौरान सुबह विधायक श्री यादव वार्ड 60 हुडकों पहुंचे। जहां वार्ड पार्षद सीजू एंथोनी और सैकड़ों की संख्या में लोगों ने उनका स्वागत किया। पुष्प माला पहनाएं। तिलक लगाए और फिर यात्रा शुरू की। विधायक को देख कर प्रगति यात्रा में हजारों की संख्या में वार्डवासी शामिल हुए। विधायक श्री यादव लगातार हर घर पहुंचे। लोगों से मिले। हालचाल जाना। इस दौरान विभिन्न विकास कार्यों की सौगात दी और वार्ड के वरिष्ठ नागरिको के हाथों से भूमिपूजन कार्यक्रम को सम्पन्न करवाया गया। इस दौरान वार्ड के नागरिकों ने विधायक देवेंद्र यादव की सराहना करते हुए कहा कि युवा विधायक देवेंद्र यादव लगातर हुडको के विकास के लिए काम कर रहे हैं। पहले के शासन काल में हुडको उपेक्षित था, यहां कोई नेता आता भी नहीं था। विकास कार्य भी नहीं होते थे। लेकिन अब कई विकास कार्य हो चुकी है। लोगों ने कहा कि विधायक श्री यादव जो नि:स्वार्थ भाव से जनता की सेवा कर रहे हैं। लोगों ने कहा कि विधायक श्री यादव ने हुडको और खुर्सीपार के वार्डों को चमका दिया है। पूरे वार्डों में इतने विकास कार्य किए किए पूरी तश्वीर ही बदल गई है। इसके लिए वार्डवासियों ने उन्हें साधूवाद दिया। विधायक ने समाज प्रमुख और बड़े बुजुर्गों को प्रमाण किए और कहा कि आप सब का आशीर्वाद और प्रेम ही है जिससे मुझे शक्ति मिलती है। आप सब के आशीर्वाद ही मेरे लिए सब कुछ है।

वार्ड 70 हुडकों में जगदीश्वर महादेव शिव मंदिर के प्रागंण में शेड एवं पेवर ब्लाक लगाया जाएगा। इसके साथ ही एमआईजी 1/391 शिवपार्वती मंदिर में टिनशेड लगाने का कार्य किया जाएगा। साथ ही इसी वार्ड में एलआईजी शिवमंदिर प्रांगण में पेवर ब्लॉक एवं बोर खनन किया जाएगा। इन तीनों विकास कार्यों का आज प्रगति यात्रा के दौरान भूमिपूजन पूरे विधि विधान के साथ किया गया।

बालाजी नगर में यह होंगे विकास कार्य : कन्या विद्यालय में टंकी बनाया जाएगा। 2 लाख की लागत से येलम्मा मंदिर के समीप शीतला मंदिर का जीर्णोद्धार किया जाएगा। जिसका भूमिपूजन किया गया। 19 लाख की लागत से साई मंदिर परिसर में डोमशेड का निर्माण किया जाएगा। 3 लाख की लागत से सड़क 53-54 में मंच निर्माण किया जाए। 3 लाख की लागत से बालाजी नगर में बैडमिंटन कोर्ट, सड़क डामरीकरण, 10 लाख से ढक्कन लगाने का काम्र 5 लाख की लागत से लक्ष्मीनगर में सार्वजनिक मंच निर्माण, 4 लाख से आंगनबाड़ी केंद्र का निर्माण किया जाएगा। इन सभी विकास कार्यों का भूमिपूजन किया गया है।

संत डॉ. युधिष्ठिर लाल शदाणी 7000 स्टूडेंट्स को आशीर्वाद देने आएंगे भविष्य मेरी मुट्ठी कार्यक्रम में

रायपुर (विश्व परिवार)। माता पिता के रूप में हम सभी अपने बच्चों के बेहतर भविष्य और सुनहरे कल के लिये जी जान लगा देते हैं। बहुत से बच्चे परीक्षा के समय के तनाव, भय, कैरियर चुनने को लेकर भ्रम, अज्ञानता जैसी समस्याओं के कारण वह नहीं कर पाते जो वे कर सकते हैं। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए एक बहुउद्देश्यीय निशुल्क कार्यक्रम भविष्य मेरी मुट्ठी में का आयोजन होने जा रहा है, जहां विख्यात ट्रेनर सीए चेतन तारवानी कक्षा 9 से 12 और कॉलेज के छात्र-छात्राओं को उनके कैरियर के लिये मार्गदर्शन, परीक्षा के तनाव, भ्रम से बचने के आसान उपाय, मोटिवेशनल अन्दाज में बताएंगे साथ ही सफलता के लिये उनके व्यवहार में आवश्यक परिवर्तन के लिये भी प्रेरित करेंगे। यह मेगा ट्रेनिंग प्रोग्राम सुहिणी सोच संस्था भारतीय भाषा विकास परिषद भारतीय सिंधु सभा एवं जेसीआई रायपुर मेट्रो के सयुक्त प्रायोजन द्वारा आयोजित किया जा रहा है। इस प्रोग्राम में शदाणी दरबार के संत श्री युधिष्ठिर लाल साईं जी बच्चो को आशीर्वाद देने स्वयं उपस्थित होंगे। यह प्रोग्राम 7अक्टूबर को बुढ़ापारा स्थित इंडोर स्टेडियम में आयोजित किया गया है। इसमें रायपुर के छोटे-बड़े स्कूल व महाविद्यालय तथा कोचिंग सेंटर के लगभग 7000 विद्यार्थी शामिल होंगे। इसकी जानकारी संस्था की फाउंडर मनीषा तारवानी अध्यक्ष करिश्मा कामलानी एवं सचिव दीक्षा बुधवानी ने दी।

कैट ने वित्तमंत्री सीतारमण को जीएसटी के सरलीकरण एवं विसंगतियो को दूर करने के लिए सुझाव दिए

जीएसटी सरलीकरण से व्यापार एवं उद्योग जगत को लाभ होगा : अमर पारवानी

रायपुर (विश्व परिवार)। कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष अमर पारवानी, चेयरमेन मगेलाल मालू, अमर गिदवानी, प्रदेश अध्यक्ष जितेन्द्र दोशी, कार्यकारी अध्यक्ष विक्रम सिंहदेव, परमानन्द जैन, वाशु माखीजा, महामंत्री सुरिन्द्रर सिंह, कार्यकारी महामंत्री भरत जैन, एवं कोषाध्यक्ष अजय अग्रवाल ने बताया कि कैट सीजी चेप्टर ने वित्तमंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण को जीएसटी काउंसिल की आगामी 7 अक्टूबर 2023 को होने जा रहे 52वीं बैठक हेतु जीएसटी के सरलीकरण एवं विसंगतियो को दूर करने हेतु सुझाव दिए।

कैट के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष अमर पारवानी एवं प्रदेश अध्यक्ष जितेन्द्र दोशी ने वित्तमंत्री श्रीमती सीतारमण को पत्र के माध्यम से अवगत कराया कि विगत दिनों कैट सीजी चेप्टर एवं व्यापारिक संगठनों की एक मिटिंग हुई थी, जिसमें जीएसटी सरलीकरण एवं विसंगतियो को दूर करने हेतु औद्योगिक एवं व्यापारिक संगठनों द्वारा सुझाव दिए गए थे। प्राप्त सुझावों का बिन्दुवार विश्लेषण करते हुए पत्र में इन सुझावों को बैठक में रखे जाने हेतु माननीया वित्तमंत्री जी से अनुशंसा किए जाने का आग्रह किया गया है।

कैट सी.जी. चैप्टर ने अपने सुझाव दिये जो निम्नानुसार है- इनपुट टैक्स क्रेडिट जीएसटीआर- 2B के आधार मान्य होने बाबत। जीएसटी प्रणाली में ब्याज की गणना के प्रावधान को बदलने बाबत। RCM संबधित प्रावधानो से ऐसे व्यापारियों को छुट प्रदान की जानी चाहिए जो भुगतान किये गये त्ब्ड का इनपुट टैक्स क्रेडिट लेने हेतु पात्र हो। नियम 86 बी- Restriction of ITC to 90% निरस्त किया जाना चाहिए। जीएसटी पंजीकरण निलंबन/निरस्तीकरण से संबधित नियम 21 के प्रावधानों को वापस लिया जाना चाहिए। ई-इनवॉइसिंग को 1 अगस्त 2023 से रु. 5 करोड़ तक के टर्नओवर वाले व्यापारियां पर लागु किया गया है। इस प्रावधानों को वापस लिया जाना चाहिए। ई-वे बिल की वैधता अवधि में 50 प्रतिशत की कटौती की गई है उसे वापस लेना चाहिए। E-Invoicing की स्थिति में खरीददार को इनपुट अनिवार्य रूप से मिलना चाहिए। छुटे हुए इनपुट टैक्स क्रेडिट लेने एवं वार्षिक विवरण पत्र में संशोधन किए जाने हेतु अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। One Time Amnesty स्कीम लानी चाहिए।

जैन समाज के नए कार्यकारिणी में अध्यक्ष दिनेश जैन, सचिव अमित जैन, उपाध्यक्ष मनोज जैन, संजय पाटनी, प्रवीण जैन हुए नियुक्त

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। बलौदाबाजार जैन समाज की नई कार्यकारिणी गठित की गई। जिनमें सह सचिव सुभाष जैन,प्रचार प्रसारक सुमित जैन नए मनोनीत हुए हैं। दिनेश जैन का पिछले कार्यकाल को देखते हुए जो कि उनका सफल कार्यकाल रहा। उन्हें सकल दिगंबर जैन समाज के सभी वर्गो के पुन: आग्रह पर अध्यक्ष पद पर निरंतर बने रहने एंव अध्यक्ष पद को स्वीकार करने की अनुरोध किया गया, समाज के अध्यक्ष दिनेश जैन ने कहा कि मेरे लिए समाज सर्वोपरि है समाज के लिए जो अच्छे से अच्छा हो सके मैं करूंगा। मंदिर निर्माण की बात पर बताया कि हमने एक निर्माण समिति भी गठित की है जिसमें अध्यक्ष के रूप में कमेटी ने दिलीप जैन को मनोनीत किया है। इसी तरह जैन समाज की उपाध्यक्ष के रूप में प्रवीण जैन और संजय पाटनी जी को पुन: स्थापित किया गया है और इसमें तीसरे उपाध्यक्ष के रूप में मनोज जैन (लोहाडिया) को जोड़ा गया है। कोषाध्यक्ष के रूप में ऋषभ जैन को पिछले कार्यकाल के सफल अनुभव के हिसाब से उन्हें पुन: कोषाध्यक्ष का भार दिया गया है। सह सचिव के रूप में सुभाष जैन उनका भी समाज के लिए नया अनुभव है, लेकिन वह समाज के प्रति समर्पित होने की बात कहते हैं। प्रचार प्रसार में सुमित जैन को सर्व सहमति से पास किया गया, उनका भी नया अनुभव है, लेकिन कुछ दिन पहले पूर्ण हुए 10 लक्षण पर्व पर उनके कार्य की और वात्सल्य भोज में उनके सहयोग की काफी तारीफ हो रही है। कुल मिलाकर यह नई कमेटी एक पूर्ण, मिलनसार और प्रतिभावान लोगों की कमेटी है।

एनएमडीसी ने स्थापना के बाद अबतक का सर्वोत्तम एच-1 प्रदर्शन दर्ज किया

हैदराबाद (विश्व परिवार)। भारत का सबसे बड़ा लौह अयस्क उत्पादक एनएमडीसी ने सितंबर 2023 माह में लौह अयस्क के 3 मिलियन टन उत्पादन और 3.11 मिलियन टन बिक्री के साथ शानदार प्रदर्शन दर्ज किया है, जो कि उत्पादन में 10त्न और बिक्री में 7त्न माह-दर-माह वृद्धि के साथ स्थापना के बाद अब तक का सर्वोत्तम प्रदर्शन है।

इस राष्ट्रीय खनिक ने सितंबर 2023 तक लौह अयस्क के 19.56 मिलियन टन उत्पादन और 20.53 मिलियन टन बिक्री के साथ शानदार अर्ध-वार्षिक प्रदर्शन रिकार्ड किया है। पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में उत्पादन और बिक्री आंकड़ों में क्रमश: 21त्न और 25त्न की महत्वपूर्ण वृद्धि के साथ इसने स्थापना के बाद अबतक का ऐतिहासिक सर्वोत्तम प्रथम अर्ध-वार्षिक (एच-1) उत्पादन और बिक्री का कीर्तिमान स्थापित किया है।

कंपनी के प्रदर्शन पर टिप्पणी करते हुए श्री अमिताभ मुखर्जी, सीएमडी (अतिरिक्त प्रभार) ने कहा कि एनएमडीसी परिवर्तन की राह पर अग्रसर है और हमारे आँकड़े इस बात की गवाही देते हैं। अपनी दृढ़ योजनाओं, द्रूत प्रोद्योगिकी में उन्नति और सुसंगत निगरानी के साथ हमने कंपनी के इतिहास में हमारा सर्वोत्तम एच-1 प्रदर्शन हासिल किया है। एनएमडीसी ने मानसून के दौरान भी महत्वपूर्ण वृद्धि की है और हम इस बढ़त को बरकरार रखते हुए वर्ष 2030 तक 100 मिलियन टन का लक्ष्य प्राप्त करेंगे।

इस्पात की खपत को बढ़ाने के लिए सुसंगत प्रयासों और देश में घरेलू इस्पात की मांग में वृद्धि को पूरा करने के लिए कच्चे माल की निरंतर आपूर्ति के साथ एनएमडीसी पुन: एक बार अपने पूर्व-स्थापित रिकार्ड से आगे बढ़ गया है और जिम्मेदार व पर्यावरण-हितैषी खनन पद्धतियों के उद्योग बेंचमार्क को स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./6313/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2023
रायपुर, दिनांक 03-10-2023

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र.6313
वार्ड का नाम- 64 -विपिन बिहारी सूर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 64 स्थित/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR656C00167** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **KANTI BAI DEWANGAN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE.SANTOSH DEWANGAN** के नाम से दर्ज, जिसको श्री/श्रीमती **संतोषी यादव** पिता/पति, श्री/श्रीमती **नेहरू राम यादव** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **मलमा खरीदी बिक्री**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-4
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./6316/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2023
रायपुर, दिनांक 03-10-2023

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र.6316
वार्ड का नाम- 45-स्वामी विवेकानंद सदर बाजार वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 45 स्थित/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR757E00085** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SITARAM** पिता/पति, श्री/श्रीमती **BALIRIM VARMA** के नाम से दर्ज, जिसको श्री/श्रीमती **कृष्ण कुमार वर्मा** पिता/पति, श्री/श्रीमती **स्व.सीताराम वर्मा** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **शपथ पत्र, सहमती पत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र, परिचय पत्र, टैक्स रसीद व अन्य दस्तावेज**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-4
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./6304/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2023
रायपुर, दिनांक 03-10-2023

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र.6304
वार्ड का नाम- 57-पं.भगवतीचरण शुक्ल वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 57 स्थित/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR447D0176C** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **ROMA MANOJA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **KIRSHAN KUMAR MANOJA** के नाम से दर्ज, जिसको श्री/श्रीमती **सन्नी मनूजा** पिता/पति, श्री/श्रीमती **किशन कुमार मनूजा** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-4
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय संपदा अधिकारी
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, संपदा प्रबंधन प्रक्षेत्र राजधानी परियोजना रायपुर
प्रथम एवं पंचम तल व्यावसायिक परिसर (दक्षिण पूर्व कार्नर) सेक्टर-27 नवा रायपुर, अटल नगर, जिला- रायपुर, फोन नं.-0771-4016094
E-mail id:- em_zone2@yahoo.com

// आम-सूचना //

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है, कि मण्डल द्वारा निर्मित **अटल विहार योजना गोबरा नवापारा, रायपुर में ई.डब्ल्यू.एस.भवन क्रमांक-1168, श्रीमती गोदावरी ध्रुव पति श्री संतराम ध्रुव,** के नाम स्ववित्तीय आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा उकत भवन के मद में पूर्ण राशि जमा कर पंजीयन कार्यालय अभनपुर से दिनांक **29.03.2023** को लीजडीड(पट्टा-विलेख) का निष्पादन करा कर आधिपत्य आदेश प्राप्त कर लिया है। वर्तमान में **श्रीमती गोदावरी ध्रुव पति श्री संतराम ध्रुव,** निवासी- जागृति चौक वार्ड क्रमांक-16, गोबरा नवापारा, राजिम, जिला-रायपुर (छ.ग.) के द्वारा उक्त भवन को क्रेता **श्री संतोष कुमार दिलावर पिता श्री साहनी राम दिलावर,** निवासी- सागरदीप कॉलोनी, फेस-03 (अमेरी), उसलापुर, बिलासपुर (छ.ग.) को विक्रय करने के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र (**एन.ओ.सी.**) प्रदाय करने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अत:**अटल विहार योजना गोबरा नवापारा, स्थित ई.डब्ल्यू.एस.भवन क्रमांक**-1168, के विक्रय के संबंध में किसी भी व्यक्ति, शासकीय/अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अंदर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर कोई विचार नही किया जावेगा।

संपदा अधिकारी
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र राजधानी. परियोजना नवा रायपुर, अटल नगर

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम-सूचना

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा टाटीबंध कॉलोनी, रायपुर में निर्मित **ई.डब्ल्यू.एस.** याजना में से भवन **क्र.ई.डब्ल्यू.एस.-767 श्री सुरेश प्रसाद शर्मा पिता श्री भोला शर्मा** को आबंटित किया गया है। मूल आबंटी द्वारा दिनांक **14.01.2003** को विक्रय विलेख निष्पादित करा यिा गया है।

मूल आबंटी की मृत्यु दिनांक **16.04.21** को हो जाने के कारण **श्रीमती उर्मिला शर्मा पति श्री स्व.सुरेश प्रसाद शर्मा** द्वारा उक्त भवन/भूखण्ड अपने नाम पर नामांतरण करने हेतु आवेदन पत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र, शपथ पत्र, वारिसों ((1) **सरिता शर्मा (2) गौरव शर्मा (3) सविता शर्मा (4) नेहा शर्मा सभी के पिता स्व.सुरेश प्रसाद शर्मा**) की सहमति पत्र एवं अन्य दस्तावेज प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत दस्तावेज के आधार पर उक्त भवन/भूखंड **श्रीमती उर्मिला शर्मा पति श्री स्व.सुरेश प्रसाद शर्मा** के नाम पर नामांतरण किया जाना है।

अत: किसी भी व्यक्ति शासकीय/ अर्द्धशासकीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/भवन के नामांतरण के संबंध में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आमसूचना प्रकाशन के 15 दिन के अंदर स्वत: उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित तिथि के बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नहीं की जावेंगी एवं भवन का नामांतरण आदेश जारी कर दिया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-03, मौलश्री विहार, रायपुर (छ.ग.)फोन नं.-0771-2991574
Email Id: eocghbzone03@gmail.com

आम-सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि सामान्य आवास योजनान्तर्गत डुमरतराई फेस-I, रायपुर स्थित **एम.आई.जी. फ्लैट क्र.-268/ब्लॉक-12/प्रथम तल, श्री हरिदास मजुमदार पिता श्री आर.के.मजुमदार,** को इस कार्यालय के आबंटन आदेश क्रमांक-**8921** दिनांक **26.11.2011** के माध्यम से स्ववित्तीय आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा उक्त फ्लैट का पूर्ण मूल्य जमा कर अपने पक्ष में दिनांक **25.06.2013** को लीजडीड निष्पादित होने के उपरांत आधिपत्य आदेश प्राप्त कर लिया गया है। वर्तमान में आबंटी **श्री हरिदास मजुमदार पिता श्री आर.के. मजुमदार, निवासी- एम.आई.जी. फ्लैट नं.-268, ब्लॉक नं.-12, फर्स्ट फ्लोर, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, डूमरतराई, हिमालयन हाईट्स, तहसील व जिला- रायपुर (छ.ग.)** के द्वारा आवेदन पत्र, विक्रय इकरारनामा, शपथ पत्र एवं अन्य दस्तावेज प्रस्तुत कर फ्लैट को क्रेता **सुश्री दिव्या हिरवानी पिता श्री उत्तम कुमार हिरवानी,** निवासी-ओरमा, बालोद (छ.ग.) को विक्रय करने के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र (एन.ओ.सी.) प्राप्त करने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अत: उक्त फ्लैट के विक्रय के संबंध में किसी व्यक्ति शासकीय व अर्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकार्त के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नही किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
संपदा प्रबंधन,प्रक्षेत्र-03, रायपुर छ.ग.

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र.411 दिनांक 03.10.2023
वार्ड का नाम-महात्मा गांधी वार्ड,
वार्ड क्र. 32 वर्ष- 2023-24

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक **32** मांग **पंजी क्र. 428 युआईडी 27971** अनुसार अधिभोगी का नाम **श्री/श्रीमती राजेन्द्र कुमार राणा/चन्दन सिंह राणा** से दर्ज है, **श्री/श्रीमती रानी देवी, अनिल, मनोज, सुनीता/ स्व.राजेन्द्र कुमार राणा** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **03-10-2023** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की काई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

सहायक राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर, बुधवार 04 अक्टूबर 2023

ग्राम अरेकेल के सभी घरों में नल जल से पेयजल आपूर्ति से ग्रामीणों को बड़ी राहत

पेयजल की समस्या से निजात पाने जल जीवन मिशन कारगर साबित हो रहा है

महासमुंद(विश्व परिवार)। जिला अंतर्गत विकासखण्ड बसना में ग्राम अरेकेल हैं। जिसकी वर्तमान जनसंख्या लगभग 3056 है। गाँव के कुल परिवारों की संख्या लगभग 635 है। इस ग्राम के निवासियों का मुख्य व्यवसाय कृषि एवं मजदूरी। जिसमें मुख्य रूप से धान का फसल लगाया जाता है। ग्राम अरेकेल में प्राथमिक शाला,माध्यमिक शाला और 3 आंगनबाड़ी केंद्र है, जहाँ जल जीवन मिशन के तहत पेयजल व्यवस्था हेतु क्रियाशील नल कनेक्शन स्थापित है, इसके अलावा चिकित्सा केंद्र है जहाँ पर भी क्रियाशील नल कनेक्शन उपस्थित है। पहले ग्रामवासी पेय जल के लिए गाँव में स्थापित सामुदायिक नल और हैण्डपंप पर निर्भर थे। जिससे उन्हें कई दिक्कतों का सामना करना पड़ता था। ग्रीष्मकाल के दिनों में अधिकतर हेण्डपम्प का जल स्तर निचे गिर जाने की वजह से सूखे की स्थिति उत्पन्न होती थी, परिवार के निस्तार के लिए ग्राम के तालाब और बोर उपलब्ध है, जो कि सिर्फनिस्तार के योग्य है। ग्रीष्मकाल में ग्राम की महिलाओं को अत्यंत परेशानियों का सामना करना पड़ता था । ग्राम अरेकेल में पेयजल समस्या के निदान हेतु लोक स्वस्थ्य यांत्रिकी विभाग द्वारा विभागीय अधिकारी, कर्मचारियों द्वारा ग्राम सभा तथा जल सभा का आयोजन कर उपस्थित ग्रामवासियों से चर्चा की गई। चर्चा में ग्राम की पेयजल समस्या के समाधान हेतु स्वतंत्रता दिवस 2019 के उपलक्ष्य में कि गई राज्य व् केंद्र सरकार द्वारा संचालित योजना द्वारा जल जीवन मिशन की घोषणा के तहत कार्य को सुदृण रूप से करने की नवीन नीति से अवगत कराया गया तथा कार्य की शुरूवात की गई। साथ ही ग्राम कार्य योजना तैयार कर ग्रामीण सहभागी मूल्यांकन की मदद से ग्राम के लिए पये जल की समस्या को दूर करने हेतु योजना बनाई गई। जल जीवन मिशन ,हर घर जल सरकार की अतिमहत्वाकांक्षी योजना अंतर्गत आज ग्राम अरेकेल में हर घर नल के माध्यम से जल उपलब्ध करवाने का लक्ष्य एवं जल जीवन मिशन के उद्देश्यों से ग्रामीणों को अवगत कराते हुए जल संरक्षण ,संचयन , सोख्ता गड्ढा ,किचन गार्डन के महत्व एंव उपयोगिता के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए ग्रामीण महिलाओं को जागरूक किया। ग्राम अरेकेल में लगभग 635 परिवार निवासरत हैं। ग्राम में योजना को संचालित, संधारण करने के लिए ग्राम सभा के माध्यम से ग्राम पेय जल एवं स्वच्छ्ता समिति का गठन किया गया जिसके अध्यक्ष श्रीमती चित्रेखा (ग्राम सरपंच) है योजना के तहत ग्राम में सभी नल कनेक्शन प्रदान किया गया। ग्राम में जल जीवन मिशन के तहत लगभग 168.3 लाख रुपये की लागत से 80 कि ली टंकी का निर्माण हुआ एवं 635 परिवारों को नल कनेक्शन दिया गया। जो कि गांव के प्रत्येक घरों में जल जीवन मिशन के तहत् शुद्ध पेयजल सप्लाई हो रहा है।

बरोंडाबजार से लाफिनखुर्द मार्ग में सितली नाला पर तीन करोड़ 81 लाख की लागत से बनेगा पुल

संसदीय सचिव ने ग्रामीणों की मौजूदगी में पूजा अर्चना कर निर्माण कार्य के लिए किया भूमिपूजन

महासमुंद(विश्व परिवार)। बरोंडाबजार से लाफिनखुर्द मार्ग में सितली नाला पर तीन करोड़ 81 लाख 73 हजार की लागत से उच्चस्तरीय पुल का निर्माण कराया जाएगा। ग्राम बरोंडाबाजार में आयोजित कार्यक्रम में ग्रामीणों व जनप्रतिनिधियों की मौजूदगी में पूजा-अर्चना कर पुल निर्माण के लिए भूमिपूजन किया। रविवार की शाम ग्राम बरोंडाबाजार में पुल निर्माण व सामुदायिक भवन निर्माण के लिए भूमिपूजन समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संसदीय सचिव व विधायक विनोद सेवनलाल चंद्राकर थे। अतिथि के रूप में कृषि उपज मंडी उपाध्यक्ष गोविंद साहू, ब्लाक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष खिलावन साहू, हुलासगिरी गोस्वामी, किशन देवांगन, लीलू साहू, सरपंच छन्नू लाल ध्रुव, मोहन लाल साहू, सहदेव चक्रधारी, मोती साहू, देवकुमार टंडन मौजूद रहे। सर्वप्रथम संसदीय सचिव श्री चंद्राकर ने पूजा अर्चना कर पुल निर्माण के लिए भूमिपूजन किया। क्षेत्रवासियों को पुल निर्माण की सौगात मिलने पर बधाई देते हुए संसदीय सचिव श्री चंद्राकर ने कहा कि पुल बनने से बरोंडाबाजार से लाफिनखुर्द मार्ग में आवाजाही में ग्रामीणों को राहत मिलेगी। उन्होंने कहा कि समर्थन मूल्य पर धान खरीदी सहित किसान हितैषी योजनाओं से किसानों में नये उत्साह का संचार हुआ है। खेतों से दूर हो रहे किसान खेतों की ओर लौटे हैं और खेती का रकबा भी बढ़ा है। अब किसानों के हित में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने ऐतिहासिक फैसला लेते हुए निर्धारित लिमिट को बढ़ाकर समितियों के जरिए अब 20 क्विंटल प्रति एकड़ धान खरीदी करने का फैसला लिया है। उन्होंने कहा कि भूपेश सरकार जब से छत्तीसगढ में आई है तब से गांव, गरीब, किसान खुशहाल है। सरकार का प्रमुख उद्देश्य समाज के अंतिम छोर के लोगों का विकास करना है। आज प्रदेश सरकार, पूरे देश मे सबसे ज्यादा कीमत पर किसानों का धान खरीद रही है। किसान पुत्र मुख्यमंत्री ने प्रदेश के हर वर्ग का समुचित विकास किया है। किसानों के हित में राज्य सरकार ने कई महत्वपूर्ण फैसले लिए हैं।

ओलावृष्टि से प्रभावित किसानों के खाते में जल्द पहुंचेगी क्षतिपूर्ति राशि

70 लाख रुपए का चेक जारी

बैंकों में लगातार अवकाश होने के कारण अंतरण नहीं हो सका

महासमुन्द(विश्व परिवार)। झलप पटेवा क्षेत्र के ओलावृष्टि से प्रभावित किसानों के खाते में क्षतिपूर्ति की राशि जल्द ही पहुंच जाएगी। इसके लिए 70 लाख रुपए का चेक जारी किया गया है।चूंकि अभी बैंकों में लगातार अवकाश है, इसलिए यह राशि किसानों के खाते में नहीं पहुंच पाया है। जैसे ही अवकाश खत्म होगा और बैंक खुलेंगे वैसे ही उनके खाते में राशि आरटीजीएस के माध्यम से पहुंच जाएगी। अनुविभागीय अधिकारी राजस्व श्री उमेश साहू ने बताया कि जिला प्रशासन किसानों की समस्या के समाधान के लिए संवेदनशीलता के साथ काम कर रही है। ओलावृष्टि से प्रभावित किसानों के लिए दो करोड़ 53 लाख रुपए की राशि स्वीकृत किया जा चुका है। अभी पहली किश्त के रूप में 70 लाख रुपए का चेक जारी किया गया है। तहसीलदार महासमुन्द चंद्रशेखर मंडई ने बताया कि शेष किसानों के लिए भी क्षतिपूर्ति राशि जल्दी ही जारी की जाएगी जो प्रक्रियाधीन है। उन्होंने सभी किसानों से अपील की है कि वे धैर्य बनाये रखें। प्रशासन सवेंदनशीलता और गंभीरता के साथ मुआवजा वितरण का कार्य कर रही है।

आंदोलनकारियों को पुलिस ले गई थाना : हटा दिया पंडाल, संगठन कार्यकर्ता में नाराज

कोरबा(विश्व परिवार)। नगर पालिका दीपका क्षेत्र के गौरव पथ को भारी वाहनों से मुक्त किए जाने की मांग को लेकर आंदोलन कर रहे आंदोलनकारियों को पुलिस ने उठा लिया। इसके साथ पंडाल को हटा दिया गया। जानकारी मिलते ही संगठन के कार्यकर्ता नाराज हो गए। थाना का घेराव करते, इसके पहले ही पुलिस ने समझाइश देकर आंदोलनकारियों को छोड़ दिया। 48 दिन से जारी गौरव पथ में रविवार को शासन प्रशासन ने अचानक हस्तक्षेप करते हुए आंदोलन के पंडाल को जब्त किया और आंदोलन कर रहे उमागोपाल और बंशी को जबरदस्ती उठा कर थाने में ले कर बैठा दिया । उमागोपाल और बंशी के थाने में बैठाने की जानकारी मिलते ही संगठन के कार्यकर्ता आक्रोशित हो गए और थाना घेराव की तैयारी करने लगे। इसकी जानकारी मिलते हरकत में आई पुलिस ने उमागोपाल और बंशी को केवल समझाइश देकर और कल के आंदोलन को स्थगित करने की चेतावनी देकर छोड़ दिया गया। यहां बताना होगा कि गांधी जयंती के अवसर पर गौरव पथ संघर्ष समिति दीपका द्वारा एक दिवसीय धरना प्रदर्शन व दीपका-गेवरा खदान बंदी की घोषणा की है। इस आंदोलन क्षेत्रवासियों का लगातार समर्थन मिल रहा है। इससे एसईसीएल, नगर पालिका दीपका प्रशासन की नींद उड़ी हुई है, वहीं कानून व्यवस्था को लेकर पुलिस भी चिंतित हो गई है। आंदोलनकारी बंशीदास का कहना है कि शासन प्रशासन केवल कंपनी को गाड़ियों को चलाने के लिए वैकल्पिक मार्ग का बहाना कर रही है। सच्चाई तो यह है की सभी गंतव्यों के लिए ट्रांसपोर्टरों के पास वैकल्पिक मार्ग पहले से ही उपलब्ध है। उमागोपाल ने कहा कि शासन प्रशासन आंदोलनकारियों को डराना बंद करे और असल में अगर क्षेत्र में शांति व्यवस्था बनाए जाने के पक्षधर हैं तो गौरव पथ में भारी वाहन चलाना बंद करे।

एनटीपीसी कोरबा ने स्वच्छता पखवाड़ा 2023-स्वच्छता ही सेवा के तहत एनटीपीसी टाउनशिप पर चलाया स्वच्छता अभियान

कोरबा(विश्व परिवार)। एनटीपीसी कोरबा द्वारा भारत सरकार के दिशा निर्देशानुसार स्वच्छ भारत मिशन के तहत दिनांक 01 अक्टूबर से 15 अक्टूबर 2023 तक स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन किया जा रहा हैं। इस अवसर पर स्वच्छता पखवाड़ा. स्वच्छता ही सेवा का शुभारंभ करते हुए 01 अक्टूबर 2023 को श्री बी रामचंद्र राव, परियोजना प्रमुख, एनटीपीसी कोरबा ने स्वच्छता पखवाड़ा के अवसर पर शपथ लिया। यह कार्यक्रम एनटीपीसी कोरबा टाउनशिप के सब्जी मंडी में आयोजित किया गयाद्य इसी क्रम में 01 अक्टूबर 2023 को एनटीपीसी कोरबा द्वारा सब्जी मंडी में स्वच्छता अभियान भी चालाया गया तथा सब्जी मंडी के अंदर और बाहर साफ सफाई भी की गई। एनटीपीसी कोरबा ने एक जुट होकर एक घंटे के लिए श्रमदान किया। एनटीपीसी कोरबा सब्जी मंडी पर इस स्वच्छता अभियान का नेतृत्व श्री बी आर राव, परियोजना प्रमुख, एनटीपीसी कोरबा ने किया । इस अवसर पर श्री मधु एस महाप्रबंधक ओ एंड एम,श्री सोमनाथ भट्टाचार्य, महाप्रबंधक प्रचलन श्री मनीष वी साठे, महाप्रबंधक ऐश डाइक श्री प्रभात राम, अपर महाप्रबंधक मानव संसाधन और अन्य वरिष्ठ अधिकारी, कर्मचारीगण, यूनियन और एसोसिएशन के सदस्य, एवं एनटीपीसी कोरबा टीम और एनटीपीसी कोरबा की सीआईएसएफ टीम मौजूद रहे। इस मौके पर 100 से ज्यादा लोग मौजूद थे। ज्ञात हो कि स्वच्छता पखवाड़ा के दौरान एनटीपीसी कोरबा में विभिन्न प्रकार के जागरूकता कार्यक्रम एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है। स्वच्छ भारत अभियान एक ऐसा भारत सरकार द्वारा स्वच्छ भारत मिशन है जो भारत को स्वच्छ बनाने के लिए सहयोग कर रहा है। यह अभियान प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किया गया था और महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत के दृष्टिकोण का सम्मान करने के लिए 2 अक्टूबर 2014 को शुरू किया गया था। स्वच्छता अभियान के तहत स्वच्छता पखवाड़ा राष्ट्रीय स्तर पर चलाया गया और इसमें सभी ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों को शामिल किया गया।

एबीवीटीपीएस से सेवानिवृत्त हुए अधीक्षण अभियंता एवं तीन अन्य कर्मचारियों को दी गई भावपूर्ण विदाई

कोरबा(विश्व परिवार)। अटल बिहारी वाजपेयी ताप विद्युत गृह (एबीवीटीपीएस) मड़वा से सितंबर माह में अधीक्षण अभियंता वाय.के.सिंह, कार्यपालन अभियंता वीएस. मनियन, कनिष्ठ पर्यवेक्षक बलराम प्रसाद साहू और अश्वनी कुमार साहू सेवानिवृत्त हो गए। सेवानिवृत्ति हो रहे अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पॉवर कंपनी परिवार की ओर से भावपूर्ण विदाई दी गई। इस अवसर पर कार्यक्रम के अध्यक्ष कार्यपालक निदेशक एसके बंजारा ने उनके कार्यों की सराहना करते हुए पॉवर कंपनी की ओर से आभार जताया। कार्यपालक निदेशक के हाथों सेवानिवृत्ति अधिकारी एवं

कर्मचारियों को स्मृति चिह्न व सेवा प्रमाण-पत्र भेंट किया गया। समारोह में विशिष्टि अतिथि अतिरिक्त मुख्य अभियंता पीके श्रीवास्तव, एसडी द्विवेदी एवं वरिष्ठ मुख्य रसायनज्ञ डॉ. आरके तिवारी की गरिमामयी उपस्थिति रही। कांफ्रेंस हाल में आयोजित विदाई समारोह में कार्यपालक निदेशक एवं विशिष्ट अतिथियों द्वारा सेवानिवृत्त अधिकारी को स्वस्थ व सुखमय जीवन की शुभकामनाएं दी गई। वाय.के.सिंह ने विद्युत मंडल एवं पॉवर कंपनी में 40 साल 8 माह 27 दिन की सेवाएं दी हैं। जबकि वीएस. मनियन ने 35 वर्ष चार माह की सेवा के बाद स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ली है। बलराम प्रसाद साहू ने विद्युत मंडल एवं पॉवर कंपनी में 38 वर्ष चार माह 29 दिन की सेवाएं दी हैं। वहीं अश्वनी कुमार साहू ने 38 वर्ष 8 माह दो दिन की सेवाएं दी हैं। इस अवसर पर सेवानिवृत्ति अधिकारी एवं कर्मचारियों द्वारा अपने कार्यकाल के अनुभवों को साझा किया गया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए कल्याण अधिकारी आरएस. टेकाम द्वारा सेवानिवृत्ति अधिकारी एवं कर्मचारियों का संक्षिप्त जीवन परिचय का उल्लेख किया गया। इस अवसर पर अधीक्षण अभियंता क्रिस्टोफर एक्का, एन. लकरा, नंदकिशोर घृतलहरे, एसके तारेंद्र, जेके गायकवाड़, वीके सिंह, मुख्य रसायनज्ञ अभय मिश्रा, प्रकाशन अधिकारी बसंत शाहजीत समेत बड़ी संख्या में अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में रामनारायण राठौर एवं विजय कुमार मिश्रा को विशेष सहयोग रहा।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती पर कलेक्टर तारन प्रकाश सिन्हा ने किया नमन

रायगढ़(विश्व परिवार)। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती पर आज यहां कलेक्ट्रेट में स्थापित उनकी प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर कलेक्टर श्री तारन प्रकाश सिन्हा ने उन्हें नमन किया। इस अवसर पर कलेक्टर श्री सिन्हा ने महात्मा गांधी के देश की स्वाधीनता में दिए अमूल्य योगदान को स्मरण करते हुए कहा कि उन्होंने सत्य, प्रेम और अहिंसा का मार्ग अपनाकर पूरे विश्व के सामने मिसाल कायम की। इस अवसर पर अपर कलेक्टर श्री राजीव पाण्डेय, आयुक्त नगर निगम श्री सुनील चंद्रवंशी, संयुक्त कलेक्टर श्री डी.आर.रात्रे, डिप्टी कलेक्टर श्री रमेश मोर, जिला शिक्षा अधिकारी श्री बी.बाखला, अधीक्षक श्री राजेश मेहरा, स्टेनो टू कलेक्टर श्री सूरज खर्रा सहित अन्य अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

संक्षिप्त समाचार

16 को मुख्यालय बिलासपुर का घेराव करेंगे विस्थापित

कोरबा(विश्व परिवार)। ग्रामीण एसईसीएल के भूविस्थापित विरोधी गतिविधियों से त्रस्त हो गए हैं । बार-बार आवेदन निवेदन के बाद भी मांगों पर केवल आश्वासन देकर गुमराह किया जा रहा है । विदित हो कि 26 सितंबर को बुडबुड खदान में आंदोलन किया गया था । जिसके संबंध में मुख्यालय के अधिकारियों की उपस्थिति में 29 सितंबर को महाप्रबंधक कार्यालय कोरबा में बैठक आयोजित की गई थी । वार्ता सकारात्मक नहीं होने के कारण ग्रामीण असंतुष्ट होकर एसईसीएल मुख्यालय घेराव करने के लिए मन बना लिए है । जिसके तारतम्य में ग्राम करतली में क्षेत्रीय पंचायत प्रतिनिधि व 7-8 पंचायत के ग्रामीण उपास्थित हुए । जिसमे 16 अक्टूबर को एसईसीएल मुख्यालय घेराव करने हेतु निर्णय लिया गया। मुख्यालय घेराव में चारों परियोजनाओं की रोजगार, मुआवजा बसाहट, वैकल्पिक रोजगार, बसाहट का पट्टा एवम अन्य समस्याओं को लेकर आंदोलन किया जाएगा । कोरबा जिले में गेवरा,दीपिका, कुसमुंडा,कोरबा परियोजना के द्वारा उत्खनन कार्य किया जा रहा है । प्रत्येक क्षेत्र में अलग-अलग नियम बनाकर लोगों को गुमराह किया जा रहा है । शासन एसईसीएल की भूमि पर बेजा कब्जा किए लोगों को पट्टा आवंटित कर रहा है , जबकि एसईसीएल द्वारा नियमानुसार आवंटित पुनर्वास का कई आंदोलन के बाद भी आज तक पट्टा प्रदान नहीं किया गया । पक्षपात पूर्ण बर्ताव शुरू से ही किया जा रहा है, जिसके फलस्वरुप सभी परियोजनाओं की समस्या को ध्यान में रखकर मुख्यालय का घेराव किया जाएगा । जब तक मांगों पर सकारात्मक पहल नहीं किया जाता तब तक यह आंदोलन लगातार जारी रहेगा।

कांग्रेसियों को भ्रष्टाचार से फुर्सत नहीं, दर्री अगारखार क्षेत्र में लखन लाल देवांगन ने किया जनसंपर्क

कोरबा(विश्व परिवार)। पूर्व महापौर भाजपा कोरबा विधानसभा प्रत्याशी लखन लाल देवांगन नगर निगम क्षेत्र के वार्ड क्रमांक 51 अगारखार एवं लाटा बस्ती में गली गली जनसंपर्क कर जनता-जनार्दन से आशीर्वाद लेते हुए कोरबा में भाजपा का कमल खिलाने अपील किए। इस दौरान वार्ड वासियों ने समस्याओं को गिनाया। भाजपा प्रत्याशी लखन देवांगन ने कहा यहां के कांग्रेस विधायक ने 15 साल से राज किया 10 सालों से कांग्रेस के महापौर रहे और विकास के नाम पर केवल और केवल ढिंढोरा पीटते हैं सड़कों की हालत आप सभी देख रहे हैं नाली की गंदी पानी सड़कों में बह रही है। कांग्रेसियों को भ्रष्टाचार करने में फुर्सत नहीं है। जब मैं महापौर था तो अनेको भवन निर्माण एवं सांस्कृतिक मंच सीसी रोड का निर्माण कराया था। भवन तो आज भी वही है उसका भी ना मरम्मत कराया गया ना जीणोद्धार। निश्चित ही कोरबा की जनता बदलाव चाहती है। और इस बार परिवर्तन करके रहेगी। आप सभी जन आशीर्वाद दें निश्चित तौर पर भाजपा के सेवा और सुशासन के संकल्प को पूरा करेंगे।

आइएफएस ओलंपियाड में शामिल होंगे कोरबा के ऋषभ

कोरबा(विश्व परिवार)। इंटरनेशनल फाइनेंशियल सिक्योरिटी ओलंपियाड के लिए 43 देश के प्रतिभागियों में भारत से कोरबा के ऋषभ शीट का चयन हुआ है। भारत से कुल 10 छात्रों के चुनाव में ऋषभ ने तीसरा स्थान हासिल किया है। अब वे रूस में आयोजित प्रतिस्पर्धा के फायनल राउंड में शामिल होंगे। इंटरनेशनल फाइनेंशियल सिक्योरिटी ओलंपियाड जो की प्रतिवर्ष अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजित की जाती है। इस वर्ष रूस सरकार द्वारा आयोजित की जा रही है। जिसमें 43 देश के छात्र-छात्राएं प्रतियोगिता में सम्मिलित होंगे। यह प्रतियोगिता दो अक्टूबर से छह अक्टूबर तक विभिन्न चरणों में रूस के सीरियस क्षेत्र के अंतर्गत सोची शहर में संपन्न होगा। भारत से कुल 10 छात्रों का इस प्रतियोगिता के फाइनल राउंड के लिए चुनाव हुआ है इन 10 छात्रों का तीन चरणों में प्रतियोगिता द्वारा फाइनल राउंड के लिए चुना गया है। जिसमें पूरे भारत में तीसरा स्थान हमारे कोरबा शहर से एवं पत्रकार सुवेंदु शीट के पुत्र ऋषभ शीट जो कि वर्तमान में सिंबायोसिस स्कूल आफ इकोनामिक्स पुणे में अध्यनरत है का चुनाव हुआ है। ऋषभ अपनी स्कूल शिक्षा डीएवी पब्लिक स्कूल एसईसीएल कोरबा से पूर्ण कर वर्तमान में पुणे से अपनी स्नातक की पढ़ाई पूरी कर रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सुरक्षा ओलंपियाड एक प्रतियोगिता है जिसका उद्देश्य वित्तीय सुरक्षा के क्षेत्र में युवाओं की जागरूकता और कौशल को बढ़ाना है। यह विभिन्न देशों के छात्रों और स्कूली छात्रों के लिए खुला है जो मनी लान्ड्रिंगए आतंकवाद के वित्तपोषण और सामूहिक विनाश के हथियारों के प्रसार को रोकने की चुनौतियों और अवसरों के बारे में सीखने में रुचि रखते हैं।

संपादकीय

रोजगार की भयावह तस्वीर

वर्तमान सरकार के कुछ कदम बेरोजगारी को बढ़ाने वाले रहे हैं, लेकिन कुल मिलाकर यह समस्या व्यवस्थागत है। जब तक उस पर ध्यान नहीं दिया जाता, इसका कोई समाधान नहीं निकल सकता। भारत में बेरोजगारी की समस्या गंभीर रूप लेती जा रही है। दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि इसके बावजूद यह मुख्य राजनीतिक विमर्श का हिस्सा नहीं है। विपक्षी नेता जब-तक इस समस्या का जिक्र जरूर करते हैं, लेकिन समस्या क्यों है और उसका समाधान क्या है, इन सवालों पर उनके पास कहने के लिए कुछ नहीं होता। उनका सिर्फ यह कहना होता है कि नरेंद्र मोदी सरकार ने बेरोजगारी बढ़ा दी है। बेशक, वर्तमान सरकार के कुछ कदम बेरोजगारी को बढ़ाने वाले रहे हैं, लेकिन कुल मिलाकर यह समस्या व्यवस्थागत है। जब तक उस पर ध्यान नहीं दिया जाता, इसका कोई समाधान नहीं निकल सकता। फिलहाल, अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय की ताजा रिपोर्ट चर्चा में है, जिसमें बताया गया है कि भारत में 15 प्रतिशत से ज्यादा ग्रैजुएट बेरोजगार हैं। 25 साल से कम उम्र के ग्रैजुएट्स के बीच तो बेरोजगारी दर 42 प्रतिशत तक है। 'स्टेट ऑफ वर्किंग इंडिया-2023' रिपोर्ट में भारत में रोजगार की चिंताजनक तस्वीर पेश की है। बताया गया है कि 2019 के बाद से भारत में नियमित वेतन की नौकरियों के सृजन की रफ्तार कम हुई है। इसका एक बड़ा कारण कोविड-19 महामारी रही। महामारी के बाद रोजगार की स्थिति में सुधार हुआ। ग्रैजुएट लोगों को नौकरियां मिलने लगीं। लेकिन सवाल बना हुआ है कि उन्हें किस तरह की नौकरियां मिल रही हैं और क्या ये उनके कौशल और आकांक्षाओं से मेल खाती हैं? जाहिर है, ऐसी स्थिति नहीं है। हाल ही कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने दिल्ली के आनंद विहार स्टेशन पर कुली कर्मियों से संवाद किया। उस दौरान सामने आया कि कुछ ग्रैजुएट कुली का काम कर रहे हैं। महिलाओं में तो रोजगार की दर 2004 के बाद से या तो रुकी हुई रही या गिरी है। 2019 के बाद से महिलाओं के बीच घरेलू आर्थिक दबाव के कारण स्वरोजगार का ट्रेंड जरूर बढ़ा है। लेकिन अपने देश की यह हकीकत कायम है कि स्वरोजगार अक्सर मजबूरी में किया जाता है और ज्यादातर मामलों में इसका अर्थ अर्ध-रोजगार होता है। खुद रिपोर्ट में बताया गया है कि नियमित वेतन वाली नौकरी की जगह महिलाओं के बीच स्वरोजगार बढ़ा और इस वजह से उनकी आमदनी घट गई।

स्वस्थ व मजबूत लोकतंत्र के लिए मतदान आवश्यक

- पहला आम चुनाव में पहली बार 45.7 प्रतिशत मतदाता वोट डाले
- हर वोट देश के नवनिर्माण में महत्वपूर्ण

लेखक- एल.डी. मानिकपुरी, सहायक जनसम्पर्क अधिकारी

देश की आजादी के बाद सबसे बड़ी क्रांति यह थी कि लोक सभा तथा राज्यों की विधान सभाओं के निर्वाचन के लिए सार्वजनिक वयस्क मताधिकार को अपनाया गया। घोर पिछड़ेपन, घोर दरिद्रता तथा घोर निरक्षरता वाले, नए-नए स्वाधीन हुए देश में हर नागरिक को जिसकी आयु 21 वर्ष से कम न हो (अब घटाकर 18 कर दी गई है) और जो किसी विधि के अधीन अनिवास, चित्तविकृति, अपराध या भ्रष्ट अवैध आचरण के आधार पर अन्यथा अयोग्य न हो, वोट का अधिकार देना संविधान निर्माताओं के लिए एक बहुत बड़ी आस्था और जनसाधारण में विश्वास का काम था (अनुच्छेद 326)। अनुच्छेद 324 कहता है कि एक निर्वाचन आयोग होगा। वह संसद और प्रत्येक राज्य विधानमंडल के वास्ते तथा राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति के पदों के वास्ते सभी निर्वाचनों का अधीक्षण, निदेशन और नियंत्रण करेगा। देश की आजादी के बाद जुलाई 1948 को ही भारतीय नेताओं ने चुनावी प्रक्रिया की तैयारियां शुरू कर दी थी। हालांकि, तब-तक चुनाव कराने के लिए कोई कानून नहीं थे। डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर के नेतृत्व में, ड्राफ्टिंग कमिटी (मसौदा समिति) ने कड़ी मेहनत कर संविधान का मसौदा तैयार किया था, जो 26 नवंबर, 1949 को पारित हुआ। हालांकि, इसे लागू 26 जनवरी, 1950 से किया गया। भारत को उस दिन चुनाव कराने के लिए नियम और उप-नियम मिले और देश आखिरकार 'भारत गणराज्य' बना। यह एक असाधारण सफ़र की महज़ शुरुआत थी। वैसे तो 15 अगस्त 1947 को भारत आज़ाद हो गया था लेकिन पहले चुनाव 1951 में हो पाए और बीच के वर्षों में भारत, किंग जॉर्ज टप के अधीन संवैधानिक राजतंत्र था। साथ ही, लुई माउंटबेटन इसके गवर्नर जनरल थे। यह जानना जरूरी है कि आज़ाद भारत के पहले आम चुनाव 25 अक्टूबर, 1951 और 21 फ़रवरी, 1952 के बीच हुआ था। संविधान लागू होने के बाद चुनाव आयोग का गठन किया गया।चुनाव कराने की ज़िम्मेदारी भारतीय नौकरशाह, सुकुमार सेन को दी गई। इस तरह वे भारत के पहले मुख्य चुनाव आयुक्त बने। इसमें सबसे बड़ी चुनौती थी भारत की आबादी, जो उस समय करीब 36 करोड़ थी। दुनिया की आबादी का करीब 17 फ़ीसदी हिस्सा मतदान करने वाला था। यह उस समय का सबसे बड़ा चुनाव था। चुनाव में करीब 1,874 उम्मीदवार और 53 राजनैतिक पार्टियां उतरी थीं, जिनमें 14 राष्ट्रीय पार्टियां थीं और इन दलों ने 489 सीटों पर चुनाव लड़े थे। संविधान के लागू होने पर, भारत ने वोट डालने के लिए उसी उम्र को योग्य माना जो दुनिया भर में अपनाई जा चुकी थी। इससे 21 साल से ज्यादा उम्र वाले लगभग 17.3 करोड़ लोग वोट डालने के लिए योग्य पाए गए। जनगणना के आंकड़ों के आधार पर संसदीय निर्वाचन क्षेत्र तय किए जाने थे, जो

1951 में हो पाया। अशिक्षित आबादी, चुनाव चिह्न डिज़ाइन, मतपत्र और मतदान पेटी, मतदान केंद्र आदि समस्या व चुनौती थी। साथ ही यह पक्का करना था कि मतदान केंद्रों के बीच सही दूरी हो। मतदान अधिकारियों को नियुक्त कर प्रशिक्षण सहित अनेक परेशानियों और चुनौतियों का सामना भी करना पड़ा। हालांकि इन चुनौतियों को पार करने में समय लगा। आखिर में जब चुनाव हुए, तो योग्य आबादी में से 45.7 प्रतिशत मतदाता, पहली बार वोट डालने के लिए अपने घरों से बाहर निकले। इस तरह भारत, दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र बना, जहां लोगों ने, लोगों के लिए एक सरकार चुनी। एक वोट या एक मतदान देश व प्रदेश के लिए क्या उपयोगी साबित होगी? मतदान का महत्व कितना है ? और क्यों हैं ? इस विषय पर अनेक पुस्तकें लिखे जा चुके हैं, लेकिन क्या देश व प्रदेश हित के लिए मतदान करना वास्तव में एक जरूरी है? ऐसे सामान्य प्रश्न में ही गम्भीर उत्तर छुपा हुआ है। जिस तरह से फसलों के लिए पानी, पानी के लिए पेड़-पौधे-हरियाली, खेती लिए इंसान की जरूरत है और इंसान के लिए अनाज-पानी, आवास, शिक्षा, अस्पताल, सड़क, बिजली, रोजगार जैसी बुनियादी जरूरतों की आवश्यकता होती है। ऐसे में स्वस्थ व मजबूत लोकतंत्र के लिए प्रत्येक वोट महत्वपूर्ण है। निर्वाचन आयोग, राजनीतिक दलों व आम मतदाताओं की भूमिका, सक्रियता,संवेदनशीलता से भरे होते हैं। अलग-अलग वर्ग के मतदाताओं को कई बार भ्रम की स्थितियों का सामना करना पड़ता है। इस पर निर्वाचन आयोग लगातार सुधार व नियम-प्रक्रियाओं में संशोधन समय-समय पर करते हैं ताकि मतदाता आसानी से अपने मत या वोट के महत्व को बेहतर तरीके से समझ सके। लोकतंत्र की सफलता तभी होगी जब लोग मतदान करेंगे। देश की प्रगति के लिए सबको मिलकर वोट देना चाहिए। मतदान सभी का संवैधानिक अधिकार है। इसका उपयोग सभी लोगों को स्वेच्छा के साथ करना चाहिए। हम खुशनसीबों में से है कि हमें सरकार चुनने का अधिकार मिला है। हमें इसकी सराहना और कदर करनी चाहिए। यह भारतीय लोकतंत्र की खूबसूरती ही है कि कोई हवाई जहाज का मालिक हो या ठेला चलाने वाला आम नागरिक, सबको वोट देने का अधिकार है। सभी का मत बराबर है। अतएव देश व प्रदेश के समुचित विकास, स्वस्थ व मजबूत लोकतंत्र के लिए हर मतदाताओं को मतदान करना आवश्यक है।

विचार

पितृपक्ष में क्या करेंगी पार्टियां?

श्राद्ध का समय शुरू हो गया है। अगले 15 दिन तक हिंदू मान्यता के हिसाब से कोई शुभ काम नहीं होगा और न कोई नया काम शुरू किया जाएगा। तभी सभी पार्टियों के नेता इस दुविधा में पड़े हैं कि अगले 15 दिन में उम्मीदवारों की सूची घोषित हो या नहीं। ध्यान रहे चुनाव आयोग ने अभी तक चुनावों की घोषणा नहीं है। अगर पांच राज्यों के पिछले विधानसभा चुनावों के शिड्यूल के हिसाब से देखें तो अक्टूबर के पहले या ज्यादा से ज्यादा दूसरे हफ्ते में चुनाव की घोषणा हो जानी चाहिए। चुनाव आयोग की टीमें राज्यों का दौरा कर रही हैं और चुनाव की तैयारियों की समीक्षा कर रही हैं। सो, पहला यक्ष प्रश्न है कि क्या चुनाव आयोग 14 अक्टूबर तक चलने वाले श्राद्ध पक्ष में चुनाव की घोषणा करेगा या पितृपक्ष समाप्त होने और नवरात्रों के शुरू होने का इंतजार करेगा। दूसरा यक्ष प्रश्न यह है कि पार्टियां क्या करेंगी? भाजपा ने मध्य प्रदेश के 79 उम्मीदवारों के नाम का ऐलान कर चुकी है और छत्तीसगढ़ में भी पहली सूची में 21 नामों की घोषणा हुई है। इन दोनों राज्यों में ज्यादातर उम्मीदवारों के नाम की घोषणा रूकी है। राजस्थान, तेलंगाना और मिजोरम के लिए तो कोई नाम तय नहीं हुआ है। कांग्रेस ने अभी किसी राज्य में उम्मीदवार तय नहीं किए हैं या नाम की घोषणा नहीं की है। उसकी चुनाव समिति की बैठक भी नहीं हुई है। दोनों पार्टियों में धार्मिक मान्यताओं, ज्योतिष आदि को मानने वाले नेता चाहते हैं कि नवरात्रों में ही नाम की घोषणा की जाए। हालांकि कई नेता मानते हैं कि नाम घोषित होने में कोई दिक्कत नहीं है। सिर्फ नामांकन पितृपक्ष में नहीं होना चाहिए। नेताओं की यह दूसरी इच्छा पूरी हो सकती है। बहरहाल, देखना दिलचस्प होगा कि भाजपा और कांग्रेस का आलाकमान क्या करता है और चुनाव आयोग क्या करता है?

जी20 को एक प्रमुख मंच के रूप में स्थापित

लक्ष्मी पुरी

प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में 20 वर्षों में एक बार मिलने वाली जी20 की इंडिया यानी भारत की अध्यक्षता ऐतिहासिक मानी जाएगी। इस अध्यक्षता ने एक ऐसी अमिट छाप छोड़ी है जिसकी अनदेखी करना घरेलू और विदेशी आलोचकों के लिए भी कठिन होगा। भारत की भौतिक, सांस्कृतिक, सभ्यतागत भव्यता और इसकी आर्थिक, वैज्ञानिक व तकनीकी प्रगति एवं गतिशीलता पूरी तरह से परिलक्षित हुई।

भारत की कूटनीतिक व सर्वसम्मति निर्माण कौशल और सबसे अधिक आबादी वाले एवं युवाओं की संख्या के मामले में सबसे समृद्ध तथा सबसे पुराने, सबसे बड़े एवं सबसे अधिक विविधतापूर्ण लोकतांत्रिक देश की हैसियत ने इस जनता के जी20' में इसकी अध्यक्षता को एक विशेष गरिमा प्रदान की। प्रधानमंत्री मोदी की सरकार की असाधारण प्रतिबद्धता ने भारत को विश्वगुरु' और विश्वामित्र' के रूप में वैश्विक मंच पर स्थापित कर दिया। भारत की यह छवि उच्चतम स्तर की भागीदारी और एक सार्थक दिल्ली घोषणा में दिखाई दी। यह परिधि से निकलकर वैश्विक आर्थिक निर्णय-प्रक्रिया के केन्द्र में पहुंचने की भारत की यात्रा का प्रतिनिधित्व करता है। भारत ने यह संकेत दिया कि वह उत्तर-दक्षिण सहयोग को बढ़ावा देने और संवाद में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इसकी सामाजिक न्याय की विशाल परियोजनाएं ग्लोबल साउथ के देशों में प्रतिकृति और विस्तार की दृष्टि से मानक बनती हैं। तीव्र आर्थिक विकास, सतत विकास, जलवायु कार्रवाई और सभी के लिए मानवीय प्रतिक्रिया से लैस वैश्विक सार्वजनिक कल्याण सुनिश्चित करने के विकसित एवं विकासशील देशों के इस सबसे शक्तिशाली समूह को आगे बढ़ाने के जिम्मेदारियों के प्रति प्रधानमंत्री मोदी का समावेशी एवं मानव-केन्द्रित दृष्टिकोण जी20 की भारत की सफल अध्यक्षता की पहचान बन गया। एक अभिजात्य बहुपक्षीय मंच के तौर पर, जी20 का जन्म 2008 के वैश्विक संकट के दौरान हुआ था। इसने वास्तविक सार्वभौमिक बहुपक्षीय मंच से वैश्विक आर्थिक एवं वित्तीय शासन के एजेंडे को अपहृत कर लेने की आलोचना को सहते हुए इस संकट से उबरने में काफी हद तक मदद की। पिछले कुछ वर्षों में, जी20 ने अपनी उपयोगिता साबित की है। लेकिन, अब इसे अब तक के गंभीरतम संकटों से निपटना है। अतिव्यापी और आपस में एक-दूसरे से परस्पर जुड़े हुए ये संकट एक साथ उभरे हैं। इन संकटों में जलवायु परिवर्तन एवं पर्यावरणीय क्षरण से लेकर कोविड-19 से उपजे व्यापक सामाजिक-आर्थिक विनाश, रूस-यूक्रेन युद्ध, बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव, भोजन, उर्वरक, ईंधन एवं वित्तीय संकट और आपूर्ति श्रृंखला की असुरक्षा शामिल है, जो ग्लोबल साउथ के देशों को गंभीर रूप से प्रभावित कर रहे हैं। यह सब एक ऐसे समय में हो रहा है जब संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व व्यापार संगठन जैसे बहुपक्षीय संस्थान संयुक्त राष्ट्र महासचिव गुटिरेज के शब्दों में भारी शिथिलता के शिकार हो गए हैं। 18वें जी20 शिखर सम्मेलन में दक्षिणी दुनिया के देशों से किए गए प्रधानमंत्री श्री मोदी के वादे ङ्क आपकी आवाज भारत की आवाज है, आपकी प्राथमिकताएं भारत की प्राथमिकताएं हैं - को प्रभावशाली और ठोस तरीके से निभाया गया है। भारत ने 54 देशों वाले अफ्रीकी संघ - दूसरे सबसे बड़े संसाधन संपन्न महाद्वीप, जहां 1.466 बिलियन लोग सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को पाने के लिए जूझ रहे हैं - को जी20 में शामिल करके वैश्विक शासन की समावेशिता एवं लोकतंत्रीकरण की राह में एक उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। जी20 की अध्यक्षता के लिए भारत की सभी सात विषयगत प्राथमिकताओं का जहां तक प्रश्न है, इसने वास्तव में ग्लोबल साउथ के देशों के लिए समावेशी, महत्वाकांक्षी, कार्योन्मुख और निर्णायक परिणाम दिए हैं। इन परिणामों में एसडीजी को हासिल करने की दिशा में हुई प्रगति में तेजी लाना तथा जी20 कार्ययोजना एवं उच्चस्तरीय सिद्धांतों को लागू करना; वित्तपोषण के मामले में व्याप्त अंतर को पाटने तथा यूएनएसजी के एसडीजी संबंधी प्रोत्साहन का समर्थन करने हेतु सभी स्रोतों से किफायती, पर्याप्त एवं सुलभ वित्तपोषण जुटाना; जी20 रोडमैप के अनुरूप स्थायी वित्त को बढ़ाना; खाद्य सुरक्षा एवं पोषण से संबंधित दक्कन उच्चस्तरीय सिद्धांतों के अनुरूप वैश्विक खाद्य सुरक्षा को बढ़ाना, खाद्यान्नों एवं उर्वरकों की कीमतों में व्याप्त अस्थिरता से निपटना और आईएफएडी संसाधनों को बढ़ाना शामिल है। एक स्वास्थ्य' के दृष्टिकोण को अपनाते हुए, जी20 ने सहयोग का एक व्यापक पैकेज अपनाया, जिसमें विश्व स्वास्थ्य संगठन के नेतृत्व वाली महामारी से जुड़ी तैयारियों एवं निगरानी प्रणालियों को बढ़ाना और स्वास्थ्य सहयोग को वित्तपोषित करना शामिल है। सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि पेरिस प्रतिबद्धताओं को लागू करने के मजबूत संकल्प के साथ ठोस हरित विकास समझौता थी। प्रधानमंत्री मोदी के लाइफ मिशन को सतत विकास के लिए जीवनशैली से संबंधित जी20 के उच्चस्तरीय सिद्धांतों में रूपांतरित कर दिया गया। इसने हरित जलवायु कोष (ग्रीन क्लाइमेट फंड) की महत्वाकांक्षी दूसरी पुनर्पूर्ति और निजी वित्त और जलवायु अनुकूल प्रौद्योगिकियों के विकास, साझाकरण, तैनाती और वित्तपोषण और बहुवर्षीय तकनीकी सहायता योजना (टीएएपी) कार्यान्वयन पर मजबूत प्रतिबद्धता का आह्वान किया। इसने अपने एनडीसी को लागू करने के लिए 2030 से पहले ग्लोबल साउथ के देशों के लिए 5.9 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की जरूरत ।और अकेले स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकियों के लिए चार ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की जरूरत को रेखांकित किया। इसने विभिन्न पक्षों से 100 बिलियन की पेरिस प्रतिबद्धता को लागू करने और एक महत्वाकांक्षी, पता लगाने योग्य एवं पारदर्शी नए सामूहिक मात्रात्मक लक्ष्य (एनसीक्यूजी) को निर्धारित करने का आह्वान किया। न्यायसंगत ऊर्जा परिवर्तन के संबंध में, ऊर्जा परिवर्तन के लिए महत्वपूर्ण खनिजों पर सहयोग के लिए अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) के उच्चस्तरीय सिद्धांतों द्वारा संचालित ग्रीन हाइड्रोजन इनोवेशन सेंटर शुभारंभ किया गया। जी20 ने वैश्विक जैव ईंधन गठबंधन के शुभारंभ के लिए भी संदर्भ प्रदान किया। प्रौद्योगिकी एवं डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे के संबंध में, इसने जी20 2023 वित्तीय समावेशन कार्य योजना, डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे की प्रणालियों के लिए जी20 फ्रेमवर्क और एक वैश्विक डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे से संबंधित रिपॉजिटरी के निर्माण व रखरखाव की भारत की योजना का समर्थन किया। कम आय वाले देशों में डीपीआई के लिए क्षमता निर्माण, तकनीकी सहायता और वित्त पोषण संबंधी सहायता प्रदान करने के वन फ्यूचर एलायंस (ओएफए) के भारत के प्रस्ताव का स्वागत किया गया। क्रिप्टो परिसंपत्तियों के लिए एक साझा एफएसबी एवं एसएसबी कार्ययोजना तथा एक व्यापक एवं समन्वित नीतियों एवं नियामक ढांचे के लिए एक रोडमैप निर्धारित किया गया।

पोल खोलने से नहीं, झूठ बोलने से बात बनेगी

विपक्षी पार्टियां क्या कर रही है? प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के झूठ की पोल खोलने में लगी हैं। उनको लगता है कि लोगों को बताएंगे कि मोदी ने कितने झूठ बोले हैं तो लोग यकीन करेंगे और उनका साथ छोड़ देंगे। लेकिन ऐसा नहीं होने वाला है। झूठ की पोल खोलने का क्या मतलब है? उससे लोगों पर कुछ भी असर नहीं होगा, बल्कि उससे बड़ा झूठ बोलने पर फायदा होगा। सोचें, क्या देश के करोड़ों करोड़ लोगों को पता नहीं है कि उनसे झूठ बोला गया है? हो सकता है कि भारत के विश्व गुरू होने वाले झूठ के बारे में ज्यादा लोग नहीं जानते हों लेकिन जो बातें उनकी जिंदगी से जुड़ी हैं उनके बारे में तो उनको पता ही होगा। क्या वे नहीं जानते हैं कि उनके बच्चे नौकरी के लिए भटक रहे हैं? क्या उनको पता नहीं है कि उनकी बचत घट रही है और रोजमर्रा की जरूरत के लिए कर्ज लेना पड़ रहा है? महंगाई क्या उनको नहीं चुभ रही है? क्या किसान नहीं जान रहे हैं कि खेती उनके लिए घाटे का सौदा बन गया है? क्या नौजवान बेरोजगारी की मार नहीं महसूस कर रहा है? पांच किलो अनाज के लिए लाइन में खड़े लोगों को अपमान का अहसास नहीं हो रहा होगा? जिनके प्रियजन ऑक्सीजन की कमी से अस्पतालों में मर गए या जमीनें बेच कर जिन लोगों ने काले बाजार से कोरोना के इलाज के इंजेक्शन खरीद थे क्या उनको हकीकत का अहसास नहीं है? मतलब जिसको फर्स्ट हैंड एक्सपीरियंस कहते हैं वह तो देश के करोड़ों लोगों को हो ही रहा है। फिर भी अगर वे उस पर यकीन कर रहे हैं तो इसका मतलब है कि उनकी कंडीशनिंग ऐसी है। वे सपनों में जीना पसंद करते हैं। तभी बॉलीवुड की फिल्में उनको आकर्षित करती हैं। जिस तरह से सिनेमा यकीन दिलाने की कला है। थियेटर में जाने वाले लोग थोड़े समय के लिए अपने तर्क, अपनी समझ और अपनी मान्यताओं को बाहर छोड़ कर जाते हैं, जिसे 'विलफुल सस्पेंसन ऑफ बिलीफ' यानी स्वेच्छा से अपनी समझदारी का परित्याग करना कहते हैं उसी तरह राजनीति में भी होता है। राजनीति भी जनता को यकीन दिलाने की कला है। कोई नेता कैसे अपने झूठ को लोगों के दिमाग में इस तरह बैठा सकता है कि वह उसी पर यकीन करे, उसी को सच माने उससे ही नेता की काबिलियत और उसकी सफलता तय होती है। झूठ की पोल खोल कर अगर लोगों को हकीकत की दुनिया में लाने का प्रयास किया गया तो बड़ी असफलता मिलेगी। भारत की फिल्मों से यह जगजाहिर है। भारत की सचाई दिखाने वाली फिल्में व्यावसायिक रूप से कभी सफल नहीं होती हैं। उसे आलोचकों की तारीफ मिलती है, दर्शकों का प्यार नहीं मिलता है। राजनीति में भी बुद्धिमान लोग विपक्ष के एजेंडे की तारीफ कर सकते हैं लेकिन चुनाव तो जनता के प्यार से जीता जाएगा। वह कहां है विपक्ष के पास?

अज़रबैजान ने मौके का फायदा उठाया...

श्रुति व्यास

कत्लेआम तो टल गया लेकिन उसने बड़े पैमाने पर पलायन का स्वरुप ले लिया। पिछले हफ्ते अज़रबैजान ने अपनी ही नागोर्नो-काराबाख़ पर सैन्य आक्रमण किया जिसमें केवल एक दिन में 200 से अधिक लोग मारे गए। लेकिन अगले दिन ही युद्धविराम कायम हो गया और क्षेत्र में सक्रिय अर्मेनियाई अलगवावादी आत्समर्पण करने और अपने संगठन को भंग करने के लिए राजी हो गए। इसका मतलब हुआ अज़रबैजान की जीत। इस इलाके में तीन साल पहले तैनात की गई रूस की शांतिसेना की मध्यस्थता से हुए इस समझौते का एक अर्थ है नागोर्नो-काराबाख़ का अर्ध-स्वतंत्र राष्ट्र का दर्जा समाप्त हो जाना। अभी तक 13,000 लोग इस इलाके से आर्मेनिया के लिए पलायन कर चुके हैं। रास्ते में एक पेट्रोल स्टेशन पर हुए बम विस्फोट में 200 लोग घायल हो गए। आर्मेनिया की सीमा पर गाड़ियों की रेलमपेल है और देश के प्रधानमंत्री निकोल पशिन्यान ने चेतावनी दी है कि क्षेत्र में नस्लीय सफाई जारी है। वहां के बहुत से लोग अपने जीवन में दूसरी या तीसरी बार शरणार्थी बन गए हैं। नार्गोनो-काराबाख में आर्मेनियाई रहते हैं लेकिन यह औपचारिक रूप से अज़रबैजान का हिस्सा है और यहां पिछले तीन दशकों में खून-खराबे भरे दो बड़े युद्ध हो चुके हैं। सन् 2020 में हुए अंतिम युद्ध में अज़रबैजान ने कई ऐसे इलाकों पर कब्जा कर लिया जो सन् 1990 के दशक से आर्मेनियाई सुरक्षा बलों के नियंत्रण में थे। अज़रबैजान के हालिया हमले को भी 'आतंकी विरोधी कार्यवाही' कहा गया जिसका उद्धेश्य संवैधानिक व्यवस्था दुबारा स्थापित करना था। और अज़रबैजान ने एक दिन में वह हासिल कर लिया जो वह पिछले तीन दशकों में नहीं कर पाया था। लेकिन नार्गोनो-काराबाख पर सैन्य आक्रमण और उसके नतीजे में एक मानवीय त्रासदी उत्पन्न कर अज़रबैजान के राष्ट्रपति इलहम एलियेव ने पश्चिम को नाराज कर लिया है। पिछले सप्ताह जर्मनी

की विदेशमंत्री अन्नालेना बेयरबोक ने बाकू को बलप्रयोग न करने के बार-बार दिए गए आश्वासन को तोड़ने, जिसके नतीजे में पहले से ही बदहाल लोगों को जबरदस्त कष्ट झेलना पड़ रहा है का दोषी ठहराया। फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने कहा कि अज़रबैजानी सरकार 'निरंकुश' है। पश्चिम में यह व्यापक मान्यता है कि शांति कायम रखने की जिम्मेदारी निभा रहे रूसियों ने अज़रबैजान की मदद की क्योंकि हाल के महीनों में आर्मेनिया का झुकाव पश्चिम की ओर बढ़ गया है। जहां तक अज़रबैजान का सवाल है, कहा जाता है कि वह कई सालों से कथित 'कैवियार कूटनीति' का सहारा ले रहा है अर्थात धन और उपहारों के जरिए यूरोप में अपना प्रभाव बढ़ा रहा है। गार्जियन ने एक खबर में खुलासा किया है कि अज़रबैजान ने ब्रिटिश कंपनियों के एक गुप्त नेटवर्क के जरिए यूरोप में अपनी समर्थकों, पैरवी करने वालों और राजनीतिज्ञों को भेंट देने के लिए 2.9 अरब डालर देश से बाहर भेजे। यह पैसा लक्ज़री गुड्स और सेवाएं हासिल करने और अज़रबैजान के प्रभावशाली लोगों के लिए मनी लांडरिंग करने के लिए भी प्रयुक्त हुआ। अज़रबैजान की 'कैवियार कूटनीति' का नतीजा यह हुआ कि यूरोप ने 2020 के नार्गोनो-काराबाख युद्ध में बाकू द्वारा किए गए अत्याचारों को नजरअंदाज कर उससे नजदीकी कायम कर ली। सन् 2022 में रूस के अलावा पेट्रोलियम प्रदाय के नए विकल्प ढूंढ़ रहे यूरोपियन कमीशन के अध्यक्ष उरसुला वोन डेर लेयन बाकू पहुंची और उन्होंने अज़रबैजान को एक 'महत्वपूर्ण' एवं 'विश्वसनीय' ईधन सप्लायर बताते हुए उसकी प्रशंसा की और एक समझौते की घोषणा की जिसके अंतर्गत सन् 2027 तक ईयू द्वारा अज़रबैजान से खरीदी जाने वाली गैस की मात्रा दुगनी की जाएगी। अज़रबैजान हालाँकि नार्गोनो-काराबाख के निवासियों को आश्वस्त कर रहा है कि उनका नुकसान नहीं किया जाएगा लेकिन ये लोग भयभीत हैं। अलगावादियों द्वारा युद्धविराम स्वीकारने और हथियार छोड़ने के लिए राजी होने के बाद से अब तक केवल 70 टन खाद्यान्न की राहत सामग्री की एक खेप को वहां आने की अनुमति दी गई है। आर्मेनियाई जातीय समूह के नेताओं का कहना है कि हजारों लोग छत और भोजन से महरूम हैं और तलघरों, स्कूल के भवनों और खुले में सोने पर मजबूर हैं। जहां तक पश्चिम और अन्य देशों का सवाल है, वे कुछ खास नहीं कर रहे हैं। गार्जियन ने एक खबर में खुलासा किया है कि अज़रबैजान ने ब्रिटिश कंपनियों के एक गुप्त नेटवर्क के जरिए यूरोप में अपनी समर्थकों, पैरवी करने वालों और राजनीतिज्ञों को भेंट देने के लिए 2.9 अरब डालर देश से बाहर भेजे। यह पैसा लक्ज़री गुड्स और सेवाएं हासिल करने और अज़रबैजान के प्रभावशाली लोगों के लिए मनी लांडरिंग करने के लिए भी प्रयुक्त हुआ। अज़रबैजान की 'कैवियार कूटनीति' का नतीजा यह हुआ कि यूरोप ने 2020 के नार्गोनो-काराबाख युद्ध में बाकू द्वारा किए गए अत्याचारों को नजरअंदाज कर उससे नजदीकी कायम कर ली। सन् 2022 में रूस के अलावा पेट्रोलियम प्रदाय के नए विकल्प ढूंढ़ रहे यूरोपियन कमीशन के अध्यक्ष उरसुला वोन डेर लेयन बाकू पहुंची और उन्होंने अज़रबैजान को एक 'महत्वपूर्ण' एवं 'विश्वसनीय' ईधन सप्लायर बताते हुए उसकी प्रशंसा की और एक समझौते की घोषणा की जिसके अंतर्गत सन् 2027 तक ईयू द्वारा अज़रबैजान से खरीदी जाने वाली गैस की मात्रा दुगनी की जाएगी। अज़रबैजान द्वारा नार्गोनो-काराबाख में आतंक और बल का सहारा लेने और यूक्रेन पर रूसी हमले के जारी रहने से ईयू और पश्चिम दुविधा में है। सर्दियां आ रही हैं और गैस की मांग बहुत बढ़ेगी और साथ ही 'कैवियार' की ज़रुरत भी। एक ओर हैं उनके अपने और अपनी जनता के हित और दूसरी ओर है इंसाफ का साथ देने का दबाव। एक न्यायपूर्ण दुनिया में ङ्क भले ही हम उसे काल्पनिक मानें ङ्क अज़रबैजान पर उसके द्वारा किए जा रहे अत्याचारों के चलते तत्काल प्रतिबंध लगा दिए गए होते।'आशावादी' आर्मेनियाईयों की यही मांग है कि अज़रबैजान पर सख्त प्रतिबंध लगाए जाएं जो अपनी गैस और तेल की कमाई का उपयोग अपनी सैन्य शक्ति बढ़ाने के लिए कर रहा है। लेकिन अब तक पश्चिम अज़रबैजान पर प्रतिबंध लगाने की संभावनाओं पर 'विचार' ही कर रहा है। और पश्चिम के नेताओं के विचारों में डूबे होने के कारण साधी गई चुप्पी का प्रभाव दुनिया में हो रही घटनाओं पर साफ नजर आ रहा है।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/धर्म समाज/देश
रायपुर, बुधवार 04 अक्टूबर 2023
www.dvpnews.in
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

सिंगापुर में दसलक्षण पर्व धूमधाम से हुआ सम्पन्न

सिंगापुर (विश्व परिवार)। 10 लक्षण पर्व केवल भारत ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व में भक्ति आराधना के साथ मनाया गया वही गुणायतन प्रणेता गुरुदेव मुनिश्री 108 प्रमाण सागर जी महराज की प्रेरणा एवं आज्ञा स्वरूप इस वर्ष सिंगापुर श्रावकों को द्वि प्रतिमाधारी ब्र सुनीता दीदी (बाँसा) का मंगल सानिध्य प्राप्त हुआ। जानकारी देते हुए (सिंगापुर दिगंबर जैन समाज के पूर्व अध्यक्ष श्री आशीष जैन ने बताया की सिंगापुर समाज के मुख्य संयोजक द्वि प्रतिमाधारी श्री विवेक जैन, द्वि प्रतिमाधारी श्री प्रमोद कुमार जैन जी (लखनऊ) एवं सप्त प्रतिमाधारी श्रीमती नीलम कोठारी (बारामती) के कुशल सानिध्य में भक्ति उमंग एवं उत्साह जमकर रहा। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी श्रावकों ने बढ़ चढ़ कर पूरे दस दिन उपवास कर अपने कर्मों की निर्जरा की प्रतिदिन संध्याकालीन ब्र सुनीता दीदी के प्रवचन पश्चात श्री चन्द्र प्रभ निल्यम बाल भारती पाठशाला के नन्हे श्रावकों द्वारा विभिन्न रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए गये। इसके साथ ही इस वर्ष शाश्वत सिद्ध क्षेत्र श्री सम्मेद शिखर जी की झांकी प्रस्तुत की गयी। जो आकर्षण का केंद्र रहा। इसके साथ ही दिनांक 29 सितंबर को पूरी समाज द्वारा व्रतियों एवं तपस्वियो को पारणा कराया गया। एवं दिनांक 30 सितंबर को क्षमा वाणी पर्व मनाया गया। और सभी ने प्रभु के समक्ष खड़े होकर आलोचना पाठ करते हुए इस प्रभु से क्षमा याचना करने के पश्चात सभी ने परस्पर गले मिलकर एक दूसरे से क्षमा याचना की। इसके साथ ही अनुकरणीय सेवा देने वाले तपस्वियों का सम्मान किया गया। -**अभिषेक जैन लुहाड़िया**

ह्यूंडई ने सभी मॉडल में किया छह एयरबैग का एलान

रायपुर (विश्व परिवार)। भारत की पहली स्मार्ट मोबिलिटी सॉल्यूशन प्रोवाइडर और अपनी शुरुआत से ही यात्री कारों की सबसे बड़ी निर्यातक ह्यूंडई मोटर इंडिया लिमिटेड (एचएमआईएल) ने भारतीय ग्राहकों को ज्यादा सुरक्षित मोबिलिटी सॉल्यूशन प्रदान करने की दिशा में अपनी प्रतिबद्धता को मजूबती देते हुए आज तीन अहम घोषणाएं कीं। जिनमें पहली ह्यूंडई के सभी मॉडल और सभी वैरिएंट में स्टैंडर्ड फीचर के रूप में 6 एयरबैग मिलेंगे, दूसरी सुरक्षा के मामले में ह्यूंडई के प्रयासों के प्रमाण के रूप में ह्यूंडई वरना को ग्लोबल एनसीएपी की तरफ से एडल्ट एंड चाइल्ड ऑक्यूपेंट प्रोटेक्शन के मामले में 5 स्टार रेटिंग मिली है एवं तीसरा भारत के लिए एक सुरक्षित रोडमैप की दिशा में काम करते हुए एचएमआईएल ने 3 मॉडल्स के साथ बीएनसीएपी में स्वैच्छिक रूप से हिस्सा लेने का एलान किया है, आगे अन्य मॉडल को भी इसमें लाया जाएगा। एमडी एवं सीईओ उनसू किम के अनुसार-ह्यूंडई में सभी की सुरक्षा हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है और स्टैंडर्ड व्हीकल सेफ्टी फीचर्स के मामले में हम हमेशा नए बेंचमार्क बनाते रहे हैं। आज हमें सभी मॉडल एवं सभी वैरिएंट में 6 एयरबैग को स्टैंडर्ड फीचर के रूप में पेश करने की घोषणा करते हुए खुशी हो रही है।

फिल्म कलाकार रघुवीर यादव ने किया आंजनेय विश्वविद्यालय के फिल्म मेकिंग कोर्स का शुभारंभ

रायपुर (विश्व परिवार)। आंजनेय विश्वविद्यालय में मंगलवार को फिल्म मेकिंग कोर्स का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि हिंदी फिल्म जगत के कलाकार श्री रघुवीर यादव एवं फिल्म निर्देशक हरीष व्यास ने विश्वविद्यालय के फिल्म मेकिंग स्टूडियो का उद्घाटन किया। समारोह में छत्तीसगढ़ के सुप्रसिद्ध निर्देशक- निर्माता श्री योगेश अग्रवाल भी उपस्थित रहे, जिन्होंने छत्तीसगढ़ी फिल्म निर्माण के क्षेत्र अपने विचार साझा किए। कुलाधिपति श्री अभिषेक अग्रवाल ने विश्व विद्यालय में फिल्म मेकिंग कोर्स में नवप्रवेशित विद्यार्थियों एवं विभाग के सदस्यों को शुभकामनाएं दी। उन्होंने भविष्य में फिल्म मेकिंग के कोर्स हेतु आवश्यक विभिन्न कार्यक्रम एवं कार्यशालाएं आयोजित की जाने की बात रखी। विश्वविद्यालय के फिल्म निर्माण विभाग द्वारा फिल्म निर्माण से संबंधित विभिन्न कोर्सो का संचालन किया जा रहा है, जिनमे फिल्म से संबंधित डिग्री (बी.ए. फिल्ममेकिंग), डिप्लोमा एवम सर्टिफिकेट कोर्स कराए जा रहे हैं। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ टी रामा राव एवं डायरेक्टर जनरल डॉ बी सी जैन, डायरेक्टर ऑफ फेड एकेडमी श्री समर्थ लहरी, डीन ऑफ स्टूडेंट वेलफेयर डॉ प्रांजलि गनी, फिल्म मेकिंग विभागाध्यक्ष श्री अंकित शुक्ला, प्राध्यापक नम्रता चंद्राकर, स्कूल ऑफ मास मीडिया के विभागाध्यक्ष राहुल तिवारी, प्राध्यापक विनोद सावंत, विभिन्न विभागों के विद्यार्थी एवं फिल्म मेकिंग में रुचि रखने वाले व्यक्ति मौजूद रहे।

आत्मा रूपी जल को शुद्ध करने में धर्मरूपी फिटकरी ही समर्थ है : आचार्य श्री विमर्शसागर जी मुनिराज

जतारा (विश्व परिवार)। दशलक्षण धर्म की यात्रा को हमने सानन्द पूर्ण किया। वास्तव में दशलक्षण %धर्म के यह दश दिन तो प्रशिक्षण के रूप में हमारे बीच आते है। जिसप्रकार क्रिकेट का खिलाड़ी क्रिकेट का प्रशिक्षण लेने के बाद क्रिकेट पिच पर उतरता है तो बैटिंग करते हुए आती हुई बॉल को देखकर-समझकर अपनी प्रतिक्रिया करता है और जीतकर आता है, ठीक वैसे ही दशलक्षण धर्म का प्रशिक्षण प्राप्त करके हम मुनिधर्म अथवा श्रावक धर्म की पिच पर उतरते हैं, कर्म बॉल फेंकता हैं और हम कर्मरूपी बॉल की चाल-ढाल देखकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं कभी अपने विवेक से बैटिंग करते हुए चौका, छक्का तो कभी सामान्य रन बनाते हैं और कभी- कभी मात्र पुस करके छोड़ देते हैं, ये सब अपने विवेक की बात है कर्म कहता है - मैं तुम्हें आउट करके रहूँगा, तो साधक जिसने दशलक्षण धर्म में प्रशिक्षण प्राप्त किया है, वह कहता है- मैंने भी दश धर्म रूप भावों का प्रशिक्षण प्राप्त किया है, मैं भी देखता हूँ कि तुम कैसे मुझे आउट करते हो। और इन दश लक्षण रूप धर्म-भावों में रचा-पचा साधक कभी-भी कर्मों की मार से कभी हारता नहीं है, पराजित नहीं होता, हमेशा प्रगति उत्थान करता हुआ विजेता होता है।

बन्धुओ ! नमक, शक्कर, फिटकरी का चूर्ण देखने में एक जैसा होता है, किन्तु गंदले पानी को शुद्ध करने के लिए फिटकरी ही कार्यकारी है, नमक-शक्कर से कभी गंदा पानी शुद्ध नहीं होता। नमक शक्कर से पानी मीठा-खारा हो सकता है लेकिन पानी शुरू नहीं हो सकता ठीक वैसे ही धर्म हमारे जीवन में फिटकरी की तरह होता है जो हमारे आत्मा रूपी जल को शुद्ध करने के लिए एकमात्र साधन है। पुण्य और पाप मिठास और खारापन की तरह जीवन में अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता पैदा कर सकते है किन्तु आत्मारूपी जल की शुद्धि एकमात्र धर्मरूपी फिटकरी से ही हो सकती है। आपको अपने घर का पानी शुद्ध करना है तो आप किसी से फिटकरी माँगकर भी ला सकते हैं किन्तु आत्मा को शुद्ध करने के लिए आपको स्वयं ही धर्मरूपी फिटकरी पैदा करनी होगी, दूसरे की फिटकरी अर्थात् दूसरों के धर्म करने से कभी अपने जीवन में धर्म की अनुभूति नहीं हो सकती। इसीलिए मैं कहता हूँ 1 धर्म हमेशा व्यक्तिगत होता है, भले ही हम भगवान की पूजा समूह में करें, किन्तु सबका धर्म अपना-अपना हो रहा है। -**अनुज जैन**

सुख रत्नत्रय रूपी, धर्म, संयम, तप और त्याग में होता है : आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज

मन वचन काय कषाय के कारण कर्मों का आश्रव होता है : आचार्य श्री

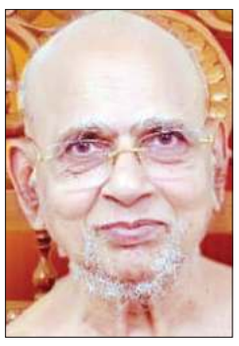

उदयपुर (विश्व परिवार)। संसारी प्राणी दुख से भयभीत है सभी को सुख चाहिए इस कारण सुख की खोज कर रहे हैं सुख आत्मा में है। सुख घर, व्यापार, पुत्र, परिवार में नहीं है, सुख रत्न त्रय रूपी, धर्म, संयम, तप त्याग में होता है। विषय कषाय के कारण कर्मों का आश्रव, बंध संवर हो रहा है इसे तप,त्याग, संयम रत्नत्रय धर्म से कर्मों की निर्जरा कर आप सुखी हो सकते हैं।

यह प्रवचन 1008 श्री चंद्रप्रभ दिगंबर जैन मंदिर आयड उदयपुर की महिती धर्म सभा में आचार्य शिरोमणि श्री वर्धमान सागर जी महाराज ने प्रकट किया। आचार्य श्री ने आगे बताया कि मन वचन काय कषाय के कारण कर्मों का आश्रव होता है। संसारी प्राणी दूसरे के सुख से दुखी है ईर्षा, जलन सोच गलत है दिशा बदलने से दशा सुधर जाती है भाव सुधारने से भव सुधरता है। संतोष के कारण सुख मिलता है कर्म हर समय उदय में आते हैं अच्छे सब धर्म कार्यों से पाप कर्म पुण्य में बदल जाते हैं। तीर्थंकर परमेष्ठी ने भी अनेक भवों में संसार परिभ्रमण किया है। इसलिए कषाय से बचने का प्रयास करना चाहिए।

आचार्य श्री के प्रवचन के पूर्व मुनि श्री प्रभव सागर जी ने बताया कि सुखी रहने के लिए कम खाना,गम खाना और नम जाना। बड़े बुजर्गो को सम्मान देने से आपकी संतान आपको सम्मान देगी इसलिए संस्कार अच्छे होना चाहिए। ओम, पवन, पारस, विजय ने बताया कि धर्म सभा में मंगलाचरण के पश्चात आचार्य श्री शांति सागर जी के चित्र का अनावरण एवम् दीप प्रवज्जलन अतिथियों एवम् पदाधिकारियों ने किया। दशा नागदा समाज के सेठ शांतिलाल ने बताया कि आज दोपहर को श्री संभवनाथ,श्रीआजितनाथ,श्री शीतल नाथ एवम् श्री पार्श्व नाथ भगवान सहित मूल नायक श्री पद्म प्रभ भगवान का चौबीसी विधान एवम् जिन सहस्त्र नाम की आराधना पुण्यर्जाक परिवार द्वारा की गई शांतिलाल वेलावत सुरेश पद्मावत ने बताया कि दोपहर को आचार्य श्री वर्धमान सागर जी का आयड से बीसा हूमड भवन के लिए श्री जी की पालकी सहित मंगल विहार हुआ। 4 अक्टूबर से आगामी कार्यक्रम बीसा हूमड भवन तेलीवाड़ा में होंगे।

-**राजेश पंचोलिया**

आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज ने कहा

स्वच्छ दृष्टि से निहारो, सृष्टि सुन्दर दिखेगी

बड़ौत (विश्व परिवार)। दिगम्बर जैनाचार्य श्री विशुद्धसागर जी गुरुदेव ने अजितनाथ सभागार, मंडी घनश्याम गंज मे श्री अजितनाथ दिगंबर जैन मन्दिर कमेटी द्वारा आयोजित धर्मसभा में सम्बोधन करते हुए कहा कि ढंग का जीवन जियो, ढोंग मत करो। सहज, सरल जीवन ही श्रेष्ठ जीवन है। दिखाने का जीवन व्यक्ति का दिवालिया निकाल देता है।

असहज, बनावटीपना अशांति को जन्म देता है। सहजता पूर्ण जीवन सुखद आनन्दित होता है। वर्तमान में जागृतिपूर्ण जीवन ही भविष्य में श्रेष्ठ हो सकता है। प्रभु दर्शन, गुरु दर्शन से परिणाम विशुद्ध होते हैं। यह एक रासायनिक क्रिया है। भव्य-जीव जब भक्ति से भरकर भक्ति करता है, तो गुरू प्रसन्नता पूर्वक शुभाशीष देते हैं। समझो, भक्ति की शक्ति को समझो। भक्ति परम्परा से मुक्ति का साधन है। भक्ति पूर्व-संचित कर्मों का क्षय करने वाली है। भक्ति स्वर्गादिक की सम्पत्ति को प्रदान करने वाला है। क्रिया की प्रक्रिया को समझो। जिसे हम शब्दों में कह नहीं पा रहे, उसे अनुभूति से समझो। दृष्ट को भी समझो, अदृष्ट को भी समझो। जो अदृष्ट को समझ लेता है, वह संतापित नहीं होता है। जो अदृष्ट को जान लेगा, वह कष्ट के आने पर भी दु:खी नहीं होगा। कार्य के कारण पर भी दृष्टि ले जाओ। कारण के बिना कार्य नहीं होता है। शत्रु में भी शत्रु मत देखो, शत्रु में भी भविष्य का भगवान् देखो। बीज में भी वृक्षत्व को निहारो। बूँद में सागर निहारो। आत्मा में परमात्मा को निहारो। दृष्टि को विशाल करो। दृष्टि विशाल होगी, तो सृष्टि भी स्वच्छ, निर्मल और पवित्र दिखाई देगी। भोगों का आनन्द भिन्न है, संगीत का आनन्द भिन्न है, भ्रमण का आनन्द भिन्न है, परन्तु शान्त-चित्त से बैठकर आत्मानुभूति का आनन्द भिन्न है। -**वरदान जैन**

जब रिश्ते टूटते हैं तो आस्था भी टूट जाती है : प्रवीण ऋषि जी

रिश्ता हो तो इंद्रभूति गौतम और भगवान महावीर के जैसा

रायपुर (विश्व परिवार)। उपाध्याय प्रवर प्रवीण ऋषि ने मंगलवार को धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि प्रभु महावीर ने जीवन में समाधान का स्रोत और समस्या का स्वरुप खोजने के लिए एक महत्वपूर्ण विज्ञान दिया है, जिसे लेश्या कहते हैं। अब तक नीच लेश्या (कृष्ण, नील और कपोत) लेश्या का वर्णन हुआ है। अब उच्च लेश्या (तेजो, पद्म और शुक्ल) लेश्या का वर्णन चल रहा है। उपाध्याय प्रवर ने कहा कि आज के समय में प्रेम क्यों नहीं टिक रहा है? प्रेम होता है, लेकिन बरक़रार क्यों नहीं रहता? लेश्या विज्ञान कहता है कि जिसकी तेजो लेश्या रहती है, उसका प्रेम अटूट रहता है। और जिसकी तेजो लेश्या नहीं रहती है, वो प्यार तो करता है, लेकिन उसका प्यार टिकता नहीं है। उक्ताशय की जानकारी रायपुर श्रमण संघ के अध्यक्ष ललित पटवा ने दी।

लालगंगा पटवा भवन में निरंतर चल रही प्रवचन माला में उपाध्याय प्रवर शुभ लेश्या का वर्णन कर रहे थे। उन्होंने पूछा कि प्यार करना महत्वपूर्ण है कि प्यार का टिकना? जब प्यार नहीं टिकता है तो वेदना होती है। जब प्यार नहीं होता है तो वेदना होती है, लेकिन जब प्यार टूटता है तो भयंकर वेदना होती है। रिश्ता टूटने का दर्द बहुत भयंकर होता है। रिश्ता न हो तो आदमी जी लेता है, लेकिन अगर कोई रिश्ता टूट जाए तो वह हताश हो जाता है। उन्होंने कहा कि बिना गूढ़ता के प्रेम फलित नहीं होता है। कोई भी बीज तब फलता है जब वह मजबूती से जमता है। तूफ़ान को वही पेड़ झेल सकता है जिसकी जड़ मजबूत रहती है। रिश्ते तोड़ना कृष्ण, नील और कपोत लेश्या का चरित्र है। वो रिश्त धर्म के साथ, प्रभु के साथ या किसी व्यक्ति के साथ का हो सकता है। इनमे कोई प्रतिबद्धता नहीं रहती है।

उपाध्याय प्रवर ने कहा कि तेजो लेश्या में रिश्ता टूटता नहीं है, और नील-कृष्ण-कपोत लेश्या में रिश्ता टिकता नहीं है। रिश्ता बनेगा लेकिन टिकेगा नहीं। वहीं तेजो-पद्म-शुक्ल लेश्या में रिश्ता जन्मजन्मांतर का रहता है, मौत के बाद भी नहीं टूटता। जैसे इंद्रभूति गौतम और भगवान महावीर का रिश्ता। लेकिन आज के समय में छोटी से बात को लेकर एक दूसरे से प्यार करने वाले खार खाने लग जाते हैं। यह पीड़ादायी है, आस्था को तोड़ देता है। कृष्ण लेश्या का चरित्र है कि अगर सामने वाला मेरी बात नहीं मानता है तो मैं उससे रिश्ता तोड़ देता हूं। लेकिन तेजो लेश्या में सामने वाला मेरी बात माने या न माने, मैं उसके साथ का अपना रिश्ता कभी नहीं तोड़ूंगा। पांडव क्यों साथ में थे? उनकी तेजो लेश्या थी। अर्जुन, भीम धर्मराज की कई बातों से सहमत नहीं होते थे, तो क्या उन्होंने उनका साथ छोड़ दिया? अर्जुन और बाकी भाई तो कई बार सहमत हो जाते थे, लेकिन भीम तो हमेशा असहमत रहता थे। तो क्या उसने धर्मराज के साथ अपने रिश्ता तोड़ा? नहीं, क्यों कि उनकी तेजो लेश्या थी, वे भले ही असहमत थे, लेकिन उन्होंने कभी साथ नहीं छोड़ा। आप अपने रिश्तेदारों से, अपने जीवनसाथी से सहमत हो या असहमत, साथ कभी न छोड़ें। अपने अंदर तेजो लेश्य का जीवन शुरू करें। कई लोग कहते हैं कि परमात्मा ही सत्य है, बाकी सब झूठा है, संसार सत्य नहीं है, मिथ्या है। लेकिन परमात्मा महावीर ने कहा कि संसार शाश्वत है, तुम्हारे अंदर का कषाय झूठा है। दुनिया झूठी नहीं है, तुम्हारा दुनिया के प्रति नज़रिया झूठा है। तुम रहो या न रहो, दुनिया तो रहेगी।

रायपुर श्रमण संघ के अध्यक्ष ललित पटवा ने बताया कि रायपुर में 21 दिनों तक तीर्थंकर प्रभु महावीर के अंतिम वचनों की अमृत गंगा बहने वाली है। उपाध्याय प्रवर प्रवीण ऋषि की मुखारविंद से श्रावक-श्राविकाएं 24 अक्टूबर से 14 नवंबर तक प्रभु महावीर के वचनों का श्रवण करेंगे। उन्होंने कहा कि प्रभु महावीर ने अपने अंतिम क्षणों में एक धर्मसभा आयोजित की, जहां 48 घंटों तक परमात्मा के वचन गूँजते रहे। रायपुर में 21 दिनों तक उत्तराध्ययन श्रुतदेव आराधना में भगवान महावीर के अंतिम वचनों का पाठ होगा। उन्होंने बताया कि यह आराधना प्रात: 7.30 से 9.30 बजे तक चलेगी। उन्होंने सकल जैन समाज को इस आराधना में शामिल होने का आग्रह किया है। -**ललित पटवा**

संस्कार को संस्कृति में बदल देना ही दीक्षा है ये स्मृति में बने रहना चाहिए : मुनि पुंगव श्री सुधासागरजी महाराज

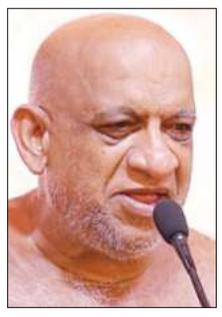

आगरा (विश्व परिवार)। आज पता चला कि वार वार मन्दिर आने को क्या कहा जाता है आज पता चला कि मुनि राज वार वार दीक्षा दिवस को यादकर क्यों मनाने का भाव करते हैजो दीक्षा थी वह संस्कार था संस्कार को संस्कृति में बदलने का नाम ही दीक्षा दिवस है दीक्षा संस्कार है दीक्षा दिवस संस्कृति का रूप ले लेती है दीक्षा के समय संस्कार होते हैं साधु दीक्षा के संस्कार लेकर मंच से ऊपर ता है तव कुछ अलग था और दीक्षा लेकर उतारता है तो संस्कृति वनाने के लिए हमारा हर कदम होता है जब भी तुम्हारे लिए कुछ भी अच्छा मिले तो उसे संस्कृति वना देना उक्त आश्य केउद्गार हरि पर्वत आगरा में विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि पुगंव श्री सुधासागरजी महाराज ने व्यक्त किए इस दौरान कमेटी की ओर से नवीन तीर्थ के लिए कमेटी अध्यक्ष प्रदीप जैन पीएनसी महामंत्री नीरज जैन जिनवाणी कोषाध्यक्ष निर्मल मोठया सहित कमेटी ने श्री फल भेंट किए।

उन्होंने कहा कि संस्कार एक बार मिलतीं है और संस्कृति जन्म जन्म के लिए वनती चलीं जाती है संस्कार को संस्कृति वनाने के लिए ही तो भारतीय मनीषी अपने जीवन को लगा देते हैं कल्याण संस्कार से नहीं होगा कल्याण संस्कृति कृति से होगा जो संस्कार तुम्हारे लिए मिला है उसे संस्कृति वनाकर पालन करने से जीवन धन्य हो जायेगा। दीक्षा देते समय एक बार पिच्छिका देकर संस्कार गुरु ने दिया आपको संस्कृति वनना है बार-बार स्मृति वनाने के लिए मन्दिर भेजा था। किसी भी कार्य में आपको आनंद आया है कि नहीं वह निर्णय करेगा कल का दिन आपका कैसा रहा निर्णय आपको लेना है जव आपको अच्छा लगने लगें तव समझ लेना की आप सफल रहे आपने जो चाहा वह मिल गया।

मध्यप्रदेश महासभा संयोजक विजय धुर्रा ने बताया कि दीक्षा दिवस के दिन शाम को एक इतिहास आगरा में लिखा गया और इस दौरान मुनिश्री ने कहा कि आगरा तीर्थ के नाम से प्रसिद्ध होगा ये भक्तो के उद्धार के लिए बनाया जा रहा है। -**विजय धुर्रा**

महावीर जी की 37वीं पदयात्रा के बैनर पोस्टर का जयकारों हुआ विमोचन

10 अक्टूबर को खानियां स्थित संघीजी की नसियां जयपुर से रवाना होगी पदयात्रा

जयपुर (विश्व परिवार)। श्री दिगम्बर जैन पदयात्रा संघ, जयपुर द्वारा आयोजित होने वाली जयपुर से श्री महावीर जी की 37 वीं पदयात्रा के बहुरंगीय बैनर एवं पोस्टर का जयकारों के बीच विमोचन किया गया।

संघ के संरक्षक सुभाष चन्द जैन एवं पदयात्रा के संयोजक सुशील जैन के नेतृत्व में श्री दिगंबर जैन पदयात्रा संघ जयपुर के तत्वावधान में जयपुर से श्री महावीर जी की 10 अक्टूबर को जाने वाली पदयात्रा के बहुरंगीय पोस्टर के विमोचन के मौके पर पूर्व संयोजक सूर्य प्रकाश छाबड़ा, विनोद जैन कोटखावदा, राजेन्द्र जैन मोजमाबाद, राज कुमार बड़जात्या, जिनेन्द्र जैन सहित समाजश्रेष्ठी सुधान्शु जैन, कमल बाबू जैन, धर्म चन्द पहाड़ियां, यशकमल अजमेरा, पार्षद पारस पाटनी, राजा बाबू गोधा सहित बड़ी संख्या में गणमान्य श्रेष्ठीजन शामिल हुए। पदयात्रा संघ के संरक्षक सुभाष चन्द जैन ने बताया कि पदयात्रा मंगलवार 10 अक्टूबर को आगरा रोड पर खानिया स्थित संगही जी की नसिया से दोपहर 3.00 बजे प्रस्थान करेगी। पदयात्रा मार्ग में धार्मिक आयोजन किये जायेंगे।पदयात्रा में महिलाएं भी शामिल होगी। प्रचार संयोजक विनोद जैन %कोटखावदा% ने बताया कि पदयात्रा 11 अक्टूबर को मोहनपुरा, 12 को दौसा, 13को सिकन्दरा, 14को गुढ़ाचंद्रजी, नादौती होते हुए रविवार, 15 अक्टूबर को श्री महावीर जी पहुंचेगी। जहां विशाल जूलूस के साथ पदयात्री भगवान महावीर के सामूहिक दर्शन करेंगे। प्रात: 11.15 बजे शान्ति विधान पूजा होगी। दोपहर 2.00 बजे पदयात्री सम्मान समारोह होगा। सायंकाल महाआरती एवं भक्ति संध्या का आयोजन किया जाएगा। -**विनोद जैन कोटखावदा**

4 अक्टूबर 2023 : एलाचार्य पद प्रतिष्ठापन दिवस पर विशेष : आचार्य श्री अतिवीर जी मुनिराज

दिल्ली (विश्व परिवार)। प्रशममूर्ति आचार्य श्री 108 शान्तिसागर जी महाराज (छाणी) की परम्परा में पंचम पट्टाचार्य परम पूज्य गुरुवर आचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज ने राजधानी दिल्ली में जन्में एक नवयुवक ब्र. नीरज जैन को महावीर जयंती 2006 के अवसर पर त्रिलोक तीर्थ धाम, बड़ागांव (उ प्र) में मुनि दीक्षा प्रदान कर मुनि श्री अतिवीर जी महाराज के रूप में एक दिव्य संत समाज को प्रदान किया। अपने प्रियाग्र शिष्य की विशेष योग्यता, दिव्यता, संगठन व संचालन कुशलता एवं गंभीरता को देखते हुए कृष्णा नगर (दिल्ली) में अपने चातुर्मास कलश स्थापना 2009 के अवसर पर एलाचार्य पद पर प्रतिष्ठित करने की घोषणा कर भक्तों को प्रफुल्लित कर दिया। पूज्य आचार्य श्री ने कहा कि मुनि श्री द्वारा अल्पसमय में ही अभूतपूर्व ज्ञान-गंगा का प्रवाह निरंतर गतिमान है तथा विभिन्न नगरों में व्यापक धर्म प्रभावना संपन्न हो रही है।

आचार्य श्री 108 सुमति सागर जी महाराज के जन्म-दिवस एवं शरद-पूर्णिमा के पावन प्रसंग पर दिनांक 04 अक्टूबर 2009 को सी.बी.डी. ग्राउंड, ऋषभ विहार, दिल्ली में दिगंबर-श्वेताम्बर संतों की उपस्थिति में तथा लगभग 15 हजार धर्मानुरागी बंधुओं के समक्ष विधि-विधान पूर्वक पूज्य आचार्य श्री ने अपने शिक्षा-दीक्षा वरदहस्त कर-कमलों द्वारा मुनि श्री 108 अतिवीर जी महाराज को एलाचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया। आचार्य श्री द्वारा दीक्षित समस्त शिष्य समुदाय में आप एकमात्र ऐसे शिष्य हैं जिन्हें उन्होंने स्वयं कोई पद प्रदान किया है। गहन चिंतक, विचारक, प्रवचनकार व कुशल मार्गदर्शक के रूप में आपने अल्प-समय में ही जैन समाज को नयी दिशा प्रदान करने की सार्थक पहल की।

आप हर उस कार्य को सहजता से कर लेते हैं जिसके लिए जैन समाज एक सही नेतृत्व का इंतज़ार करता रह जाता है। युवा पीढ़ी को कुशलतापूर्वक सही दिशा में अग्रसर करने में आपके हर कदम पर हज़ारों युवा चलने को तैयार हो जाते हैं। आने वाला कल जिनके हाथों में है, उनको सही दिशा में आगे बढ़ाने की कला के भण्डार हैं। स्पष्ट सोच, स्वच्छ कार्यप्रणाली, निश्चित दिशा, हर विचार को यथार्थ में सहजता से अग्रसित कर देती है। आपके द्वारा विभिन्न प्रसंगों पर किये गए उत्कृष्ट कार्य श्रमण व श्रावक के लिए प्रेरक उदाहरण हैं। आपकी इन्हीं विलक्षण प्रतिभा व विशेषताओं को देखते हुए आपके गुरुभ्राता सल्लेखनारत आचार्य श्री 108 मेरुभूषण जी महाराज ने आपको आगरा (उ.प्र.) में आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया। परम पूज्य आचार्य श्री 108 अतिवीर जी मुनिराज के श्रीचरणों में एलाचार्य पद प्रतिष्ठापन दिवस के पुनीत अवसर पर शत-शत नमन। -**समीर जैन**

48 दिवसीय भक्तामर पाठ राष्ट्रीय दिवस 2 अक्टूबर को महार्चना के साथ संपन्न

अहिंसा दिवस पर विश्व शांति की मंगल भावना के साथ समापन

जयपुर (विश्व परिवार)। दिगंबर जैन मंदिर गायत्री नगर महारानी फ़ार्म, जयपुर में राष्ट्रीय दिवस 15 अगस्त से चल रहे 48 दिवसीय भक्तामर पाठ का राष्ट्रीय अहिंसा दिवस 2 अक्टूबर को प्रात: 9:30 बजे से महार्चना, भक्तामर विधान पूजायें पंडित अमित शास्त्री जैन संस्कृत कॉलेज के निर्देशन में भक्ति भाव के साथ संपन्न हुआ।

कार्यक्रम संयोजक अनीता बडजात्या, ज्योति जैन डॉ अनीता वैद, विमला जैन ने विधान मंडल पर मंगल कलश की स्थापना की और मंडल पर दीप प्रज्जवलन अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन ने किया। कार्यक्रम संयोजक अनीता बडजात्या ने अवगत कराया की 48 दिवसीय भक्तामर पाठ का छठा वर्ष है इस वर्ष राष्ट्रीय दिवस 15 अगस्त को शुभारंभ किया जिसका समापन 2 अक्टूबर अहिंसा दिवस पर विश्व शांति की भावना के साथ समापन हुआ। इस अवसर पर मंदिर प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष कैलाश छाबड़ा, उपाध्यक्ष अरुण शाह ने दीप अराधना की। अरुण शाह ने उक्त आयोजन की संयोजिकाओं को स्वागत करते हुए धर्म प्रवाहना की सराहना की।

48 दिवसीय भक्तामर पाठ के पुण्यार्जक परिवार नीलम ठोलिया, बसंत बाकलीवाल संतोष जी बास्खो वाले, सारसमल जी झांझरी, लता सोगानी, सुनील सोगानी, विमला पापड़ीवाल के साथ सैकड़ो भक्त गणों ने भक्तामर विधान पूजा की एवं दीप अर्चना की।

इस अवसर पर वरिष्ठ एडवोकेट विमल जी बाकलीवाल, कमल जी मालपुरा वाले, सुरेश जी रघुविहार, पृथ्वीराज जी सोगानी, माणकचंद जी शाह, पारस जैन गायत्री नगर, रिखब पांडया, भूपेंद्र लुहाडिया, पुष्पेंद्र जैन पृथ्वीराज धूपचंद जी शाह, अशोक जी बिलाला, एम.एल. जैन, राकेश जी छाबड़ा, महावीर सोनी, दौलतजी छाबडा, निर्मल जी सेठी आदि श्रेष्ठिगणों के साथ पुरुष -महिला छात्र-छात्राएं भी उपस्थित थे। उदयभान जैन ने सभी प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने वालों को धन्यवाद, साधुवाद व आभार व्यक्त किया।

-**अनिता बडजात्या, उदयभान जैन**

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर, बुधवार 04 अक्टूबर 2023

संक्षिप्त समाचार

पुलिस को मिली सफलता तेंदुआ खाल के साथ एक आरोपी गिरफ्तार

गरियाबंद(विश्व परिवार)। जिले में क्षेत्र में हो रहे अवैध रूप से गांजा,हीरा, शराब, वन्य प्राणियों के अवैध तस्करी को रोकने के लिए जिला गरियाबंद के उमनि/ वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अमित तुकाराम काम्बले के दिशा-निर्देश,अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डी.सी.पटेल के मार्गदर्शन,अनुविभागीय अधिकारी पुलिस गरियाबंद पुष्पेंद्र नायक के पर्यवेक्षण में विशेष अभियान चलाया जा रहा हैं।जिसके परिणाम स्वरूप अवैध तस्करों पर लगातार कार्यवाही की जा रही है ,इसी तरह सोमवार को मुखबिर से सूचना मिला कि ग्राम चिंगरमाल जाने के कच्ची मार्ग पर एक व्यक्त लाल रंग के थैलें में वन्य प्राणी तेन्दुआ कि खाल को भरकर ग्राहक की तलाश करते हुये ग्राम चिंगरमाल के तरफआ रहे हैं,इस सूचना पर तत्काल कार्यवाही करते हुये पीपरछेड़ी प्रधान आरक्षक रवि लहरे को मुखबीर के बताये घटना स्थल के लिए रवाना हुए ग्राम रसेला में गवाहों के समक्ष घटना स्थल पर मुखबीर के बताए अनुसार एक व्यक्ति जो ग्राम चिंगरमाल जाने वाले कच्ची मार्ग पर लाल रंग का थैला रखकर पैदल ग्राम चिंगरमाल की ओर जा रहा था जिसे रोककर उनका नाम पुछने पर नंद कुमार ठाकुर पिता मया राम ठाकुर उम्र 45 वर्ष साकिन स्कूल पारा ग्राम रसेला थाना छुरा जिला गरियाबंद का होना बताया उक्त व्यक्ति का तलाशी लिया गया जिसके पास से संदिग्ध वन्य जीव का खाल बरामद किया गया। वन्य प्राणी तेन्दुआ खाल किमती अनुमानित रकम 4,00,000 रूपये को जप्त कर सीलबंद किया गया व आरोपी का कृत्य अपराध वन्य जीव सरंक्षण अधिनियम 1972 की धारा 9,29,39,51 की पाए जाने से अपराध पणजी मत कर विवेचना में लिया गया।और आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायालय पेश किया गया।

मुख्यमंत्री के प्रस्तावित प्रवास को लेकर तैयारियां शुरू

कांकेर(विश्व परिवार)। प्रदेश के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल का जिले में आगामी 06 अक्टूबर को जिला मुख्यालय में प्रवास प्रस्तावित कार्यक्रम में वे शिरकत करेंगे। इसे लेकर जिला प्रशासन द्वारा आवश्यक तैयारियां शुरू कर दी गई हैं। स्थानीय गोविंदपुर के खेल मैदान में प्रस्तावित कार्यक्रम 06 अक्टूबर को आयोजित किया जाएगा। इस दौरान वृहत मंचीय कार्यक्रम का आयोजन होगा। इसे लेकर कलेक्टर डॉ. प्रियंका शुक्ला, एसपी श्री दिव्यांग पटेल ने आज सुबह 11 बजे गोविंदपुर स्थित समारोह स्थल का जायज़ा लिया, साथ ही अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। इस दौरान अधिकारी द्वय ने तैयार किए जा रहे मुख्य मंच, वीआईपी लाउंज, ग्रीन हाउस, दर्शक दीर्घा, पत्रकार दीर्घा, लोकार्पण-शिलान्यास स्थल, हितग्राहियों की बैठक व्यवस्था सहित विभिन्न स्थलों का सघन अवलोकन कर संबंधित अधिकारियों को जरूरी निर्देश दिए। इस अवसर पर डीएफओ आलोक बाजपेई, अतिरिक्त सीईओ वीरेंद्र जायसवाल सहित जिला स्तर के अधिकारीगण उपस्थित थे।

निगम के विभिन्न उद्यान में विशेष साफ-सफाई का कार्य

कोरबा(विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम कोरबा में स्वच्छ भारत मिशन अंतर्गत 15 सितम्बर से 02 अक्टूबरर 2023 तक '' स्वच्छता ही सेवा '' पखवाडा का आयोजन किया गया, जिसके तहत विभिन्न स्वच्छता गतिविधियॉं, स्वच्छता सुरक्षा कार्यक्रम, स्वच्छता की शपथ, पेंटिंग, क्विज आदि कार्यक्रम आयोजित किये गये। 01 अक्टूबर को निगम क्षेत्र के 53 स्थानों पर श्रमदान कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें कोरबा शहर के 03 चौक-चौराहों, 05 शमसानघाटों व मुक्तिधामों, 06 मंदिर एवं ईदगाह, 09 स्कूलों, 05 आंगनबाड़ी, 02 बस स्टैण्ड आदि स्थानों में जनप्रतिनिधियों, सामाजिक संस्थाओं एवं आमनागरिकों के सहयोग से श्रमदान कर साफ-सफाई के कार्य कर स्वच्छता अभियान चलाया गया। स्मृति उद्यान, चौपाटी, सियान सदन में आयोजित श्रमदान में महापौर श्री राजकिशोर प्रसाद, सभापति श्री श्यामसुंदर सोनी, मेयर इन काउंसिल सदस्य प्रदीप जायसवाल, पार्षद शैलेन्द्र सिंह पप्पी, अपर आयुक्त खजांची कुम्हार, उपायुक्त बी.पी.त्रिवेदी, स्वास्थ्य अधिकारी डॉ.संजय तिवारी, सुनील वर्मा, विपिन मिश्रा, श्री सूर्यवंशी, धनमोहन रात्रे, स्वच्छता कमाण्डो, मिशन क्लीन सिटी सुपरवाईजर, बालको सेवानिवृत्त समिति, यूथ हॉस्टल ऐसोसिएशन केारबा, चौपाटी व्यापारी समिति, महिला मैत्री संघ के साथ ही सभी सफाई कर्मियों ने श्रमदान कर अपना सम्पूर्ण सहयोग अभियान में रहा। मुक्तिधाम, शमसान एवं मंदिरों में भी किया गया श्रमदान - स्वच्छता ही सेवा की कड़ी में पोड़ीबहार मुक्तिधाम विकास समिति, ईदगाह समिति दुरपा रोर्ड कोरबा, सर्वमंगला मंदिर समिति, नवदृष्टि समाज सेवा समिति, आटो यूनियन कोरबा, राम जानकी मंदिर सेवा समिति पुराना बस स्टैण्ड, सेलिब्रेशन योगा मेडिटेशन संघ, आई.डी.एस.एम.टी. काम्पलेक्स समिति के सहयोग से मुक्तिधाम, मंदिर परिसर, बस स्टैण्ड, गार्डन, चौक-चौराहों में स्वच्छता/साफ-सफाई कर श्रमदान किया गया।

भूपेश राज में बस्तर में आई शांति - लखमा

कोर्रापाड़ और पुनपल्ली बाइक में पहुंचे उद्योग मंत्री

जगदलपुर(विश्व परिवार)। प्रदेश के उद्योग एवं आबकारी मंत्री कवासी लखमा रविवार को कोर्रापाड व पुनपल्ली पहुंचे, जहां लोगों ने ढोल नगाड़ो के साथ आत्मीय स्वागत किया। इसे देख मंत्री लखमा खुद को रोक नहीं पाये और उन्होंने ढोल बजाकर ग्राम वासियों का अभिवादन किया। उन्होंने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि कांग्रेस की सरकार जो कहती है वो करती है। चाहे वो कर्जमाफी हो या 2500 में धान खरीदी या फिर आदिवासी दिवस की छुट्टी देनी हो। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार बनने से बस्तर में शांति हो रही है, नक्सल प्रभावित इलाकों में आज राशन, बिजली, पानी, रोड पहुंच रहा है। आज पोलमपल्ली में डामररोड का निर्माण हो रहा है। इसके साथ ही मिसमा, टिन, भेजी, रेगडगट्टा, गुफ्नपल्ली में रोड का निर्माण करवाये जाने की पहल की जा रही है। 15 साल की भाजपा की रमन सिंह सरकार लोगों के राशन कार्ड में नाम काटने का काम करती थी, आज हमारी सरकार सभी वर्ग के लोगों का राशन कार्ड बनवाकर वितरण करने का काम कर रही हैं। कोंटा के लोग भाजपा को वोट देते समय याद रखें कि सलवा जुडूम इनकी ही देन थी। आदिवासियों को आपस में लड़ाने का काम, पूरा गांव के गांव खाली कराने का कोई जिम्मेदार है तो वो भाजपा की रमन सरकार है। क्या ऐसे लोगों को पुनः वोट देकर सलवा जुडूम को लाना है। ऐसे लोगों को वोट मांगने का अधिकार नहीं है। मंत्री कवासी लखमा ने कहा कि मनीष कुंजाम दो बार विधायक रहे लेकिन जनता के लिए कुछ भी नहीं कर पाये। लोगों को डरा धमका कर रैली में आने के लिए कहते हैं। मुझ पर बेबुनियाद आरोप लगाने का काम करते हैं। ऐसे लोग समाज का कभी भला नहीं कर सकते। ये केवल लोगों को भ्रमित करने का काम करते हैं। किसी के बहकावे में नहीं आना है। कांग्रेस पार्टी हमेशा से ही आदिवासियों के हित में काम करती आ रही है और आगे भी करते रहेगी। मंत्री कवासी लखमा ने कहा कि आने वाले समय में पुनपल्ली में 50 लाख की लागत से खेल मैदान का निर्माण करवाया जायेगा। आज आपके गांव में बिजली, पानी, सड़क पहुंच चुका है और भी कोई समस्या है तो मुझे अवगत कराएं। हमारी सरकार विभिन्न योजना गोबर खरीदी, गौ मूत्र खरीदी, तेंदुपत्ता खरीदी, महुआ खरीदी, धान खरीदी आदि के माध्यम से गरीब के जेब में पैसा डालने का काम कर रही है।

नक्सली कैम्प ध्वस्त, कई सामान बरामद

बीजापुर(विश्व परिवार)। जिले के मिरतुर थाना क्षेत्र मदपाल के जंगलों में नक्सलियों के कैम्प को पुलिस की संयुक्त पार्टी ने ध्वस्त कर दिया है। वहां से नक्सलियों के कई सामान बरामद किए गए हैं। पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक, पुलिस को सूचना मिली थी कि भैरमगढ़ ब्लाक के मिरतुर थाना क्षेत्र के कुडमेर और मदपाल के जंगलों में भैरमगढ़ एरिया कमेटी की सचिव सुमित्रा और एसीएम शंकर कारम सहित 10 -15 सशस्त्र नक्सलियों की मौजूदगी है। जिसके बाद डीआरजी और 19/ए वी वाहिनी छसबल बेचापाल की संयुक्त टीम नक्सल विरोधी अभियान पर निकली। अभियान के दौरान सुबह 7 बजे मदपाल के जंगलों में पुलिस की संयुक्त पार्टी द्वारा नक्सली कैम्प ध्वस्त किया गया। नक्सली पुलिस की उपस्थिति को देख भाग निकले। मौके से पुलिस ने डेटोनेटर, टूल्स, नक्सली वर्दी, पिट्ठू, नक्सली साहित्य, दवाइयां और रोजमर्रा के सामान कैम्प से बरामद किये हैं।

जैन धर्म से जुड़े शब्दों का अर्थ समझाने 2 साल के रिसर्च के बाद लिखी किताब डॉ सरिता चौधरी ने

रायपुर (विश्व परिवार)। शहर की डॉ सरिता चौधरी की किताब 'जैन धर्म की विशिष्ट शब्दावली' का विमोचन रविवार को हुआ। टैगोर नगर स्थित पटवा भवन में आयोजित कार्यक्रम में श्री प्रवीण ऋषि जी मसा और मधुर गायक श्री तीर्थेश मुनि जी मसा की निश्रा एवम सानिध्य में किताब का लोकार्पण किया गया। डॉ सरिता चौधरी ने किताब में जैन धर्म के शब्द जो प्राकृत भाषा में होते है उन्हें सामान्य अर्थ, विभिन्न ग्रंथों के आधार पर अर्थ और विशिष्ट अर्थों का वर्णन किया गया है। 560 पेज की इस किताब में 500 से ज्यादा जैन शब्द है। इसमें उन्होंने जैनेंद्र सिंध्दात कोष, निरूक्त कोष, अभिधान राजेंद्र कोष जैसे ग्रंथो के आधार पर भी अर्थ बताए है। उन्होंने बताया कि पिछले दो साल से किताब लिखने कार्य कर रही थी। यह किताब रिसर्चर, स्वाध्याय करने वालों तथा आम लोगों के लिए भी उपयोगी है। उन्होंने बताया कि यह एक संदर्भ ग्रंथ है। जिसमें जैन धर्म के प्रचलित-अप्रचलित सभी शब्दों का वर्गीकरण, अध्ययन और विश्लेषण किया गया है। इसमें शब्दों को परिवारिक, सामाजिक आयाम, धार्मिक आयाम, दार्शनिक एवं नैतिक आयाम में बांट कर किया गया है। इसके साथ ही इन आयामों से संबंधित लोकोक्तियां, मुहावरें, सूक्तियां, प्रतीकों का वर्णन किताब में किया गया है। अभी जीतो जैन इंटरनेशनल ट्रेड ऑर्गनाइजेशन छत्तीसगढ़ की लेडिस विंग की आप चेयरपर्सन हैं।

2000 में की थी पीएचडी- उन्होंने बताया कि 2000 में जैन धर्म की विशिष्ट शब्दावली का समाजभाषिक एवं भाषाशास्त्रीय अध्ययन विषय पर रिसर्च किया था। उसके बाद उन्होंने एक किताब प्रकाशित की थी। उसके बाद जैन स्वाद का खजाना तथा मेरी मनोकामना स्वस्थ परिवार पुस्तक प्रकाशित की अभी फिर से एक साल तक रिसर्च करने के बाद किताब प्रकाशित की है। इसमें उन्होंने शब्दों को अच्छे से समझाया है।

जैन धर्म के साथ वैदिक और बौध्द धर्म की भी तुलना- डॉ सरिता चौधरी ने अपने किताब में जैन धर्म के साथ बौद्धधर्म और वैदिक धर्म का तुलनात्मक समालोचना भी की है। इसमें उन्होंने तीनों धर्म में उपयोग किए जाने वाले शब्द और उसके अर्थ के बारे में बताया है। कई शब्द सभी धर्म में उपयोग किए जाते है पर उनका अर्थ अलग-अलग होता है। यह पुस्तक वर्तमान पीढ़ी तथा आने वाली पीढ़ी के लिए उपयोगी साबित होगी। पुस्तक का लोकार्पण श्री उत्तम चंद जी गिड़िया श्री प्रकाश जी माल श्री ललित पटवा श्री अजय चौधरी श्री आलोक चौधरी श्री सुरेन्द्र पोरवाल श्री अजय संचेती श्री संजय जैन श्री राजेश जैन श्री संजय सिंघीं श्री संदीप झा बक संजय नाहटा ज्ञानचंद जैन राजेश मूणोत डॉ अंजू पारख एवम शहर के गणमान्य लोग उपस्थित थे।

सभी नगर निकायों में चलाया गया स्वच्छता अभियान

महासमुंद(विश्व परिवार)। स्वच्छता ही सेवा अभियान और स्वच्छता श्रमदान अभियान के अवसर पर आज जिले के सभी नगरी निकायों के सभी वार्डों में सफाई अभियान चलाया गया ।जिसमें सफाई कर्मी के साथ-साथ जनप्रतिनिधि, आम नागरिक, गणमान्य नागरिक ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।

नगरीय निकायों के वार्डों में सार्वजनिक स्थलों जैसे चौक चौराहा, गलियां, तालाब ,धार्मिक स्थलों और कार्यालय की भी सफाई की गई। इसी तरह सभी जनपद पंचायतों के एक एक ग्राम पंचायत में विशेष सफाई अभियान भी चलाया गया।

विदित है कि मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने 01 अक्टूबर को स्वच्छता श्रमदान अभियान के अवसर पर समस्त नागरिकों को समय निकालकर श्रमदान के इस अभियान में सहयोग की अपील की थी और गांधी जयंती के अवसर पर राज्य के हर गली मोहल्ले को सेवाग्राम बनाने में अपना योगदान देने हेतु प्रयास करने का आव्हान किया था। 1 अक्टूबर 2023 को सुबह 10 बजे, छत्तीसगढ़ राज्य के समस्त शहरों में स्वच्छता के लिए एक घंटे के श्रमदान का आह्वान किया गया था।

विदित है कि छत्तीसगढ़ राज्य को लगातार स्वच्छतम राज्य का पुरस्कार प्राप्त हुआ है, जिससे स्वच्छता का छत्तीसगढ़ मॉडल सफल हो रहा है।

हर नगरीय निकाय ने स्वच्छता अभियान के लिए हर वार्ड में स्थलों का चयन किया था।

जिले के 18 तालाबों को प्लास्टिक मुक्त किया जाएगा

महासमुंद(विश्व परिवार)। दुनिया भर में शांति, अहिंसा और नैतिक चरित्र की शुद्धता का नजरिया देने वाले पूरी दुनिया की स्वच्छता के ब्रांड एंबेसडर, हमारे भारत की पहचान राष्ट्र पिता महात्मा गांधी जी की 154 वीं जयंती के अवसर पर उनके स्वच्छ भारत के सपना को पूरा करने के लिए...महासमुंद शहर और आसपास ग्रामों के 15 तालाबों में स्वच्छता कार्यक्रमआयोजित किया जा रहा है। इस मिशन में हम मुख्य रूप से तालाब परिसर में प्लास्टिक कचरा का निपटान कर परिसर को स्वच्छ बनाने का प्रयास करेंगे। इस अभियान का उद्देश्य स्वच्छता हेतु जनजागरण का प्रयास भी करना है, जिसमें तालाब का उपयोग उपभोग करने वालों को प्रतिदिन स्वच्छता कार्य करने की अपील, बच्चों एवं युवाओं के स्वच्छता कार्य में भागीदारी के साथ स्वच्छता के महत्व से उनको अवगत कराना, जनप्रतिनिधियों की सहभागिता सुनिश्चित करना है।

भरोसा यात्रा निकाल कांग्रेसियों ने भरी हुंकार

सेवा दल कार्यकर्ताओं के साथ नारेबाजी करते निकले विधायक जैन

जगदलपुर(विश्व परिवार)। गांधी-शास्त्री जयंती पर सोमवार सुबह कांग्रेस सेवा दल के पदाधिकारियों- कार्यकर्ताओं के साथ संसदीय सचिव व जगदलपुर विधायक रेखचंद जैन कांग्रेस भवन से सदभावना यात्रा पर निकले। चांदनी चौक, एसबीआइ चौक, गोलबाजार चौक व शहर के अन्य मुख्य मार्गों से होकर यात्रा शहीद स्मारक, सिरहासार चौक पहुंची, जहां गांधी प्रतिमा के समक्ष शीश झुकाकर विधायक व अन्य कांग्रेसियों ने माल्यार्पण किया। 'आंधी में तूफान में सेवा दल मैदान में ', बापू अमर रहे जैसे नारों के बीच रैली वापस कांग्रेस भवन पहुंची। विधायक ने शहर कांग्रेस अध्यक्ष सुशील मौर्य तथा अन्य कांग्रेसियों के साथ हाथों में झाड़ू थाम स्वच्छता का संदेश दिया। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के आव्हान पर सोमवार को दोपहर में भरोसा यात्रा निकाली गई, जो मुख्य मार्गों समेत विभिन्न चौक- चौराहों से होकर गुजरी। इस दौरान खूब नारेबाजी की जाती रही। भरोसा यात्रा के दौरान विधायक- संगठन प्रभारी, जिलाध्यक्ष समेत कांग्रेस के विभिन्न संगठन- प्रकोष्ठ के सैकड़ों पदाधिकारी- कार्यकर्ता मौजूद रहे।

धन्वंतरी दवा दुकान की सस्ती दवाइयों से लोगों को मिल रही बड़ी राहत

अब तक लोगों को 6 करोड़ 43 लाख की हुई बचत

रायगढ(विश्व परिवार)। आमजनों को दवाईयों में होने वाले खर्च को कम करने और रियायती दर पर दवाईयां उपलब्ध कराने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की पहल पर राज्य शासन द्वारा प्रदेशभर में धन्वंतरी जेनेरिक दवा दुकान खोली गयी है। जहां 70 प्रतिशत तक दवाइयां छूट के साथ उपलब्ध हैं। नगर निगम रायगढ़ अंतर्गत लोगों ने रियायती दर पर दवाईयों का लाभ लेते हुए अब तक 6 करोड़ 43 लाख रुपए से अधिक की राशि की बचत की है। शहर की धन्वंतरी दवा दुकान जनसंख्या के लिहाज से बिक्री के मामले में पूरे प्रदेश में शीर्ष पर है। योजना की शुरुआत से अब तक करीब 1.59 लाख लोगों ने यहां से सस्ती दरों पर दवाइयां खरीदी हैं। छत्तीसगढ़ शासन द्वारा लोगों के स्वास्थ्य को प्राथमिकता में रखते हुए स्वास्थ्य के क्षेत्र में बहुत सी जनहितैषी योजनाएं चलाई जा रही हैं। जिसमें धन्वंतरी जेनेरिक दवा दुकान योजना भी शामिल हैं। जहां लोगों को बहुत ही कम दाम पर जेनेरिक दवाएं उपलब्ध हैं। जिससे दवाइयों में होने वाले खर्च काफी कम कर दिया हैं। रायगढ़ निगम क्षेत्र की धन्वंतरी दवा दुकानों से एमआरपी के हिसाब से देखें तो लगभग 8 करोड़ 66 लाख 6हजार 866 रुपए की दवाइयों की बिक्री हुई है। जो 70 प्रतिशत छूट के साथ 2 करोड़ 22 लाख 67 हजार रुपए की पड़ी और लोगों के 6 करोड़ 43 लाख 40 हजार रुपये की बचत हुई है। रायगढ़ नगर निगम के अंतर्गत अशर्फी देवी चिकित्सालय में स्थित धन्वंतरी जेनेरिक मेडिकल स्टोर खोला गया है, जिसका लोगों के बीच अच्छा प्रतिसाद मिल रहा हैं।

15-17 युवकों ने तलवार लहराकर की गुंडागर्दी, युवाओं से की मारपीट

महासमुंद(विश्व परिवार)। नयापारा वार्ड नंबर 11 में करीब 15-17 युवकों ने तलवार लहराकर गुंडागर्दी करते हुए मोहल्ले के युवाओं के साथ मारपीट की. इस मारपीट के दौरान एक महिला के सिर पर गंभीर चोटें आई हैं, जिसका इलाज मेडिकल कॉलेज में किया जा रहा है. वहीं इस मामले में घायल महिला के पति की शिकायत पर पुलिस ने युवकों के खिलाफएफ्आईआर दर्ज किया है. बता दें कि, महासमुंद से दलदली रोड स्थित नयापारा के वार्ड क्रमांक 11 में शनिवार की शाम विक्की ठाकुर, सन्नी ठाकुर, राजा ठाकुर सहित करीब 15-17 युवकों ने हाथों में तलवार लहराते हुए मोहल्ले के युवकों के साथ मारपीट की. युवकों के साथ मारपीट होता देख बीच बचाव करने पहुंची ऊषा के सिर पर चोट आई, जिससे महिला बुरी तरह लहूलुहान हो गई, जिसे तत्काल एंबुलेंस से इलाज के लिए मेडिकल कॉलेज भेजा गया. पीड़िता उषा के पति चैतू मिरी ने शनिवार की शाम सिटी कोतवाली पहुंचकर एफ्आईआर दर्ज कराई है. पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ धारा 294, 323, 34 के तहत अपराध पंजीबद्ध किया है. एक दिन पहले भी विक्की ठाकुर, सन्नी ठाकुर और राजा ठाकुर ने मोहल्ले के लोगों के साथ मारपीट की थी.

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

खेल-व्यापार

रायपुर, बुधवार 04 अक्टूबर 2023

व्यापार समाचार

टेस्ला ने चीन में अपडेटेड मॉडल वाई इलेक्ट्रिक कार की लॉन्च

हांगकांग(एजेंसी)। एलन मस्क द्वारा संचालित टेस्ला ने चीन में अपडेटेड डिजाइन और परफॉर्मेंस में बदलाव के साथ लगभग 263,900 युआन (37,000 डॉलर) की शुरुआती कीमत पर एक नई मॉडल वाई इलेक्ट्रिक कार लॉन्च की है। नई कार चीन में संशोधित हाईलैंड मॉडल 3 को फॉलो करती है, जिसने पिछले महीने की शुरुआत में यूरोप में भी धूम मचाई थी। मॉडल वाई में अब 0-100 किमी/घंटा का समय 5.9 सेकंड है। द वर्ज की रिपोर्ट के अनुसार, ईवी में रिफ्रेश मॉडल 3 की तरह नए पहिये और डैश में एलईडी लाइटिंग स्ट्रिप है। टेस्ला 299,900 युआन (लगभग 42,000 डॉलर) में एक लॉन्ग-रेंज वर्जन और 349,900 युआन (लगभग 49,000 डॉलर) में हाई-परफॉर्मेंस वर्जन भी पेश कर रहा है। कंपनी ने अभी तक अमेरिका में अपडेटेड मॉडल वाई की घोषणा नहीं की है। अगस्त में, टेस्ला ने अपने प्रमुख मॉडल एस और मॉडल एक्स को अमेरिका और कनाडा में अधिक किफायती कीमतों पर मानक वेरिएंट के साथ लॉन्च किया, और प्रीमियम ईवी कार मार्केट में कंपीटिशन के बीच इसमें 10,000 डॉलर की कटौती की। टेस्ला की आधिकारिक वेबसाइट पर, मॉडल एस स्टैंडर्ड रेंज की कीमत अब विकल्पों से पहले 78,490 डॉलर है। मॉडल एस एसआर प्रति चार्ज 320 मील की रेंज और 3.7-सेकंड, 0-60 मील प्रति घंटे का समय प्रदान करता है। वाहन में 149 मील प्रति घंटे की टॉप स्पीड भी है। टेस्ला मॉडल एक्स स्टैंडर्ड रेंज अब विकल्पों से पहले 88,490 डॉलर की शुरुआती कीमत पर पेश की गई है। यूजर्स पूरी तरह से इलेक्ट्रिक एसयूवी प्राप्त कर सकते हैं जिसमें प्रति चार्ज 269 मील की रेंज और 4.4 सेकंड में 0-60 मील प्रति घंटे की गति होती है।

सीएनजी और पीएनजी की कीमतों में हुई बड़ी कटौती

मुंबई (एजेंसी)। मुंबई में रहने वालों के लिए एक राहत भरी खबर है। महानगर गैस लिमिटेड ने एक बड़ा फैसला लिया है। कंपनी ने मुंबई और उसके आसपास के उपनगरों में सीएनजी की कीमतों में 3 रुपए प्रति किलोग्राम की कटौती की है। इसके साथ-साथ घरेलू पीएनजी की कीमत में भी 2 रुपए कमी की घोषणा की है। इसके साथ ही मुंबई और उसके आसपास के उपनगरों में सीएनजी की नई कीमत 76 रुपए प्रति किलोग्राम हो गई है। वहीं, घरेलू पीएनजी की कीमत 47 रुपए होगी। महानगर गैस लिमिटेड की ओर से कीमतों में कमी का आदेश 1 अक्टूबर 2023 की मध्यरात्रि और 2 अक्टूबर 2023 की सुबह से लागू हो जाएगा। इससे पहले अप्रैल महीने में भी महानगर गैस लिमिटेड ने सीएनजी की कीमत में 8 रुपए और पीएनजी की कीमत में 5 रुपए प्रति एससीएम की कटौती की थी। कीमतों में कटौती के बाद मुंबई और उससे सटे उपनगर में सीएनजी की कीमत 79 रुपए प्रति किलोग्राम हो गई थी। वहीं, पीएनजी की कीमत 49 रुपए हो गई थी। कटौती से पहले शहर में सीएनजी की कीमत 87 रुपए प्रति किलोग्राम थी जबकि पीएनजी की कीमत 54 रुपए प्रति एससीएम थी।

हर मिनट 142,690 डॉलर कमाने के दावे पर मस्क ने दिया जवाब, कहा- भारी नुकसान उठाता हूं

नई दिल्ली(एजेंसी)। टेक अरबपति एलन मस्क ने रविवार को उन खबरों का खंडन किया कि वह हर मिनट 142,690 डॉलर या प्रति घंटे 8,560,800 डॉलर कमाते हैं। उन्होंने कहा कि जब भी टेस्ला के स्टॉक में गिरावट आती है तो वह अधिक पैसा गवां देते हैं। एक यूजर को जवाब देते हुए, एक्स के मालिक ने कहा कि ऐसी रिपोर्ट मूर्खतापूर्ण मैट्रिक्स पर निर्भर करती हैं। मस्क ने पोस्ट किया, यह नकदी का ढेर नहीं है। वास्तव में मेरे पास उन कंपनियों में स्टॉक हैं जिन्हें बनाने में मैंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने कहा कि तकनीकी रूप से, हर बार टेस्ला के स्टॉक में बेतरतीब गिरावट से उन्हें कहीं अधिक नुकसान होता है। रिपोर्ट में दावा किया गया था कि तीन साल की अवधि के दौरान मस्क की कुल संपत्ति औसतन लगभग 2,378 डॉलर प्रति सेकंड बढ़ी। रिपोर्ट में दावा किया, यह प्रति मिनट 142,680 डॉलर या प्रति घंटा 8,560,800 डॉलर है। अगर वह आठ घंटे के लिए बिस्तर पर जाते हैं, तो अगली सुबह वह उठते है और खुद को 68,486,400 डॉलर अधिक अमीर पाते है। टेस्ला और स्पेसएक्स के सीईओ ने जनवरी से जून 2023 तक अपनी कुल संपत्ति में 96.6 बिलियन डॉलर की वृद्धि दर्ज की। वह वर्तमान में 248.7 बिलियन डॉलर की संपत्ति के साथ दुनिया के सबसे अमीर आदमी हैं। टेस्ला में मस्क की फिलहाल 23 फीसदी हिस्सेदारी है। उनकी संपत्ति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा, लगभग दो-तिहाई, टेस्ला की सफलता से जुड़ा है। मस्क ने अक्टूबर, 2022 में तब सुर्खियां बटोरीं, जब उन्होंने ट्विटर को 44 बिलियन डॉलर में खरीदा और फिर उसका नाम एक्स रख दिया। ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट के मुताबिक, टेस्ला के शेयरों में हालिया गिरावट के बाद मस्क की संपत्ति गिरकर 137 अरब डॉलर हो गई है।

पॉपुलर व्हीकल्स एंड सर्विसेज लिमिटेड ने सेबी के पास दाखिल किया डीआरएचपी

रायपुर। भारत की अग्रणी विविधीकृत ऑटोमोबाइल डीलर, पॉपुलर व्हीकल्स एंड सर्विसेज लिमिटेड (कंपनी) ने बाजार नियामक, भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) के पास ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (डीआरएचपी) दाखिल किया। कंपनी वित्त वर्ष 2023 में दर्ज आय के लिहाज़ से, भारत की अग्रणी विविधीकृत ऑटोमोबाइल डीलरशिप है, (स्रोत: क्रिसिल रिपोर्ट) जिसके पास पूरी तरह से एकीकृत व्यवसाय मॉडल है। कंपनी इस इशू के तहत इक्विटी शेयरों (अंकित मूल्य 2) के फ्रेश इशू के ज़रिये 250 करोड़ तक जुटाना चाहती है और 14,275,401 इक्विटी शेयरों का ऑफर फॉर सेल (ओएफ़एस) पेश करना चाहती है। (कुल आफर का आकार) कंपनी ने फ्रेश इशू के ज़रिये जुटाई गई राशि का उपयोग, कंपनी और उसकी सहायक कंपनियों द्वारा लिए गए 192 करोड़ के ऋण के पूर्ण या आंशिक पुनर्भुगतान और/या पूर्व-भुगतान करने और और शेष राशि का इस्तेमाल सामान्य कॉर्पोरेट उद्देश्यों के लिए करने का प्रस्ताव किया।

भारत तीरंदाजी में सभी छह टीम स्पर्धाओ के क्वार्टर फाइनल में

हांगझोउ(एजेंसी)। भारतीय तीरंदाजों ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए सोमवार को एशियाई खेलों में सभी टीम स्पर्धाओं में क्वार्टर फाइनल में प्रवेश कर लिया । भारत ने पांच टीम एलिमिनेशन दौर खेले और सिर्फ एक सेट गंवाया । वहीं महिला कंपाउंड टीम को क्वालीफिकेशन में शीर्ष रहने के कारण क्वार्टर फाइनल तक बाय मिला था । पांचवीं वरीयता प्राप्त अतनु दास और अंकिता भकत ने मलेशिया के स्याकिरा बिंटी एम और मुहम्मद जरीफ स्याहिर बिन जोकेपेली को 39 . 38, 37 . 36, 39 . 33 से हराया । मलेशिया की जोड़ी ने पहले सेट में तीन 10 स्कोर करके 2 . 0 की बढत बना ली थी । लेकिन भारत की अनुभवी जोड़ी ने दो 10 स्कोर करके वापसी की । मलेशियाई टीम ने दूसरा सेट एक अंक के अंतर से गंवा दिया । वहीं तीसरे सेट में दास और अंकिता ने शानदार प्रदर्शन करते हुए तीन परफेक्ट 10 लगाये और क्वार्टर फाइनल में जगह बना ली जहां उनका सामना चौथी वरीयता प्राप्त इंडोनेशिया से होगा । इंडोनेशिया को हराने पर उनकी टक्कर शीर्ष रैंकिंग वाली दक्षिण कोरिया से हो सकती है । एशियाई खेलों में छह कोटा स्थान उपलब्ध है जो रिकर्व मिश्रित टीम विजेता और व्यक्तिगत वर्ग में शीर्ष दो तीरंदाजों को मिलेंगे । कंपाउंड मिश्रित वर्ग में शीर्ष वरीयता प्राप्त ओजस देवताले और ज्योति सुरेखा वेन्नम ने सिर्फ एक अंक गंवाया और संयुक्त अरब अमीरात के मोहम्मद बिनामरो और आमना अलावाधी को 159 . 151 से मात दी । अब उनका सामना मलेशिया से होगा । कंपाउंड टीम वर्ग में दूसरी वरीयता प्राप्त ओजस, अभिषेक वर्मा और प्रथमेश जावकर ने 15वीं वरीयता प्राप्त सिंगापुर (वून तेंग एंग, ली चुंग ही एलेन और जुन हुइ गोह) को 235 . 219 से हराया । अब उनका सामना निचली रैंकिंग वाली भूटान टीम से होगा । शीर्ष वरीयता प्राप्त महिला कंपाउंड टीम (ज्योति, अदिति स्वामी और परनीत कौर) क्वार्टर फाइनल में नौवीं वरीयता प्राप्त हांगकांग से खेलेगी जिसने बांग्लादेश को 225 . 218 से हराया । दास, धीरज और तुषार शेल्के की पुरूष रिकर्व टीम ने हांगकांग के क्रोक यिन चाइ, लॉ क्वुन पोक लूसियेन और चुन किट को 58 . 47, 57 . 49, 57 . 55 से हराया ।

केनोइंग और कयाकिंग में भारत के लिये निराशाजनक दिन

हांगझोउ(एजेंसी)। भारतीय खिलाड़ियों के लिये केनोइंग और कयाकिंग में सोमवार का दिन निराशाजनक रहा और चार फाइनल में उतरने के बावजूद वे पदक नहीं जीत सके । नीरज वर्मा पुरूषों के एकल केनोए 1000 मीटर में 4 = 36 . 314 सेकंड का समय निकालकर सातवें स्थान पर रहे । रीबासन सिंह एन और फिलेम ज्ञानेश्वर सिंह की भारतीय टीम पुरूष केनोए युगल 500 मीटर फाइनल में 1 = 54 . 723 सेकंड के समय के साथ आठवें स्थान पर रही । भारतीय महिला टीम कयाक युगल 500 मीटर और केनोए युगल 500 मीटर फाइनल में आखिरी स्थान पर रही । बिनिता चानू ओइनम और पार्वती गीता ने कयाक युगल 500 मीटर में 2 = 07 . 440 सेकंड का समय निकाला जबकि मेघा प्रदीप और शिवानी वर्मा केनोए युगल 500 मीटर में 2 = 17 . 614 का समय निकाल सकी ।

धोनी से बहुत कुछ सीखा लेकिन कप्तानी का मेरा अपना तरीका : गायकवाड़

हांगझोउ(एजेंसी)। उन्होंने महेंद्र सिंह धोनी से काफी कुछ सीखा है लेकिन पहली बार एशियाई खेलों की क्रिकेट स्पर्धा में भारतीय पुरूष टीम की कप्तानी कर रहे रूतुराज गायकवाड़ ने कहा कि उनकी कप्तानी की अपनी शैली है । महिला टीम के बाद अब भारतीय पुरूष क्रिकेट टीम भी स्वर्ण पदक की दावेदार होगी । भारतीय टीम मंगलवार को क्वार्टर फाइनल खेलेगी । इंडियन प्रीमियर लीग में धोनी की चेन्नई सुपर किंग्स के लिये खेलने वाले गायकवाड़ ने कहा , मैने धोनी से बहुत कुछ सीखा है लेकिन हर व्यक्ति की अपनी शैली होती है । उनकी शैली अलग है, उनकी शख्सियत अलग है और मेरी अलग है ।' उन्होंने कहा , मैं उनके जैसा कुछ करने की बजाय अपनी शैली से खेलूंगा । हालात का सामना करने और खिलाड़ियों के सही उपयोग को लेकर उनसे मिली सीख को मैं जरूर अमल में लाऊंगा । भारतीय कोच वीवीएस लक्ष्मण ने कहा कि चीन में क्रिकेट खेलना अनोखा अनुभव होगा । उन्होंने कहा, यहां बहुत अलग है । हमने कभी सोचा भी नीं था कि चीन में क्रिकेट खेलेंगे । पूरी टीम के लिये यह शानदार मौका है । एशियाई खेलों में भाग लेना गर्व की बात है । गायकवाड़ ने कहा , क्रिकेट में विश्व कप है, आईपीएल है और घरेलू टूर्नामेंट है । हम उस तरह के हालात और माहौल के आदी है लेकिन यहां खेलगांव में रहना , दूसरे खिलाड़ियों को और उनके संघर्षों को जानना अलग अनुभव है । उन्हें दो तीन साल या चार साल में खेलने का मौका मिलता है । हमें खेलगांव का दौरा करके बहुत अच्छा लगा ।

अमेरिका स्थित एस्पायर डॉट आईओ ने भारतीय सास प्लेटफॉर्म कॉमर्सअप का किया अधिग्रहण

सैन फ्रांसिस्को(एजेंसी)। अमेरिका स्थित प्रभावशाली मार्केटिंग प्लेटफॉर्म एस्पायर डॉट आईओ ने सोमवार को कहा कि उसने एक अज्ञात राशि से भारतीय सास-बेस्ड ईकॉमर्स प्लेटफॉर्म कॉमर्सअप का अधिग्रहण किया है। इन्फ्लुएंस-ड्राइवन कॉमर्स का निर्माण और विस्तार करने के लिए कॉमर्सअप के एग्जीक्यूटिव लीडरशिप के साथ टीम के 12 सदस्य एस्पायर की प्रोडक्ट टीम में शामिल हुए। एस्पायर के प्रोडक्ट्स के वरिष्ठ उपाध्यक्ष राजीव अरुणकुंड्रम ने कहा, कॉमर्सअप टीम ने एशिया में कुछ प्रमुख ओमनी-चैनल कस्टमर्स के लिए मुख्य कॉमर्स प्लेटफॉर्म बनाया है। मैं भारत में हमारे प्रोडक्ट और इंजीनियरिंग निवेश को तेजी से शुरू करने में उनकी मदद के लिए उत्साहित हूं। शॉपिफाई और अन्य ई-कॉमर्स प्लेटफार्मों के साथ हमारी वाणिज्य क्षमताओं का विस्तार करने की हमारी महत्वाकांक्षी योजना है और टीम पहले से ही हमारे ग्राहकों के लिए प्रभाव डाल रही है। 2019 में पीयूष पाठक द्वारा स्थापित, कॉमर्सअप की टीम ने बहुभाषी, मल्टी-करेंसी और मल्टी-ब्रांड फंक्शनलिटी की आवश्यकता वाले डायरेक्ट-टू-कंज्यूमर ब्रांडों में विशेषज्ञता वाले इनोवेटिव डिजिटल कॉमर्स सॉल्यूशन बनाए। टीम अब एस्पायर में इसी तरह के प्रोडक्ट का निर्माण करेगी ताकि विज्ञापनों में यूजर-जनरेट कंटेंट के माध्यम से जिम्मेदार सेल, स्केल किए गए प्रोडक्ट सीडिंग और स्केलेबल आरओआई पर फोकस किया जा सके। पाठक ने कहा, यह इनोवेशन और कोलैबोरेशन के लिए स्ट्रैटजिक कदम है, जो क्लाइंट्स को विस्तारित प्रोडक्ट ऑफरिंग्स प्रदान करने के लिए दोनों कंपनियों की विशेषज्ञता का लाभ उठाता है। कॉमर्सअप टीम ने 2019 में प्रोडक्ट विकसित करना शुरू किया और अगस्त 2020 में दुबई में पहले ग्राहक के साथ लाइव हुई। एस्पायर के सह-संस्थापक और सीटीओ सुहास प्रसाद ने कहा, यह कदम भारतीय बाजार में उपलब्ध अपार प्रतिभा और तकनीकी क्षमताओं का दोहन करने की एस्पायर की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। एस्पायर ने क्रिएटर्स को 100 मिलियन डॉलर से ज्यादा का भुगतान किया है और रे-बैन, मौड, गार्नियर, एम एंड एम और अन्य जैसे 900 से ज्यादा टॉप ब्रांड्स ने उस पर भरोसा किया है।

भारत घुड़सवारी इवेंटिंग जंपिंग टीम और व्यक्तिगत वर्ग में आखिरी स्थान पर

हांगझोउ(एजेंसी)। भारतीय घुड़सवारों ने एशियाई खेलों में सोमवार को टीम और व्यक्तिगत जंपिंग फाइनल में निराशाजनक प्रदर्शन किया और आखिरी स्थान पर रहे । कुल 1077 . 20 पेनल्टी अंक के साथ भारतीय टीम पांचवें और आखिरी स्थान पर रही । चीन ने 86 . 80 पेनल्टी अंक के साथ स्वर्ण पदक जीता । जापान (92.70) को रजत और थाईलैंड (93 . 90) को कांस्य पदक मिला । भारतीय टीम में विकास कुमार, अपूर्व दाभाडे और आशीष लिमये थे । आशीष शनिवार को क्रॉसकंट्री में दो जंप चूकने के कारण बाहर हो गए थे । व्यक्तिगत वर्ग में विकास मामूली अंतर से शीर्ष तीन में जगह बनाने से चूके और चौथे स्थान पर रहे । उन पर ड्रेसेज में 32 . 40 और क्रॉसकंट्री में 8 . 80 पेनल्टी अंक लगे। दाभाडे 12वें स्थान पर रहे ।

आईटेल इंडिया ने 15 हज़ार से नीचे वाले सेगमेन्ट में लॉन्च किया भारत का पहला स्मार्टफोन 3 डी कर्व्ड अमोल्ड डिस्प्ले के साथ

नईदिल्ली (एजेंसी)। 10 हज़ार से नीचे वाले सेगमेन्ट में प्रीमियम किफ़ायती स्मार्टफोन्स के साथ धूम मचाने के बाद आईटेल इंडिया ने एस23प्लस के लॉन्च के साथ 15 हज़ार सेगमेन्ट में प्रवेश किया है। 15 हज़ार से कम कीमत पर पहले 3डी कर्व्ड अमोल्ड डिस्प्ले स्मार्टफोन के साथ आईटेल ने जनरेशन ज़ी के स्टाइल क्रशंट से मैच करते हुए एक बार फिर से अपने मानकों को उपर उठा लिया है। रु 12,999 की कीमत पर उपलब्ध एस23प्लस इन-डिस्प्ले फिंगरप्रिन्ट सेंसर के साथ सबसे अलग है, यह इस कीमत की रेंज में स्मार्टफोन का अनूठा फीचर है। आईटेल एस23प्लस की ऑनलाईन सेल 6 अक्टूबर से एमज़ॉन इंडिया पर शुरू होगी। लॉन्च के अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए आईटेल इंडिया के सीईओ श्री अरीजीत तालपात्रा ने कहा, ''15 हज़ार से कम कीमत वाले स्मार्टफोन, मार्केट में 50 फीसदी हिस्सेदारी बनाते हैं। एस23प्लस के साथ हम एक नई यात्रा की शुरूआत करने जा रहे हैं, हम शानदार फीचर्स के साथ इस सेगमेन्ट को नए आयाम देने जा रहे हैं। आज के उपभोक्ता बेहद सजग हैं और अपनी पसंद, ज़रूरत और फैशन को ध्यान में रखते हुए ही स्मार्टफोन खरीदते हैं। आज के दौर में मोबाइल डिवाइसेज़ एक टूल से कहीं बढ़कर हैं; नए भारत में वे एंटरटेनमेन्ट और लाईफस्टाइल का प्रतीक बन चुके हैं।'' उन्होंने अपनी बात को जारी रखते हुए कहा, ''आईटेल में हम ट्रेंडी फीचर्स, स्टाइलिश लुक और आधुनिक टेक्नोलॉजी के साथ उपभोक्ताओं को इनोवेशन्स से लाभान्वित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

आधुनिक फीचर्स से युक्त एस23प्लस स्मार्टफोन जनरेशन ज़ी के स्टाइल से मैच करते हुए 15 हज़ार से कम कीमत वाले सेगमेन्ट में नए बेंचमार्क स्थापित करने के लिए तैयार है। इस लॉन्च के साथ, आईटेल भारत के उपभोक्ताओं को शानदार व्यूइंग के साथ - साथ कई आधुनिक फीचर्स के फायदे देगा।''

3डी कर्व्ड अमोल्ड डिस्प्ले, 240 हर्ट्ज़ की टच सैम्पलिंग रेट देता है, ऐसे में यह हाई-एंड गेमिंग और बेहतर प्रोडक्टिविटी के लिए बेहतरीन हैं। इसमें 256जीबी|16 जीबी (8जीबी रैम और 8 जीबी मैमोरी फ्यूज़न) तक के विकल्प हैं। 7.9 एमएम की स्लिम बॉडी, मात्र 180 ग्राम वज़न और आधुनिक डिज़ाइन के साथ यह सभी वर्गों के उपभोक्ताओं को लुभाएगा।

मीशो ने अपने प्लेटफॉर्म नॉन-जीएसटी इंक्लूसिव बनाया, जिससे लाखों नए विक्रेताओं को ऑनलाइन आने में मदद मिलेगी

रायपुर । भारत के एकमात्र ट्रू ई-कॉमर्स मार्केटप्लेस, मीशो ने घोषणा की है कि अब उसके प्लेटफॉर्म पर नॉन-जीएसटी विक्रेता भी बिक्री कर सकेंगे। मीशो ने 01 अक्टूबर, 2023 से नॉन-जीएसटी विक्रेताओं को अपने प्लेटफ़ॉर्म पर बिक्री शुरू करने में समर्थ बनाने के लिए कई टेक्नोलॉजिकल अनुकूलन किए हैं। मीशो ने यह शुरुआत हाल ही में जीएसटी काउंसिल द्वारा 40 लाख रुपये तक के टर्नओवर वाले नॉन-जीएसटी विक्रेताओं को ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर लाने की अनुमति मिलने के बाद की। उद्योग में देखने में आया है कि जीएसटी अनुपालन की ज़रूरत पूरी ना हो पाने के कारण ई-कॉमर्स पर पंजीकरण की प्रक्रिया में हर साल 1.2 मिलियन विक्रेता बाहर हो जाते हैं। सरकार द्वारा लिए गये इस परिवर्तनकारी निर्णय से विभिन्न सेक्टरों, भौगोलिक स्थानों, और विस्तृत उत्पाद संग्रह वाले उद्यमी और व्यवसाय डिजिटल कॉमर्स के क्षेत्र में आ रही इस क्रांति में शामिल हो पायेंगे। इसके अलावा यह कदम व्यक्तिगत उद्यमियों सहित 100 मिलियन व्यवसायों को ऑनलाइन मार्केटप्लेस में आगे बढ़ने में समर्थ बनाने के मीशो के उद्देश्य के अनुरूप है। नॉन-जीएसटी विक्रेताओं को ई-कॉमर्स में प्रवेश और बिक्री शुरू करने का आसान व सुगम अनुभव प्रदान करने के लिए मीशो ने अनेक टेक्नोलॉजिकल परिवर्तन किए हैं।

इन मुख्य प्रमुख परिवर्तनों में शामिल हैं: पंजीकरण की सरल प्रक्रिया: मीशो ने पंजीकरण की प्रक्रिया को सरल बना दिया है, जिससे विक्रेता अपने जीएसटीआईएन की जगह अपने नामांकन आईडी/यूआईएन द्वारा साइन अप कर सकेंगे।

कैटलॉग की अपलोडिंग बनाई सरल: उत्पाद के कैटलॉग को अपलोड करना अब ज़्यादा आसान हो गया है क्योंकि एचएसएन कोड और जीएसटी प्रतिशत वैकल्पिक हो गये हैं, और अनुपालन की जटिलताएं कम हो गई हैं।

जिओ-रेस्ट्रिक्टेड खोज: सरकारी नियमों का पालन हो, यह सुनिश्चित करने के लिए मीशो ने उत्पाद खोजने की प्रक्रिया को नियंत्रित कर दिया है, जिससे नॉन-जीएसटी विक्रेता केवल अपने राज्य में ही बिक्री कर सकेंगे।

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dvpnews.in
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, बुधवार 04 अक्टूबर 2023

आदर्श आचार संहिता का पालन कराने नपानि में एमसीसी समिति गठित

रायपुर (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम रायपुर के आयुक्त मयंक चतुर्वेदी ने भारत निर्वाचन आयोग द्वारा विधानसभा निर्वाचन 2023 के सन्दर्भ में आदर्श आचार संहिता का पालन चुनाव आचार संहिता की घोषणा के उपरांत तत्काल प्रभाव से लागू करने मॉडल कोड ऑफ कंडक्ट (एम.सी. सी.) समिति का गठन आदेश जारी कर किया है। एम.सी.सी. समिति में अपर आयुक्त विनोद पाण्डेय नोडल अधिकारी बनाये गये हैं, वहीं सभी 10 जोनों के जोन कमिश्नरों एवं कार्यपालन अभियंताओं को संयोजक, नगर निवेशक निशिकांत वर्मा को समिति में सदस्य बनाया गया है।

संक्षिप्त समाचार

एसईसीएल में सीएमडी डॉ. प्रेम सागर मिश्रा द्वारा त्रैमासिक ई-पत्रिका 'अभिमन्यु' का विमोचन

बिलासपुर (विश्व परिवार)। एसईसीएल मुख्यालय में आयोजित महाप्रबंधक समन्वय बैठक में आज सीएमडी डॉ प्रेम सागर मिश्रा द्वारा त्रैमासिक ई-पत्रिका 'अभिमन्यु' को लांच किया गया। इस अवसर पर निदेशक (वित्त) श्री जी. श्रीनिवासन, निदेशक तकनीकी (योजना/परियोजना) श्री एस.एन. कापरी, निदेशक (कार्मिक) श्री देबाशीष आचार्या, मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री जयंत कुमार खमारी, एसईसीएल मुख्यालय से विभिन्न विभागाध्यक्ष एवं एसईसीएल के संचालन क्षेत्रों के महाप्रबंधक उपस्थित रहे। ई-पत्रिका में कोयला उद्योग से जुड़े विभिन्न विषय- उत्पादन, तकनीक, सुरक्षा एवं अन्य विषयों जैसे वित्त, मानव संसाधन, सम-सामयिकी आदि पर एसईसीएल के कर्मियों द्वारा लिखे गए आलेखों को समाहित किया गया है। पत्रिका के विमोचन के अवसर पर 'अभिमन्यु' की संपादकीय टीम भी उपस्थित रही।

केन्द्रीय मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर रायपुर में होने वाले राज्य स्तरीय युवा उत्सव में होंगे शामिल, रावतपुरा सरकार वि.वि. रायपुर में होगा आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण तथा युवा कार्यक्रम व खेल मंत्री श्री अनुराग सिंह ठाकुर नेहरू युवा संगठन, रायपुर के तत्वावधान में 5 एवं 6 अक्टूबर, 2023 को रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय, रायपुर में आयोजित होने वाले राज्यस्तरीय युवा उत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे। छत्तीसगढ़ के 28 जिलों से लगभग 500 युवक एवं युवतियां इस युवा उत्सव में भाग लेंगे। युवा उत्सव के दौरान चित्रकला, कविता, मोबाइल फोटोग्राफी, भाषण एवं सामूहिक नृत्य प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। राज्यस्तरीय प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागियों को राष्ट्रीय युवा उत्सव में शामिल होने का अवसर मिलेगा। यह कार्यक्रम प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के अमृतकाल के पंच प्रण- विकसित भारत, गुलामी की सोच से मुक्ति, विरासत पर गर्व, एकजुटता और नागरिक कर्तव्य पर आधारित होगा।

विकास की गति बनाए रखने ऊर्जा की उपलब्धता जरूरी : उपमुख्यमंत्री टी.एस. सिंहदेव

भनपुरी में 33/11 के.व्ही. उपकेन्द्र के लिए उपमुख्यमंत्री के किया भूमिपूजन

रायपुर (विश्व परिवार)। उपमुख्यमंत्री श्री टी एस सिंहदेव ने कहा है कि विकास की गति बनाए रखने के लिए ऊर्जा की निर्बाध उपलब्धता आवश्यक है। उन्होंने कहा कि राज्य का सौभाग्य है कि हम स्वयं भी रोशन हो रह हैं और दूसरों तक उजाला पहुँचा रहे हैं। श्री सिंहदेव आज राजधानी के भनपुरी क्षेत्र में 33/11 केव्ही उपकेन्द्र के भूमिपूजन समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने क्षेत्र की जनता के प्रति सजग रहने के लिए क्षेत्रीय विधायक श्री सत्यनारायण शर्मा की प्रशंसा करते हुए इस उपकेन्द्र की स्थापना को एक उल्लेखनीय कार्य बताया। इससे पहले उपमुख्यमंत्री श्री सिंहदेव ने उपकेन्द्र निर्माण के लिए भूमिपूजन किया।

उपमुख्यमंत्री टी एस सिंहदेव ने आगे कहा कि ऊर्जा विभाग के भारसाधक मंत्री के तौर पर जो अवसर मिला है उसमें वे ऊर्जा जरूरतों की पूर्ति को प्राथमिकता प्रदान कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि राज्य में जिस भी क्षेत्र में विकास हो रहा है उसमें बिजली की भूमिका प्रमुख है।

कार्यक्रम को विधायक श्री सत्यनारायण शर्मा ने भी संबोधित किया। उन्होंने बताया कि लंबे समय से क्षेत्रवासियों की उपकेन्द्र की मांग थी पर स्थान की अनुपलब्धता के कारण संभव नहीं हो रहा था। पेचिदगियों के समाधान के बाद इस स्थान की उपलब्धता पर प्रसन्नता जाहिर करते हुए श्री शर्मा ने बताया कि इस उपकेन्द्र के बन जाने से क्षेत्र के 15 हजार से अधिक विद्युत उपभोक्ताओं को निर्बाध तथा गुणवत्तापूर्ण बिजली की आपूर्ति हो सकेगी।

इससे पहले छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी के प्रबंध निदेशक श्री मनोज खरे ने अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि जिस कठिन परिस्थिति में इस स्थान को उपकेन्द्र के लिए उपलब्ध कराया गया है इसके बाद अब पॉवर कंपनी की जिम्मेदारी है कि इसे जल्द से जल्द पूरा कर आमजन को लाभ पहुँचाया जाए।

शिलान्यास समारोह में जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक रायपुर के अध्यक्ष श्री पंकज शर्मा, नगर निगम में एमआईसी सदस्य श्री नागेश्वर राव, यति यतनलाल वार्ड की पार्षद श्रीमती टेशु नंदकिशोर साहू, पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी रायपुर क्षेत्र के कार्यपालक निदेशक श्री जे एस नेताम, अतिरिक्त मुख्य अभियंता श्री ए एन दुबे, अधीक्षण अभियंता द्वय श्री आर के बंछोर, श्री मनोज वर्मा, रायपुर उत्तर संभाग के कार्यपालन अभियंता श्री अमित कुमार समेत पॉवर कंपनी के अन्य वरिष्ठ अधिकारी तथा क्षेत्रीय जनप्रतिनिधि, विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी समेत बड़ी संख्या में क्षेत्रवासी मौजूद थे।

भनपुरी उपकेन्द्र, रायपुर शहर संभाग (उत्तर) 33/11 केव्ही उपकेन्द्र का निर्माण मुख्यमंत्री विद्युत अधोसंरचना विकास योजना के अंतर्गत पौने तीन करोड़ रूपए की लागत से किया जा रहा है। 5 एमव्हीए क्षमता के इस उपकेन्द्र के क्रियाशील होने के बाद भनपुरी और आसपास के क्षेत्र के गंगानगर, गोवर्धन नगर, सुभाष नगर, कृष्णा नगर, विजय नगर, बुनियाद नगर, रामेश्वर नगर, धनलक्ष्मी बस्ती, न्यू आनंद नगर, गुजराती कालोनी समेत थाने के आस पास के क्षेत्र के 15 हजार से अधिक उपभोक्ता लाभांवित होंगे।

विधायक बृजमोहन अग्रवाल ने छत्तीसगढ़ कलार समाज के सामुदायिक भवन का किया भूमिपूजन

रायपुर (विश्व परिवार)। छेत्रीय विधायक बृजमोहन अग्रवाल द्वारा मोतीनगर बोरियाखुर्द कलार समाज को सामुदायिक भवन के लिए 5 लाख रुपए की राशि स्वीकृत प्रदान किया गया है। जिसका भूमिपूजन कार्यक्रम सोमवार 02 अक्टूबर को सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री बृजमोहन अग्रवाल जी, पार्षद श्रीमती सावित्री जयमोहन साहू, श्री पूर्व पार्षद सुभाष तिवारी जी, पूर्व अध्यक्ष सनिर्माण कर्मकार कल्याण मंडल अध्यक्ष श्री मोहन एंटी जी छत्तीसगढ़ कलार समाज जिला रायपुर पूर्व अध्यक्ष श्री भूषण लाल सिन्हा, महामंत्री श्री कुँवर विजय सिन्हा, जिला उपाध्यक्ष श्री पन्ना लाल सिन्हा, संगठन मंत्री श्री मेवालाल सिन्हा, जिला युवा अध्यक्ष श्री सत्येन्द्र सिन्हा, जिला सदस्य श्री हेमन्त सिन्हा, मण्डलेश्वर श्री कृपा रमा सिन्हा, सचिव श्री प्रेमप्रकाश गजेन्द्र, कोषाध्यक्ष श्री डोमार सिन्हा, क्षेत्राधिकारी श्री प्रेमनाथ सिन्हा, ग्राम प्रमुख बृजभूषण सिन्हा, एव भवन अध्यक्ष महेश सिन्हा, मौजूद थे।

इस अवसर पर आदरणीय विधायक श्री बृजमोहन अग्रवाल जी ने कहा कि इस भवन के शुरुवात से लेकर अभी तक हर संभव मदद हमारे द्वारा किया गया और आगे भी सहयोग करते रहेंगे। उन्होंने समाज के पदाधिकारी की तारीफ करते हुए कहा कि सभी पदाधिकारी बहुत सक्रिय है। हमेशा समाज और इस भवन को विकास की ओर ले जाने में अच्छा योगदान रहा है। ऐसे ही विचारधारा से समाज आगे बढ़ती है।

जिला उपाध्यक्ष श्री पन्ना लाल सिन्हा ने कहा कि आज के दिन शुभ है, जो भगवान सहस्त्र बाहु अर्जुन माता बहादुर कलारिन के आशिर्वाद से हम सब उपस्थित होकर निर्माण कार्य के लिए भूमि पूजन में शामिल हुए है।उन्होंने दक्षिण मंडल सहित नगर में कराए गए विधायक श्री बृजमोहन अग्रवाल जी द्वारा लाखो के विकास कार्यों की जानकारी देते हुए कहा विकास कार्य विधायक निधि फंड के द्वारा कराए गए है।

कार्यक्रम की शुरुवात में छत्तीसगढ़ कलार समाज दक्षिण मंडल रायपुर के मण्डलेश्वर श्री कृपा राम सिन्हा द्वारा स्वगात भाषण दिया गया।कार्यक्रम को कलार समाज के पूर्व जिला अध्यक्ष श्री भूषण सिन्हा, जिला महामंत्री श्री कुँवर विजय सिन्हा ने भी सम्बोधित किया।

बहुलंबित पट्टा मांग पर विधायक कुलदीप सिंह जुनेजा ने पारस नगर के 50 अधिभोगियो को वितरित किए पट्टे

रायपुर (विश्व परिवार)। देवेंद्र नगर अंतर्गत पारस नगर में 75 सालो से निवासरत नागरिकों को नमस्ते चौक विधायक कार्यलय में 50 अधिभोगियो को क्षेत्र विधायक कुलदीप सिंह जुनेजा ने राजस्व एव निगम अधिकारियो की उपस्थिती में राजीव गांधी आश्रय योजना अंतर्गत स्थाई पट्टा विलेख वितरण किए विधायक कुलदीप सिंह जुनेजा ने कहा की कांग्रेस सरकार लोक कल्याणकारी एवं जनता के भावनाओ का सम्मान करने वाली सरकार है भाजपा सरकार ने 15साल राज की पर जनता के मांगो पर उनके कानों में जूं तक न रेंगी आज भूपेश बघेल के नेतृत्व में आवास हीन को आवास, वर्षो से निवासरत नागरिकों को पट्टे की सौगात मिली और कहा की आज जनता के चेहरे जो खुशी है यह हमारे सरकार की ताकत है और यही हमे अपने कार्यों के प्रति समर्पित रहने की प्रेरणा मिलती है श्री जुनेजा ने समस्त भू अधिभोगियों को बधाई दी जिसमे प्रदेश के लोक कलाकार गायक दुकालू यादव, ईश्वर, लक्ष्मी, भानु, हेमराव, मो.इरफान, त्रिवेणी कौशल, अजय, कौशील्या पाल समेत 50 लोगो को पट्टा वितरण किया इस अवसर पर सुनील भुवाल, संजय सोनी, कमल घृतलहारे, महेंद्र सेन, योगिता साहू सहित राजस्व एवं निगम के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

छत्तीसगढ़ जनसंपर्क अधिकारी संघ के प्रतिनिधियों ने मुख्यमंत्री भूपेश बघेल से मिलकर आभार व्यक्त किया

सेटअप रिविजन सहित विभाग की अन्य मांगों को पूरा करने के लिए दिया धन्यवाद

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ जनसंपर्क अधिकारी संघ के प्रतिनिधिमंडल ने आज शाम मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल से उनके निवास कार्यालय में सौजन्य मुलाकात कर जनसंपर्क विभाग के सेटअप रिविजन सहित विभाग की अन्य माँगों को पूरा करने के लिए उनके प्रति आभार व्यक्त किया।

संघ के अध्यक्ष संयुक्त संचालक श्री बालमुकुंद तंबोली ने मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ राज्य बनने के उपरांत लगभग 22 वर्षों के बाद आपकी पहल से जनसंपर्क विभाग का सेटअप रिविजन हुआ है, जिससे विभाग में 3 अपर संचालक, 3 संयुक्त संचालक, 10 उपसंचालक सहित अन्य पदों में वृद्धि हुई। इससे बहुत लंबे समय से पदोन्नति से वंचित अधिकारियों की पदोन्नति हो पाई है। उन्होंने कहा कि सेटअप रिविजन होने से विभागीय दायित्वों का निर्वहन बेहतर कार्य क्षमता और कार्यकुशलता के साथ हो पाएगा। इसके लिए संघ आपके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता है। उन्होंने कहा कि विभाग की जरूरतों को देखते हुए संचार उपकरणों की मांग की गई थी, जो लगभग पूर्ण होने की स्थिति में है। साथ ही जनसंपर्क विभाग के अधिकारियों को भी राज्यस्तरीय अधिमान्यता प्राप्त हुई। संघ के प्रतिनिधियों ने ओल्ड पेंशन स्कीम लागू होने के लिए भी मुख्यमंत्री के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि पुरानी पेंशन की सुविधा आरंभ कर दिये जाने से जनसंपर्क विभाग के अधिकारियों में भी काफी खुशी है। साथ ही 70-80-90 प्रतिशत स्टाइपेंड की व्यवस्था समाप्त करने के मुख्यमंत्री के निर्णय से विभाग में नवनियुक्त 16 अधिकारी लाभान्वित हुए हैं। संघ के प्रतिनिधियों ने कहा कि डीए और एचआरए में वृद्धि के निर्णय से भी विभाग के सभी अधिकारी कर्मचारी लाभान्वित हुए हैं।

संघ के अध्यक्ष श्री तंबोली ने कहा कि विभाग में तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी के विभिन्न पदों पर भर्ती होने से विभाग और भी सुदृढ़ होने के साथ ही विभागीय अधिकारी अधिक बेहतर एवं प्रभावी तरीके से अपने दायित्वों का निर्वहन कर सकेंगे। मुख्यमंत्री श्री बघेल ने विभागीय भर्ती की प्रक्रिया में तेजी लाते हुए इस दिशा में शीघ्र ही प्रभावी कार्यवाही करने की बात कही।

इस मौके पर संघ के संरक्षक अपर संचालक जेएल दरियो, संजीव तिवारी के साथ संघ के सदस्य संयुक्त संचालक श्रीमती हर्षा पौराणिक, पंकज गुप्ता, पवन गुप्ता, उप संचालक प्रेमलाल पटेल, सौरभ शर्मा, नितिन शर्मा, सहायक संचालक श्रीमती दानेश्वरी संभाकर, सचिन शर्मा, सहायक सूचना अधिकारी भवानी सिंह ठाकुर सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

गांधी जयंती पर संस्कृति विभाग में लगी प्रदर्शनी के ऐतिहासिक दस्तावेजों में हुआ खुलासा

धमधा वालों ने 1933 में महात्मा गांधी जी को दिया था 101 रुपए की पोटली

धमधा आजादी के पहले से है महात्मा गांधी पुस्तकालय और उसका भवन

धमधा (विश्व परिवार)। ऐतिहासिक नगर धमधा के लोगों के नाम आजादी की लड़ाई में भले ही दर्ज नहीं हो सका हो, लेकिन धमधा के लोगों का महात्मा गांधी के प्रति असीम प्रेम था। इसकी एक झलक 1933 में अंग्रेज अधिकारी व्दारा लिखे गए गोपनीय पत्र में देखने के मिलती है, जिसमें लिखा गया है कि महात्मा गांधी जब दुर्ग के दौरे पर आए थे, तब धमधा के लोगों ने उन्हें एक पोटली दी थी, जिसमें 101 रूपए का दान था।

इसकी जानकारी छत्तीसगढ़ शासन के संस्कृति विभाग व्दारा लगाई गई छायाचित्र प्रदर्शनी-राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जीवन यात्रा में मिलती है। गांधी जयंती के अवसर पर 4 अक्टूबर तक रायपुर के महंत घासीदास संग्रहालय की कला विथिका में आयोजित प्रदर्शनी में एक ऐतिहासिक पत्र भी रखा गया है, जिसमें गांधी जी का दुर्ग जिले की यात्रा के बारे में लिखा गया है। यह पत्र 17 नवंबर 1933 को जबलपुर कैंप के एक अंग्रेज अधिकारी ने मुख्य सचिव के गोपनीय पत्र के संदर्भ में लिखा है। इस पत्र में उल्लेख है कि गांधी जी 22 नवंबर 1933को दोपहर 2.30 बजे कोलकाता मेल से दुर्ग पहुंचे। उनके साथ रविशंकर शुक्ल और शिवदास डागा रायपुर से तथा आरके झा व घनश्याम सिंह गुप्ता दुर्ग से थे। उनके स्वागत में 50 स्वयंसेवक उपस्थित थे। गांधी जी ने आर्य समाज कन्या शाला का दौरा किया, जहां अर्जुंदा के महार समाज की महिलाओं ने चरखा कातने का प्रदर्शन किया। वे हरिजन बस्तियों में भी गए, रास्ते में सफाईकर्मियों ने उन्हें माला पहनाई और फल दिया। महात्मा गांधी घनश्याम सिंह गुप्ता के घर से 4.10 बे निकले और मोती तालाब में एक सभा हुई, जिसमें 15 हजार लोग शामिल हुए। इसमें गांधी जी को तीन पोटली दी गई, जिसमें एक धमधा की पोटली थी, जिसमें 101 रूपए थे। दो और पोटली थी, जो बार एसोसिएशन (200 रुपए) और संग्रहित राशि (320 रुपए) थी। पत्र ने यहा भी लिखा है कि गांधी जी कुछ देर कुम्हारी में भी रूके थे।

प्रदर्शनी देखने गए धर्मधाम गौरवगाथा समिति के सदस्यों ने ऐतिहासिक पत्र में धमधा के नाम के उल्लेख होने पर गर्व का अनुभव किया। समिति के संयोजक श्री वीरेंद्र देवांगन, ईश्वरी निर्मल, अशोक देवांगन ने बताया कि धमधा के लोगों ने आजादी की लड़ाई में योगदान दिया था। स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों में धमधा के कृष्णा प्रसाद दानी सहित कुछ लोगों के नाम अंकित हैं। परन्तु बहुत अधिक नाम नहीं मिलते हैं। इसका बड़ा कारण है कि यहां के इतिहास का दस्तावेजीकरण नहीं किया जा सकता है। आजादी के पहले ही यहां प्रभाव युवक संघ संचालित था, जो शैक्षिक, सांस्कृतिक क्षेत्र में जागरूकता अभियान चला रहा था। इस संस्था आजादी के पहले ही पुस्तकालय का संचालन किया जा रहा था, जिसके लिए 1948 में एक भवन निर्माण कराया गया और इसका नाम महात्मा गांधी पुरस्तकालय रखा गया। इसका उद्घाटन सेवाग्राम के पंडित आचार्य राधाकृष्णन ने की थी।

कलेक्टर ने अंतरिक्ष ज्ञान अभियान की मोबाईल वैन को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

रायपुर (विश्व परिवार)। कलेक्टर डॉ. सर्वेश्वर नरेन्द्र भुरे ने आज अंतरिक्ष ज्ञान अभियान के मोबाईल वैन को हरी झंडी दिखा कर रवाना किया। इस वैन के माध्यम से छत्तीसगढ़ के सभी जिलों में स्थित स्कूलों में विद्यार्थियों को विज्ञान की अवधारणाओं और देश में चलाए गए विभिन्न अंतरिक्ष अभियान जैसे चन्द्रयान इत्यादि की जानकारी दी जाएगी साथ जिज्ञासा का भी समाधान किया जाएगा। यह वैन 35 दिनों तक प्रदेश के सभी जिलों में जाएगा। आज जे.आर. दानी उच्चतर माध्यमिक कन्या शाला और जे.एन. पाण्डेय उच्चतर माध्यमिक शाला में इसका प्रदर्शन किया गया। यह अभियान इगनाईटिंग ड्रीम ऑफ यंग माईन्ड के सहयोग से संचालित किया जा रहा है। इस अवसर पर जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी अबिनाश मिश्रा, जिला शिक्षा अधिकारी हिमांशु भारती, अंतरिक्ष ज्ञान अभियान के को-फाउंडर श्री रत्नेश मिश्रा सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

छ.ग. पॉवर कंपनीज अधिकारी कर्मचारी ओपीएस बहाली सयुक्त मोर्चा

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ राज्य पावर कंपनीज के अधिकारी-कर्मचारियों ने पुरानी पेंशन योजना अब तक लागू नहीं होने पर नाराजगी जताई है। संयुक्त मोर्चा ने कहा कि अध्यक्ष के आश्वासन के बाद आंदोलन स्थगित किया गया था, लेकिन एक महीने बीतने के बाद भी प्रबंधन ने पुरानी पेंशन को लेकर कोई निर्णय नहीं लिया है। यदि प्रबंधन जल्द निर्णय नहीं लेता तो अधिकारी-कर्मचारी फिर से आंदोलन को विवश होंगे।

संयुक्त मोर्चा के संयोजक बीबी जायसवाल ने बताया कि मोर्चा के कर्मचारियों / अधिकारियों के संगठनों की चर्चा में यह निर्णय लिया गया है कि कांग्रेस शासित सभी राज्यों के कर्मियों एवं पॉवर कंपनियों में पुरानी पेंशन लागू करने के बाद भी यदि केवल छत्तीसगढ़ राज्य पॉवर कंपनियों के 10 हजार कर्मचारियों / अधिकारियों के साथ हो रहे सौतेले व्यवहार को समाप्त कर तुरंत पुरानी पेंशन योजना बहाल नहीं की जाती है, तो छत्तीसगढ़ राज्य पॉवर कंपनियों के कर्मचारियों / अधिकारियों द्वारा आने वाले विधानसभा चुनाव में मतदान के बहिष्कार करने का निर्णय लेने एवं पूर्व में स्थगित आंदोलन पर पुनर्विचार करने के लिए विवश होना पड़ सकता है।

छ.ग. पॉवर कंपनी में पुरानी पेंशन योजना लागू नहीं होने पर फिर होगा आंदोलन

माननीय मुख्य मंत्री श्री भुपेश बघेल की घोषणा के अनुरूप छत्तीसगढ़ राज्य पॉवर कंपनी में जनवरी 2004 के बाद के अधिकारी / कर्मचारियों हेतु NPS के स्थान पर पुरानी पेंशन योजना (ओपीएस) बहाल न किये जाने पर संयुक्त मोर्चा द्वारा दिनांक 06.09.2023 को अनिश्चितकालीन अवकाश सत्याग्रह के आव्हान के नोटिस पर चर्चा करने हेतु दिनांक 02.09.2023 को पॉवर कंपनी के अध्यक्ष एवं संयुक्त मोर्चा में शामिल विभिन्न युनियनों / संगठनों के पदाधिकारियों के मध्य हुई बैठक में यह तय किया गया था कि पॉवर कंपनियों में ओ. पी. एस. लागू करने के संबंध में कंपनी के संचालक मंडल की मीटिंग में प्रस्ताव पारित कर राज्य शासन को प्रेषित किया जायेगा। साथ ही साथ कर्मचारियों / अधिकारियों द्वारा दिनांक 18.08.2023 को आयोजित एक दिवसीय अवकाश सत्याग्रह के विरूद्ध की गई वेतन कटौती आदेश को भी वापस लेने की सहमति बनी थी।

उक्त बैठक में पॉवर कंपनी के अध्यक्ष महोदय के निर्देशानुसार पुरानी पेंशन योजना लागू करने पर जुलाई, 2022 में किये गये वित्तीय आकलन की पुन: पुनर्गणना कर पॉवर कंपनियों में पुरानी पेंशन लागू करने पर राज्य शासन / पॉवर कंपनियों / विद्युत उपभोक्ताओं पर अगले चालीस वर्षों तक कोई भी अतिरिक्त वित्तीय भार आने की संभावना नहीं होने का निष्कर्ष निकलने के बावजूद भी पॉवर कंपनियों में पुरानी पेंशन की बहाली नहीं की जा रही है।

एक तरफ तो दिनांक 01.10.2023 को दिल्ली के रामलीला मैदान में 20 से अधिक राज्यों के लाखों सरकारी कर्मियों द्वारा पुरानी पेंशन लागू किये जाने के लिए की गई सभा एवं रैली के समर्थन में कांग्रेस पार्टी ने राष्ट्रीय नीति के तहत पूरे देश में पुरानी पेंशन योजना बहाल करने की बात की जा रही हैं, परंतु कांग्रेस शासित छत्तीसगढ़ राज्य में पॉवर कंपनियों के दस हजार से भी अधिक कर्मचारियों / अधिकारियों को पुरानी पेंशन का लाभ देने में कंपनी के वरिष्ठ अधिकारी टालमटोल करके 18 महिने के बाद भी कोई भी निर्णय न ले कर के कांग्रेस पार्टी की पुरानी पेंशन बहाल करने की राष्ट्रीय नीति के विरूद्ध जाकर भ्रामक तथ्यों और जानकारियों के आधार पर पॉवर कंपनियों में पुरानी पेंशन लागू होने नहीं दे रहे हैं।

राजस्व विभाग ने वसूला वार्डों से 36 लाख रुपए

रायपुर। रायपुर नगर निगम के सभी 10 जोनों के राजस्व विभाग द्वारा सभी 70 वार्डों में निरंतर प्रतिदिन राजस्व वसूली का कार्य रायपुर नगर पालिक निगम के हित की दृष्टि से चलाया जा रहा है। आज नगर पालिक निगम के जोन 8 के राजस्व विभाग की टीम द्वारा जोन के सभी वार्डों में कुल 36 लाख रूपये का राजस्व वसूला गया।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा प्लॉट नं.-421 सेक्टर-सी, सड़क नं.-7 उरला इंडस्ट्रीयल एरिया उरला, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN /2013/50354